Third Issue

March - 2011

Tantra kaumudi

सौन्दर्य सार मपरं तन्त्रं विधेयं

तंत्रात्मकं विश्वमिदं चराचरं |

सूर्यः लयं समुदयं प्रकरोति तेनः

तंत्रेण शास्ति अखिलं प्रकृतिः पराद्या ||

जीवन का सौन्दर्य सार तंत्र हैं , यह समस्त चराचर जगत तंत्रमय हैं .
तंत्र शक्ति से ही ये सूर्य प्रतिदिन उदित होता हैं .अस्त होता हैं .
परा शक्ति प्रकृति तंत्र के माध्यम से समस्त विश्व को नियंत्रित करती हैं .

The Beautiessence of life is Tantra .

The whole universe is be of Tantra .

The sun rise and set through the power of Tantra.

Paramba through tantra Power control the whole universe...
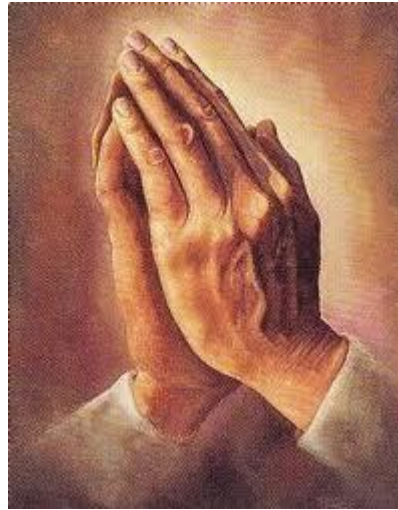
Dedicated

To

The Divine Holy Lotus Feet of
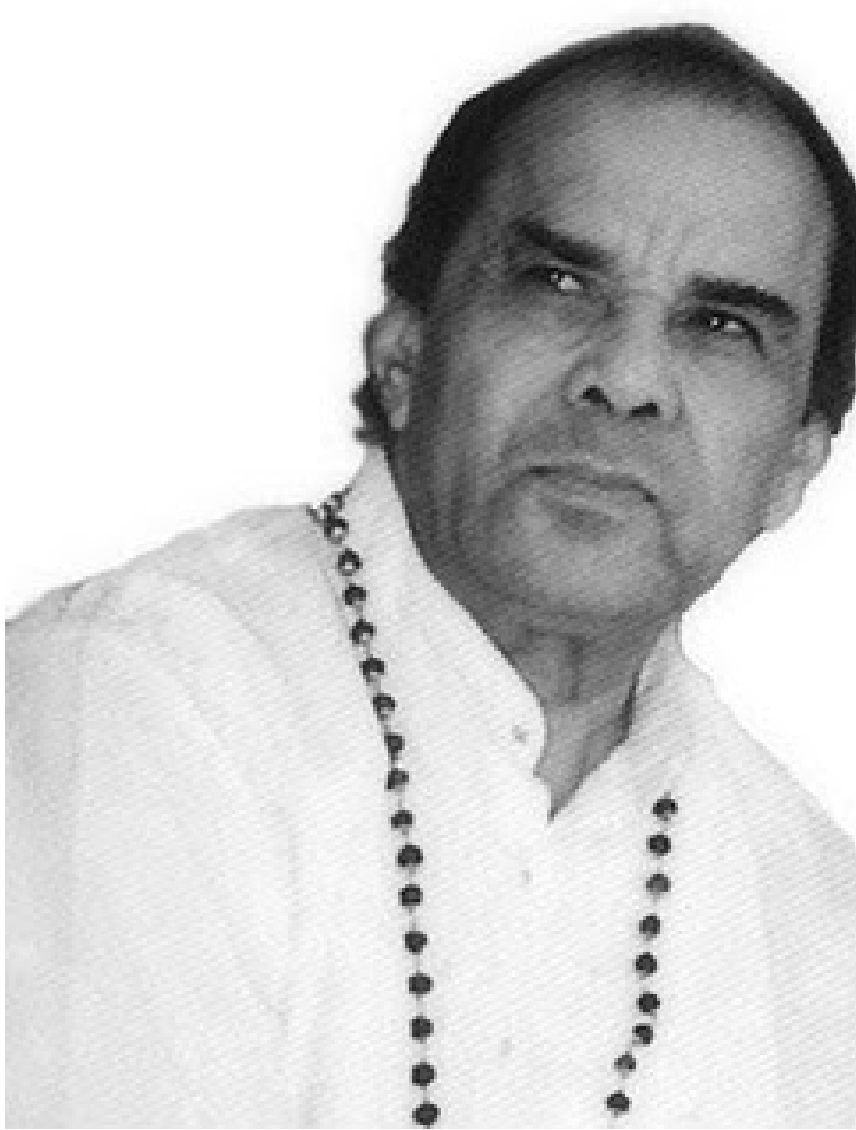
Param Poojya Sadgurudev Dr. Shri Narayan Datt Shrimali JI

(Paramhansa Swami Nikhileshwaranand ji)

PUBLISHER & EDITOR

Tantra kaumudi e-magazine

Arif Khan Nikhil

Can be contacted through e mail

nikhilarif@gmail.com

www.Nikhil-alchemy2.blogspot.com & Nikhil_alchemy yahoo group

TEAM MEMEBERS OF TANTRA KAUMUDI E- MAGAZINE

Editor *Associates editor s And Creative Designer*

nikhilarif@gmail.com raghunath.nikhil@yahoo.in anuwithsmile@rediffmail.com

Table
of
Contents

General Rules :

This free e magazine available only to the follower register in the blog Nikhil-alchemy2.blogspot.com. and also nikhil-alchemy groups memeber . the article appear here, are / will be based on the divine wisdom of **SadGurudev Dr Shri Narayan Dutt Shrimali ji** , and his sanyasi shishyas . we as a your fellow guru brothers, here just providing words to their thought. For the address of these mahayogi's are not known to us, as they all are wondering saints.

The sadhana and mantra's appeared / mentioned in any article can be practiced ,on your own responsibility, if would be much better ,if prior related diksha ,and permission ,direction and guidance opt from sons of poojya paad sadgurudevji .

Poojya Gurudev Shri Nandkishor shrimali ji,
Poojya Gurudev Shri Kailash Chandra shrimali ji,
Poojya Gurudev shri Arvind shrimali ji,
can be contacted at Jodhpur Rajasthan(India).

Please do not ask us for any type of sadhana related materials, and also for Diksha related Queries , for that you have to contact directly poojya guru Trimurti ji at jodhpur.

Since sadhana is a very complex matter, for success and failure of any sadhana mentioned in any article here , many things required , to get success . that's why ,we do not take any responsibility in this connection. we also request, not to do any sadhana ,which is adverse and not permitted as per legal, morel, society belief.

This e magazine will be published monthly. You are receiving this magazine means that you are accepting the terms and conditions . at any time , you can withdraw your registration . this e magazine just a forum to share knowledge between us (Sadgurudev ji's shishyas - All guru brother and sisters),

if still any one raises questions regarding the authenticity of articles published here , for them, treat all articles just as a fiction and a ear say.

......

मेरे भाइयों और बहनों,

जय गुरुदेव,

पत्रिका का ये अंक 'गुह्य एवं अज्ञात तंत्र महाविशेषांक' है, और सबसे पहले आपको मैं ये बता दूँ की गुह्य एवं अज्ञात का अर्थ निश्चित ही बहुत ही जटिलताओं से युक्त है, गुह्य का अर्थ होता है कुछ ऐसा जिसे छुपाया गया हो,जिसकी जानकारी सीमित लोगो को या एक वर्ग विशेष को ही है .और अज्ञात से तात्पर्य कुछ ऐसा जिसकी जानकारी लुप्त कर दी गयी हो. और ऐसा सभी प्रकार के ज्ञान के साथ है. हम हमेशा से ही भाग्य शाली रहे हैं क्योंकि हमें सदगुरुदेव और गुरुत्रिमूर्ती रुपी ब्रम्हांडीय ज्ञान के स्त्रोत से हम जुड़े हुए हैं और ज्ञान की सतत धारा सिद्धाश्रम से हमें उनके द्वारा प्राप्त हो रही है. निश्चय ही 'तंत्र कौमुदी' प्रयास है उसी अज्ञात को हम सभी गुरु भाई,बहनों के समक्ष रखने का. हम जब भी कोई विशेषांक निकालते हैं तो उसकी योजना बहुत लंबे समय से बना ली गयी होती है, बस उसे क्रियात्मक रूप से सभी के समक्ष रखने में काफी सावधानी और ध्यान रखा जाता है. हमने अभी तक जो भी अंक निकाले हैं वे सभी अंक हमेशा वर्तमान के अंक को पिछले अंक से ज्यादा बेहतर बनाने की कोशिश में ही साकार रूप का परिणाम है .और ये क्रम आगे भी जब तक सदगुरुदेव की इच्छा होगी,तब तक चलता ही रहेगा. इस अंक में जिस भी ज्ञान का समावेश हुआ है उनके बारे में हम ये नहीं कहेंगे की ये नवीन है, हम तो बस यही कहेंगे की ये तो पुरातन काल से साधक समाज में प्रचलित रहे हैं बस उन्हें आम साधको या व्यक्तियों से सुरक्षित रखा गया था. परन्तु जब हम इस ज्ञान को इन पन्नों पर देने की योजना बना रहे थे तो मन में सदगुरुदेव की बस एक बात ही थी की'तंत्र न तो सही करता है और न ही गलत, वो तो एक भाव है जो सही और गलत को समझने का विवेक देता है' और ये बात हम भी जानते हैं की यदि साधक में उसकी प्रज्ञा जाग्रत रहती है तो वो कैसी भी क्रिया में पूर्ण सफलता पा ही लेता है. जिन साधनाओं, विचारों का इस बार समावेश किया गया है वो आकर्षक भी हैं और रोमांचकारी भी और शायद वो आपको तंत्र को एक नवीन दृष्टि से देखने के लिए प्रेरित भी करे. हमने सरल प्रयोगों का चयन किया है और सावधानी रखी है की ऐसा कुछ न दे दे जो समाज या व्यक्ति विशेष के लिए हानिकारक हो. हमने यहाँ सिर्फ विचार रखे हैं , उनमे बल प्रदान करने का कार्य सिर्फ परम पूज्य सद्गुरुदेव और हमारी गुरु त्रिमूर्ति को ही है. उनकी कृपा से क्षणार्ध में ही इससे बेहतर कई नवीन रहस्य हमारी आँखों के सामने दृष्टिगोचर हो जाते हैं.

मेरे प्रिय अनुराग भाई और रघुनाथ भाई के बगैर पत्रिका की कल्पना भी मैं नहीं कर सकता था. इन्ही के सहयोग ने मुझे हिम्मत दी है इतने महत्वपूर्ण कार्यों को करने की. यदि इस पत्रिका का एक शब्द भी आप लोगो के काम आ सका तो हम सभी अपने आप प्रयास को सार्थक ही मानेंगे.तो आप इस अंक का पूर्ण मनोयोग से अध्ययन करे और अपने विचारों से हमें अवगत कराएँ. हम फिर उपस्थित होंगे अगली बार कुछ और ज्यादा रोमांचक लेकर.

.

आपका ही

आरिफ

SADGURUDEV - PRASANG

****

सप्त जीवन सर्व देवत्व सर्व साधना सिद्धि दीक्षा

Is this true????Only this I kept thinking that night….But Why, I was thinking only this one point again & again?????Even, I was restless, cannot make for the sleep…..But, not able to make Why????

Now, it's enough, I will definitely ask Sadgurudev tomorrow anyhow…

Actually what happened there was Navratri Encampment and on the first day in first session approximate at 12:00 pm in the mid of the session Gurudev suddenly told that the

क्या ये सच है ??? बस यही सोचता रहा उस रात ….. आखिर क्यूँ उसी बात को मैं बार बार सोच रहा था .

अब नींद भी नहीं आ रही थी मुझे , पर क्यों??

बस अब नहीं समझ में आ रहा है , अब तो कल मैं सदगुरुदेव से पूछ कर ही रहूँगा. दर असल में हुआ ये था की नवरात्री का शिविर चल रहा था और उस दिन प्रथम सत्र में लगभग १२ बजे गुरुदेव ने अचानक अपने प्रवचन के मध्य बताया की " तुम लोगो से मेरे सम्बन्ध आज के नहीं हैं बल्कि मैं पिछले २५ जन्मों से तुम्हारा गुरु हूँ" और बस तभी से ये बात मेरे दिमाग के दरवाजे खटखटाने लगी और उसके बाद तो बस बैचेनी सी मेरे मन में समा गयी थी. और अब प्रतीक्षा थी तो बस

relations between You and Mine is not from today, but we are bonded as a Shishya and a Guru from last 25 birth-cycles……& that was the point which got stucked in my mind and I became so curious….only, I was waiting for the moment I will meet Sadgurudev….

At last, on Ashtami day, I was able to meet Sadgurudev & that too he called me up & patted on my head saying –(All the conversation was between me & Gurudev)

Gurudev - now what new is running in my head & can you give rest to your heart & mind???

Me - Gurudev, you only told that a devotee should have the ability to be curious – I answered by lowering my eyes down….

Gurudev -Yes, My son this is very much true, but the more important thing is no matter the Guru is wholesole,still express the emotions either in written or oral in his feets…

Me – But, what if meeting is not possible???

Gurudev - Don't you have any of the Guru Picture with you? Do express in front of his picture…

Me – But, what if Guru Picture is also not with you???

Gurudev – My Son, Guru and Shishya are not separate, they are two bodies but one soul….You only tell, how departed from the soul, one can be able to act as a Shishya…..When the devotees

सदगुरुदेव से मुलाकात की.......

आखिरकार अष्टमी को उनसे मुलाकात संभव हो पाई और वो भी खुद उन्होंने ने ही बुलाया और सर पर चपत मारकर कहा – अब तेरे दिमाग में ये क्या नया घूमने लगा , तू कभी अपने दिल दिमाग को आराम भी देगा.

जी आप ने ही तो कहा है की शिष्य बनने के पहले साधक को जिज्ञासु होना चाहिए- मैंने आँखे झुका कर उत्तर दिया.

हाँ बेटा ये सही बात है और उससे भी ज्यादा जरुरी ये है की,चाहे गुरु सर्व समर्थ हो तब भी अपने मन के भाव उनके चरणों में लिख कर या बोलकर व्यक्त करना ही चाहिए .

पर यदि उनसे मुलाकात संभव नहीं हो तब ????

क्या तेरे पास गुरुचित्र भी नहीं है, उसके सामने व्यक्त कर .

और यदि कभी गुरुचित्र भी पास में न हो तब??

बेटा गुरु और शिष्य प्रथक नहीं होते हैं. बल्कि वो दो देह औए एक प्राण ही होते हैं, भला आत्मिक रूप से अलग अलग रहकर कोई कैसे शिष्य बन सकता है. जब गुरु के प्राणों से साधक के प्राण मिल जाते हैं या एकाकार हो जाते हैं तभी तो वो साधक सच्चे अर्थों में शिष्य बन पाता है. गुरु के प्राणों में उसके प्राण एक तीव्र आकर्षण से जुड जाते हैं , और ये जुड़ाव इतना तीव्र होता है की इसे विभक्त किया ही नहीं जा सकता .

और खुद ही सोच जब आत्मिक रूप से दो प्राण एकाकार हो जाते हैं तब चाहे शिष्य कितने बार भी जन्म ले ले , कही भी जन्म ले ले, गुरु अपने उस अंश को ढूँढ कर अपने पास बुला लेता है , ठीक वैसे ही जैसे मैंने तुम सभी को खोज कर बुलाया है. पर ये इतना सहज नहीं होता है , क्योंकि तब वो शिष्य अपने संबंधों की तीव्रता को महसूस नहीं कर पाता है और न ही उसे अपने जीवन का मूल चिंतन ही याद रहता है , उसे तो बस अपने आस पास के स्वार्थलोलुप रिश्तों की ही याद रहती है और प्रेम की सत्यता को तो वो समझ ही नहीं पाता. बस जिन्हें वो शुरू से देखता आया,वो रिश्ते ही उसकी दृष्टि में सत्य होते हैं. पर जब शिष्य गुरु के प्राणों के तीव्र आकर्षण से उनके श्री चरणों में पहुच जाता है तो गुरु उसे पूर्णत्व प्रदान कर ही

get attached with the soul of the Guru, then only a devotee is able to become a true Shishya...The soul of the Shishya gets attached with the Guru soul with great attraction & this attraction is so much bonded that it cannot be departed....

& now you only think when the two different life becomes one through the soul, then no matter the Shishya takes infinite birth he will be identified by his Guru from anywhere and will be called near to him just as I have called all of you.....But, this is not so easy, because at this time the Shishya cannot realize the intensity of the relations and neither he is able to recollect the main base of his life...He is just carried away with the relations which are near to him and is unaware of the fat of true love because he believes only those relations which he had seen since his childhood and grown up with them....But, as soon as he devotes himself into the guidance of the Guru, the Guru provides him the completeness of the life....

Me – Can I experience my previous birth???

Gurudev - Yes, why not???Any devotee can see this if he performs – **Madalsa Sadhna**, this act will become easy....Simliarly, by performing **Tratak Kriya on Pardeshwar** will also help in experiencing of his previous birth....

Me – But, I want to experience all my previous birth in which I was devoted to you and my life got blessed under your shelter.....Is this possible???

देते हैं.

क्या मैं अपना पिछला जीवन देख सकता हूँ ?

हाँ क्यूँ नहीं देख सकता. पिछला जीवन तो कोई भी साधक देख सकता है , यदि वो मदालसा साधना संपन्न कर ले तो ये क्रिया सहज हो जाती है . इसी प्रकार **पारदेश्वर** के ऊपर त्राटक की क्रिया कर साधक अपने विगत जीवन को देख सकता है.

पर मुझे वो सभी पूर्व जन्म देखने हैं जिनमे मैं आपके श्री चरणों में था और आपके दिव्य साहचर्य से मेरे जीवन सुवासित और पवित्र हुए थे .

क्या ये संभव है??

हाँ मेरे बेटे यदि उपरोक्त साधनाओ को साधक लगातार करता रहता है तो निश्चय ही वो और ज्यादा जन्मों को देख सकता है. **पारद शिवलिंग पर त्राटक** की क्रिया तो होनी ही चाहिए .

क्या मैं पिछले जीवन में की गयी साधनाओ को इस जीवन से जोड़ सकता हूँ??

निश्चय ही जोड़ सकते हो. पर एक बात याद रखो की पिछले जीवन को देखना और उसमे की गयी साधनाओ का इस जीवन से योग करना ये दो अलग अलग बाते हैं. क्यूंकि उन साधनाओं को इस जीवन से जोड़ने में जिस ऊर्जा और शक्ति की आवश्यकता होती है वो सामान्य रूप से एक नए साधक में नहीं होती है.

तब ये कैसे हो सकता है?

यदि गुरु अपने तपः बल से साधक को एक विशेष दीक्षा दे तो निश्चय ही ऐसा संभव हो जाता है , क्यूंकि चाहे साधक ने कितने ही जीवन में साधनाएं की हो पर अत्यधिक कठिन होता है पिछले सात जीवनों की शक्तियों को एकत्रित करना सम्पूर्ण चक्रों के जागरण के बगैर उनकी चैतन्यता को प्राप्त किये बगैर ये संभव ही नहीं है , परन्तु जब सद्गुरु उसे ऐसी विशेष दीक्षा दे दे और स्वयं के प्राणों का घर्षण कर शिष्य को वो मन्त्र प्रदान कर दे तो साधक उस मन्त्र का पारद शिवलिंग पर त्राटक करते हुए जितना ज्यादा जप करता जायेगा उसे वो सब सामर्थ्यता धीरे धीरे प्राप्त होते जाती है फिर चाहे उस शिष्य ने अपने पिछले जीवनों में

Gurudev - Yes, my Son, if you will practice the above Sadhna regularly, you will able to feel the experience of more & more previous birth life.... & yes **Tratak Kriya on Pardeshwar** is must...

Me – Can I get connected with the previous devotions also in this life???

Gurudev -Yes, you can definitely do it but do remember to experience previous birth and to connect the devotions with this life are totally different from each other because to connect those devotions from that life to this life requires too much energy and power and a new devotee does not contains that much of amount....

Me – Then, how is this possible???

Gurudev - If the Guru by recollecting all his devotional power and energy gives a special convocation (Deeksha) to the Shishya, it becomes possible...because no matter a devotee has worked so hard for the devotions but to recollect the last 7 births energy and to activate the whole chakras & auras without the activations of these energy is very much difficult....But, when the Guru gives such a special convocation and keep his all his life on sake for the Shishya and gives that mantra & when the Shishya performs that Mantra on Parad Shivling by the Tratak Kriya he is able to become capable enough to recollect & experience all those energy & powers which he conducted or performed in his

किसी भी प्रकार की , कितनी भी साधनाएं की हो चाहे वो किसी भी शक्ति की हो , वे सभी साधनाएं और उनका पूर्ण प्रभाव साधक को इसी जीवन में प्राप्त हो ही जाता है और साधक उन सभी प्रक्रियाओं में पूर्ण रूपें पारंगत हो जाता है. और सात जीवनों की यात्रा के बाद तो साधक की यात्रा इतनी सहज हो जाती है की उस मन्त्र के अभ्यास से से वो और पीछे जाते जाता है और उन शक्तियों को क्रमशः प्राप्त करते जाता है. और सद्गुरु हमेशा यही चाहते हैं की उनका शिष्य अपने अस्तित्व को पूर्ण रूपें समझे और अपने लक्ष्य को प्राप्त करे. इससे ज्यादा गुरु को और क्या चाहिए .

क्या मुझे वो दीक्षा प्राप्त होने का सौभाग्य मिल पायेगा? इसे प्राप्त करने की पात्रता क्या है?

इसके पहले तीन ऐसी दीक्षाएं हैं , जिन्हें प्राप्त कर साधक उससे सम्बंधित साधनाओं को पूर्णता के साथ संपन्न करे तो निश्चय ही साधक को सद्गुरु उसके आग्रह पर ये अद्वित्यीय दीक्षा प्रदान करते ही हैं और साथ ही साथ इससे जुड़े रहस्यों को उजागर भी कर देते हैं.

सदगुरुदेव के आशीर्वाद से मैंने उन तीनों दीक्षाओं को प्राप्त कर उनसे सम्बंधित साधनाएं भी संपन्न की और तब मैंने गुरुदेव से उस अद्भुत दीक्षा और उससे सम्बंधित रहस्यों का ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रार्थना की. तब उन्होंने अत्यंत करुणा भाव से मुझे वो पूर्ण क्षमता युक्त अद्भुत दीक्षा प्रदान की जिसे सिद्धाश्रम के योगियों के मध्य **"सप्त जीवन सर्व देवत्व सर्व साधना सिद्धि दीक्षा"** के नाम से जाना जाता है.

बाद में मैंने उनके निर्देशानुसार साधनाओं को क्रियाओं को संपन्न कर उन रहस्यों को समझ पाया जो मेरे पिछले जीवन से जुड़े हैं.और आज मैं जो कुछ भी समझ पा रहा हूँ उसके मूल में यही रहस्य है. जीवन का सौभाग्य होता है साधनाओं को संपन्न कर अपने पिछले जीवन को अपनी इन्ही आँखों से देख पाना, क्यूंकि तभी तो हमें अपने इस जीवन के दुर्भाग्य का कारण ज्ञात हो पाता है.

मैं आप सभी लोगो से भी यही प्रार्थना करता हूँ की इन पंक्तियों को पढों नहीं बल्कि इसमें छुपे अर्थ को समझ कर उसे अपना लीजिए. आज हमारे मध्य एक नहीं बल्कि गुरु त्रिमूर्ति के रूप में तीन तीन सामर्थ्यवान गुरु मौजूद हैं, जिनके श्री चरणों में आग्रह कर हम भी अपना जीवन इस दिव्या क्रिया से युक्त कर सकते हैं. क्या अब भी हम गिडगिडाकर ही जीवन जीते रहेंगे. अब मर्जी है आपकी

previous births & becomes expert in all these processes….& after the 7 births this journey becomes so easy that the devotee can go back to as many life and acquire as much energy and power he can & Sadgurudev always wants this only that his Shishya understand the motto of his existence and achieve his target and aim…..

Me – Will I be blessed with this convocation & how can I make myself eligible for the same???

Gurudev -Before this convocation, the devotee needs to acquire 3 other convocations by which he can perform any act in a complete manner and when he accomplished this thing, the Sadgurudev not only provides the most special convocations on request of the devotee but also explore the many hidden secrets related to all these acts…

With the blessings of the Sadgurudev performed all the 3 convocations and accomplished all the other devotions also & then I requested Sadgurudev to provide me the special secrets of that devotions and then the Sadgurudev with all his love and blessings told the most special convocation which is known as – **"Sapt Jeevan Sarv Devatv Sarv Sadhna Siddhi Deeksha"** in the camp of the devotes of the Siddhashram…

Later on, in guidance of the Sadgurudev I performed all those devotions and was able to understand all those hidden secrets which were connected with my

क्यूंकि जीवन है आपका.

previous births and today also, if I am able to understand all the other aspects are just because of the fact which lies in base of all these acts.....

This is only the blessings and a good fortune to see, know and learn about the past and previous birth life as because only after this we are able to understand about all the misshapennings of this present life...

I can only urge you all just not to read all these lines but to understand and adapt also.....as today in front of us not only one Sad guru is present but in the image of him all the three expert Gurus are present and we can devote our lives in Sadgurudev holy feets.....Still, you want to live on others mercy???? Well, the decision is yours as the life belongs to you....

Mayuresh Strot Sadhana

मयुरेश स्त्रोत साधना

किसी भी प्रकार की मानसिक या शारीरिक समस्या को दूर करने के लिए

Bhagvaan Ganesh is the first devta who have lordship over gan means senses(working or sensory one.) he the pratham Poojya in any work from house holders to sadhana field though his form may be different one but everyone is agree that he is most lovable form of god . in day to day life every person is suffering with so many problem some of may be told and others may be of not to be told. So due to this his mental tension is increases ,

भगवान गणेश ही प्रथम ऐसे देवता हैं जो गणाधिपति भी हैं यहाँ गण से तात्पर्य हैं गण अर्थात इन्द्रिया फिर वह चाहे किसी भी प्रकार की क्यों न हो . यही हैं हर कार्य में प्रथम पूज्य ,फिर चाहे वह किसी भी गृहस्थ का कार्य क्यों न हो हो या फिर साधना क्षेत्र से सम्बंधित ही क्यों न हो , हाँ यहाँ परकार्य विशेष के अनुसार उनका स्वरुप जरुर बदल सकता हैं पर वे सच में मंगल कारी ही हैं .. पर इस तथ्य पर तो सभी एक मत होने की भगवान का यह रूप बहुत ही मनोहारी हैं .

दिन प्रति दिन के कार्य में हर व्यक्ति अनेकों प्रकारकी समस्याओं से ग्रस्त रहता हैं ये समस्याए किसी भी प्रकार की हो सकती हैं बताई जा सकने योग्य से लेकर न बताई जा सकने योग्य भी. तो क्या कोई एक ऐसा भी रास्ता होगा जिसके माध्यम से हम कम से कम समय में तीव्र परिणाम

so is there any way that too a simpler one but effective one to provide remedy.	की प्राप्ति कर सके .
Here is the one sadhana for removing mental worry of any kind. Process is the very simple you have only single time chant the strotam for just 11 days . his mental tension sure be removed due to his grace. This strotam can be utilized for removing any illness too. Process is like that	यहाँ पर एक ऐसा ही सरल साधना आपके समक्ष हैं जो आपके किसी भी प्रकार के मानसिक तनाव को दूर करने में समर्थ हैं , प्रक्रिया अत्यधिक सरल हैं कमसे कम आपको ११ दिन तक प्रातः काल १ पाठ तो इस स्त्रोत के करना ही हैं .यह स्त्रोत किसी भी प्रकार की शारीरिक अस्वस्थता में भी उतना ही प्रभावकारी हैं .
In the morning take bath and wear silky cloth (if have).and chant the strotam just for one time in front of Bhagvaan Ganesh statue, do the process daily till the desired work will complete.(off course if problem is serious one than you can ask guidance from guru dham in this regard but it is sure that you will definitely get the result if having faith towards Sadgurudev ji and isht and also Bhagvaan Ganesh.	प्रातः काल स्नान कर के रेशमी वस्त्र धारण कर किसी भी गणेश चित्र या मूर्ति के सामने अपने आसन पर बैठकर इस स्त्रोत का १ पाठ तो अवश्य की करे ओर ये प्रकिर्या तब तक लगातार करे जब तक की आपको अपेक्षित लाभ प्राप्त न हो गया हो .(यदि समस्या गंभीर हो तो आप गुरुधाम से संपर्क कर के दिशा निर्देश प्राप्त कर सकते हैं पर यह निश्चित हैं की सदगुरुदेव जी पर और अपनी साधना पर यदि पूर्ण विस्वास हैं तो परिणाम जरुर मिलेगा .

मयुरेश स्त्रोत

मयूरेशस्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच पुराणपुरुषं देवं नानाक्रीडाकरं मुदा। मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्। गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया। सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि बिभ्रतम्। नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम्॥

इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम्। सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभुम्। सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्। भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्। समष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम्॥

सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्। सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्। अनन्तविभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रनाशनम्। सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्॥

कारागृहगतानां च मोचनं दिनसप्तकात्। आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम्॥

Mayuresh strotam

Bramhouvach puraanpurusham devam nanaktidakarm muda ,

Mayavinm durvibhavyam mayuresham namamyham||

Paratparam chidanandam nirvikaram hradi sthitam,

Gunatitam gunmayam mayuresham namamyham||

Srijantampaalyantam ch sanharntam nijechchhyaa,

Sarvvighanharam devam mayuresham namamyham||

Nanadaityanihantaaram nanarupani vibhratam,

Nanaayudhdharam bhaktya mayuresham namamyham||

Indradidevtavranndairabhishtutamahanirsham,

Sadsadwyakttmvyakattam mayuresham namamyham||

Sarvshaktimayam devam sarvrupdhram vibhuam,

sarvvidyapravktaaram mayuresham namamyham||

parvatinandanam shambhoranandparivardhnam ,

bhaktanandkaram nityam mayuresham namamyham||

munidhyeyammuninutam munikaamprapurkam ,

samashtivyashtirupam tavaam mayuresham namamyham||

sarvagyannihantaaram sarvgyankaram shuchim,

satygyanmayam satyam mayuresham namamyham||

anekkotibramhaandnaayakam jagdishwaram,

anantvibhvam vishnum mayuresham namamyham||

mayuresh uvaach

idam bramhkaram strotam sarvpapprashnam,

sarvkaampradam nranaam sarvopdravnaashnam||

karagrahgatanaam ch mochnam din saptkat,

aadhivyadhiharam chaiv bhuktimuktipradam shubham||

Isht Darshan Prayog

ईष्ट दर्शन प्रयोग
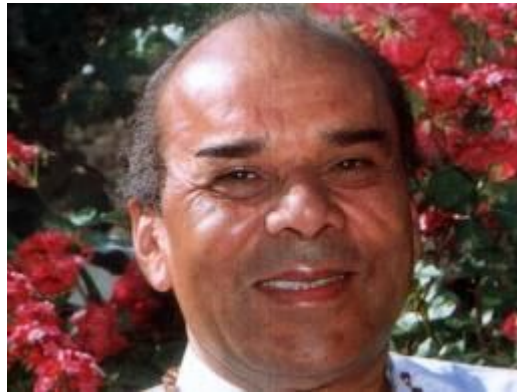
गुरु यन्त्र के माध्यम से ईष्ट के दर्शन की अत्यंत सरल परम दुर्लभ साधना

For a person his first desire to have /get achievement in material wealth/world ,since without having success in material life its very hard to have success spiritually into days life . and also there is big difference between want and desire, after a point person hide himself in the shadow of one desire or that desire but still his quest for to know himself is unsuccessful. Since to know self the yatra have to be done inwardly , outer search with outer mediun, that can not give u the success. Than only on this point a person comes in front of you. yes the case may be the different that maybe recognise him or not ,	मानव जीवन की प्रारंभिक उपलब्धयां तो भौतिक रूप से सफल होने की होती हैंक्योंकि उसके आभाव में आध्यात्मिक उपलब्धियां प्राप्त हो पाए कम से कम आज के परिवेश में कठिन सा होता जा रहा हैं , साथ ही साथ वास्तविक आवश्यकता और चाह में अन्तर होता ही हैं, एक समय के बाद व्यक्ति अपने स्वरुप से बचने के लिए कभी ये ख़ुशी तोकभी वह खुशीकी तलाश में निकलता हैं पर सारी कोशिशें एक प्रकार से व्यर्थ सी हो ती हैं की अपने को पहचानने की ,क्योंकि यात्रा तो अंतर गत हैं भला बाहय कर्म काण्ड या व्यवस्थाओं से अंतर गत उपलब्धियां कैसे हस्त गत होगी , ओर जीवन के ठीक इसी मोड़ पर एक व्यक्तिव सामने आता ही हैं , हाँ ये वात अलग हैं की हम उसे पहचान पाए या नहीं , और वह होते हैं व्यक्ति के गुरु जिन्हें सदगुरुदेव की संज्ञा से बोधित किया जाता हैं , हम तो यही मानते आये हैं की हम ही गुरु को ढूढ़ते हैं पर सच में कहा हैं. भला यदि विराट अपना ही अंश हमारे अन्दर पहले से न डाल दे तो क्षुद्र भला कैसे

the pserson is known as a guru orwe known him asa sadgurudev ji.we til date assume thatwe serched the guru , butthis is notthe truth,greater /almighty already serched us than we can starts the way, he alreadyplces his love inside us only than we can search/love him.(if a river has not have water already came outfrom sea asa evoporationhow can she reach toits destination. if he already notplces his prana inside us than how itis possible to have sadgurudev ji like that.

when we reach tosadgurudev than he decide which one canbe our iasht so that the remaimimg travellinh may be little easily. til that ishat is just a imagination. and how it is possible to have imegination's dhyan possible.first place to have ishtdarshan onlythan dhyan canbe done,sadgurudev jionmanyplaces writtenn about this.but we never intersted tolearn that science , than how we can have isht darshan is abig question .withouit isht in general sense how long a yatra runns.

विराट कोकैसे पहचान सकता हैं,(यदि नदी में समुद्र का जल न हो तो नदी कैसे समुद्र तक की यात्रा कर सकती) हमारी ये महानता नहीं हैं की हमने उन्हें पहचाना या समझा बल्कि यदि उन्होंने ही पहले से हमारा हाथ न पकड़ा होता हैं हमें पहले से न चाहा होता तो हममें अपने प्राण न डाले होते तो हम कैसे उनके तक पहुचते हैं.तो उन्होंने ही हमें चुना हैं हमने नहीं ...जरा सोचिये

अब उनतक पहुच गए पर यात्रा के लिए सदगुरुदेव जी आपके लिए एक इष्ट निर्धारण करते हैं जिसके माध्यम से आप इस यात्रा को थोडा सा सुगम तरीके से गतिमान कर सकते हैं . पर ये तो अभी इष्ट केबल कल्पना हैं ओर कल्पना का ध्यान कैसे किया जा सकता हैं, आप कहेंगे किपहले साधना करे फिर इष्ट दर्शन पर सच तो ये हैं की पहले इष्ट दर्शन फिर उनका ध्यान तभी वह वास्तिविक हो सकता हैं ,सदगुरुदेव भगवान ने अपनी कृतियों में कई जगह इसका उल्लेख किया हैं , पर जब हमने ही उस विज्ञानं को उपेक्षितकर दिया तब आज हमें अपने इष्ट के दर्शन कैसे हो .कल्पना के इष्ट से कितनी देर यात्रा चल सकती हैं .

मनुष्य जीवन का उद्देश्य अपने इष्ट को अपने अंदर स्थापित कर लेना या खुद के अस्तित्व को इष्ट में विसर्जित करदेना हैं . लेकिन इष्ट आखिर किस को कहा जाए, सदगुरुदेव ने बताया हैं की इष्ट का मतलब हे वो शक्ति जो ब्रम्हांड को गतिशील रखता हैं , जिसे ब्रम्ह कहा गया हैं , और वह कोई भी हो सकता हैं क्यूंकि ब्रम्ह सर्वत्र व्याप्त हैं सर्व में स्थापित हैं . अगर देवी देवताओ की बात करे तो सर्व देवी एवं देवता का ब्रम्हांड की गति में एक निश्चित सुनियोजित योगदान हैं , मनुष्य जिस देवी या देवता की उपासना में साधना में रत हो, वही उसका इष्ट हैं क्यूंकि वह ब्रम्ह के रूप

को समझने में उसका माध्यम हैं .

The of purpose of the human life to establish Isht (favored) into self or to immerse one self in Isht. But whom can we call Isht, Sadgurudev have said that Isht means the power which maintains the continuity of the universe, which is called Bramha, and that could be anyone because Bramh is everywhere and it is established in everything. If we speak in term of god and goddess, every one of them contributes words specific well organized continuity of the universe, who so ever prayed with medium of sadhana and upasana that is Isht because it is the medium to understand Bramh.

पुरे जीवन काल में मनुष्य का यह स्वप्न होता हैं की वह अपने इष्ट का दर्शन करे और आशीर्वाद प्राप्त करे लेकिन यह इतना सहज संभव नहीं हे क्यूँकी हम सामान्य मनुष्यों के सामने ब्रम्हांड नियंत्रित करने वाली शक्तियां भला सहज में क्यों प्रकट होंगी. इसी लिए कई मनुष्य अपना पूरा जीवन इस कार्य में लगा देते हैं फिर भी कुछ एक विरले लोगो को ही यह सौभाग्य प्राप्त होता हैं की वह अपने चरम चक्षुओ अपने इष्ट को देख सके और अपने जीवन को धन्य कर सके.

In the whole life, the dream of the human remains that he get sight of the Isht and have blessings but it is not so simple because why the controlling powers of the universe will appear in front of we common human beings so easily, therefore many people lay down their complete life to accomplish this task but then too few fortunate only have that boon to have a sight of their Isht with their eyes and can have a blessed life.

साधना जगत में कई साधक की चाह होती हैं की वह कोई एसी साधना प्राप्त करले जिससे अपने इष्ट को अपने सामने प्रत्यक्ष कर ले मगर इस प्रकार की साधना मिलना असंभव नहीं तो अति दुष्कर तो हैं ही. सदगुरुदेव ने इष्ट दर्शन सबंधित साधनाए शिष्यों के मध्य रखी हैं और कई साधको ने आगे बढ़के उन साधना पद्धतियों को अपनाया हैं और अपने इष्ट को प्रत्यक्ष अनुभव किया हैं , साधको ने स्वीकार किया हैं की यह साधनाए अपने आप में निश्चित फलदायक हैं लेकिन श्रम साध्य भी. सामान्य व्यक्तियो के लिए एसी साधनाए करना अति कठिन हैं , समस्त नियमों का पालन करते हुए, लाखो की संख्या में मंत्र जप आज के युग में करना थोडा मुश्किल हैं .

In the world of the sadhana, many sadhak wish to have a sadhana through which they can let their Isht appear in

जब मेने इस बारे में अपनी जिज्ञासा सदगुरुदेव श्री निखिलेश्वरानन्दजी के समक्ष रखी तो उन्होंने कहा की इष्ट दर्शन करना दुष्कर हैं क्यूँकी इसके बाद की स्थिति यह होती हैं की इष्ट से हर समय उर्जा प्रवाहित होती रहती हैं जो साधक को भौतिक और आध्यातिम

front of them but though to get such sadhana is not impossible then too it is very difficult. Sadgurudev have many time revealed such sadhanas related to Isht darshan to the disciples and Sadhaks have adopted these sadhanas willingly and experienced their Isht. Sadhaks accepted that these sadhanas are surely fruitful to do but tough in practice. To do such sadhanas by common men is relly difficult, with following all rules, it is difficult in this time of world to do laks of mantra chanting.

When I spoke in this regards with Sadgurudev Paramhansh Nikhileshwaranandji, he said that to have a sight of Isht is really difficult because after that the energy of Isht keeps on flowing on the sadhaka which lay him ahead in the path of material and spiritual success, but if sadhak is not able to do such difficult sadhana there is another ritual which seems very common but it can fulfill a wish of Isht's sight. This is done on Guru yantra. All the god goddess and Bramh is established inside guru and Guru yantra is the symbol of him only. When sadhak +blessings of Sadguru they can see Isht inside Guru yantra.

With my special request he gave me that sadhana and for the task of isht

उन्नति की और बढाती रहती हैं , लेकिन अगर कोई साधक कठिन साधना न कर सके तो उनके लिए एक प्रयोग और भी हैं जो दिखने में अति सामान्य हैं लेकिन इससे इष्ट दर्शन निश्चित रूप से हो जाते हैं . यह प्रयोग गुरु यन्त्र पर होता हैं . गुरु के अंदर सर्व देवी देवता और स्वयं ब्रम्ह स्थापित होते ही हैं और उन्ही का प्रतिक गुरु यन्त्र होता हैं , जब साधक इस यन्त्र के सामने एक गोपनीय मंत्र का निश्चित संख्या में जप करता हैं तो गुरु कृपा से उस यन्त्र के मध्य में इष्ट प्रत्यक्ष हो जाते हैं .

मेरे विशेष अनुरोध पर उन्होंने कृपा करके मुझे यह साधना दी और जिस इष्ट दर्शन के लिए में चार साल से प्रयत्न कर रहा था वह इस साधना से मात्र ३ दिन में ही संभव हो गया और मेरे जीवन की एक बहोत बड़ी साध पूरी हुयी. साधक अंदाज़ा लगा सकते हैं की कहा कई साल विशेष नियमों के अंतर्गत साधना करना और कहा बस कुछ दिनों में ही वही परिणाम प्राप्त करना. यह गोपनीय और देव दुर्लभ साधना के लिए जितना भी कहा जाए उतना कम हैं . जीवन में इस प्रकार की साधना करने के लिए आतंरिक प्रेरणा मिलना सौभाग्य का उदय ही हैं . और इस प्रकार की साधना उपलब्ध होने के बाद भी कोई इसका प्रयोग न करे तो फिर उसे क्या कहा जाए.

इस साधना के लिए साधक के पास ' सिद्धाश्रम गुरु यन्त्र ' या फिर गुरु यन्त्र होना जरुरी हैं . यह साधना गुरुवार की रात्रि से शुरू होती हे. और यह प्रयोग ३ दिन का हैं .

साधक सर्व प्रथम गुरुदेव का पूजन करे और फिर उनसे

darshan which I was trying for 4 years, I had been successful in just 3 days only and the one of very big wish of my life was fulfilled. Sadhak can understand that where stands the many many years for sadhana with special rules and regularion and where else this sadhana can give the same result in just few days. What ever we say about this rare and secret sadhana is truly not enough. It is fortune to have inspiration to do such sadhana and if one does not accomplish such sadhana after gaining it what would you call that.

To accomplish this sadhana one must have "Siddhashram Guru Yanta "or Guru Yantra. This sadhana could be started on Thursday night. This is for 3 days.

Sadhak should do guru Poojan first and pray him to get success in the sadhana. After that one should think their isht in the form of Sadguru's part only and again pray for the success. After that looking at guru yantra chant 101 rosaries of the following mantra with Sfatik Rosary.

Aum Sadguru Isht Me Darshay Hum Hum

इष्ट दर्शन में सफलता के लिए प्रार्थना करे. फिर अपने इष्ट को सदगुरुदेव का ही एक स्वरुप समझ कर उनसे साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करे. उसके बाद रात्रि में स्फटिक माला से यन्त्र पर देखते हुए निम्न मंत्र की १०१ माला करे

ॐ सद्गुरु इष्ट में दर्शय हूं हूं

इस प्रकार १०१ माला करने पर साधक इष्ट और सदगुरुदेव को नमस्कार करके जप समाप्त करे. अगले २ दिन तक इसी तरह से जप करते रहे. तीसरे दिन, रात्रि में जप समाप्ति से पहले पहले निश्चित रूप से इष्ट के दर्शन गुरु यन्त्र पे हो जाते हैं और आगे भी जीवन में इष्ट की कृपा बनी रहती हैं . यन्त्र को पूजा स्थान में स्थापित करे और माला को भविष्य में यही प्रयोग अगर वापस करना चाहे तो उपयोग में ले सकते हैं .

यह अत्यंत ही सहज और सरल प्रयोग पुरे जीवन को बदलने की सामर्थ्य रखता हैं

This way by accomplishing 101 rosaries, sadhak should bow down to Isht and Sadguru. For next 2 days repeat the same process, one the third day, before completion of mantra chanting one for sure will be able to have sight of their Isht in the Guru Yantra. And the whole life is blessed. Yantra should be placed into worship place and rosary could be brought into use for the same sadhana in the future.

This is very easy and comfortable process but owns power to change whole life.

Shree Nikhileshwaranand kavach
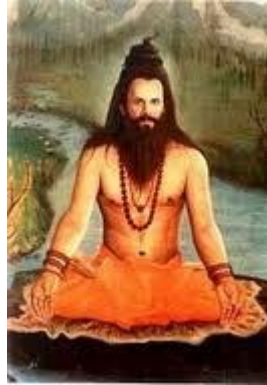
ब्रम्हांड का सर्वाधिक तीव्र प्रभावशाली रक्षात्मक एवं मनोवांछित इच्छापूर्ति करने वाला एकमेव कवच

Every body want to win this war happening day to day life but how that will be possible, every body want to become winner but that also required some price are you ready for that ,actually like in day to day life sadhana field also a place like war where you have to win not only other forces but dark and hidden forces already inside you, devta and devi all theses not are coming from outside actually they are all inside but only need to be realized and why that is not still possible till that ? since we are ignorant about our own true character and ability.

हर व्यक्ति जीवन के इस लगातार चल रहे युद्ध में विजयी होना ही चाहता हैं पर ये सोचने मात्र से तो संभव नहीं हैं ,जो भी विजयी होना चाहेगा उसे उसकी कुछ तो मूल्य चुकाना ही पड़ेगा .क्या आप इस कीमत को अदा करने के लिए तैयार हैं . ठीक हमारे दिन प्रति दिन की तरह साधना जीवनमें भी युद्ध की स्थति सदा बनी रहती हैं ही जहाँ हमारा क्षण प्रति क्षण युद्ध ,हमारे अंतर निहित गुप्त ,तामसिक शक्तियों से लगातार होता ही रहता हैं . देवता और दानव ये कही बाहर से नहीं अपितु हमारे अन्दर से ही आते हैं हमें इस थे को समझाना हैं बस , और हम ये क्यों नहीं समझ पाते हैं क्योंकि हम अपने आप के सही चरित ओर क्षमता से अपरिचित रहते हैं और अ ज्ञान ता के शिकार हैं आप य यजन्ते हैं ही एक युद्ध में व्यक्ति को शास्त्रों से सुसज्जित होना ही पड़ता हैं तो की आप सोचते हैं की साधन क्षेत्र में आपको ये सब न करना पड़ेगा. पर सत्य बात तो ये हैं की साधना क्षेत्र में इन सब की अधिक अनि वार्ता हैंहम ये समझने में बहुधा चुक जाते हैं की हमारा सामना ऐसे शत्रुओं से

But in war you have to be well equipped , so you think that will not be a essential things in sadhana actually that is needed most but we often we failed to realize that .we are fighting our internal enemy those who have not any definitive shape. I think in need to Little bit elaborate the subject.

This all you already aware that so many inferior devi and devta always around us, when we start or do any mantra jap they took full effect of that from us ,and even our hard work produced no positive result , and at the end we blame this or that, so we need to think on that ,secondly in day today life we cannot controlled our thought about others man/woman bad or dirty what ever you call, they also added negatives minus, resultant our positive energy again decreases. but in the beginning it is not possible to control our all thought and action , infect tantric does not teaches to control you but its emphases on that to understand the inner working and try to understand than to control.

If you are too much mixing with negative mind people we aware of that that also a cause for need to think .

I think still you have some doubt mine view so just look what is **shree ma** , a disciple of great mahayogi Shri Arvindo

हैं जिनका कोई निश्चित आकार या समय , स्थान नहीं हैं , में इस विषय को और विस्तृत करता हूँ.

इस तथ्य से आप सभी परिचित हैं ही की हरसमय हमारे चारों ओर बहुत सारे क्षुद्र देवी देवता हमें घेरे हुए रहते हैं .जब भी हम कोई भी मंत्र जप या साधना करते हैं उस का सारा प्रभाव वे ग्रहण कर लेते हैं , तो इस तरह से हमारा कठिन श्रम निष्फल हो जाता हैं अंत में हम इस पर या उस पर बात पर अपनी असफलता का दोष मढ़ते हैं. हमें इस थी ओर भी ध्यान देना ही चाहिए , दूसरी महवपूर्ण बात ये हैं की दिन प्रति दिन के दैनिक जीवन में हम अपने विचार अच्छे या बुरे किसी भी परिचित/अपरिचित महिला/पुरुष के बारे में नियंत्रित नहीं कर पाते , ये भी हमारे साधनात्मक जीवन की उर्जा को क्षय करने वाले हैं जिसके फलस्वरूप हमारी धनात्मक उर्जा नष्ट हो ती रहती हैं .प्रारंभ में यह विचारों ओर कार्यों को नियत्रित करना इतना आसान नहीं हैं ,तंत्र हमें बलपूर्वक नियत्रण करना नहीं सिखाता हैं बल्कि हमें समझाता हैं की हम अन्दर चल रही प्रक्रियाओं को समझे , ओर जैसे ही हम समझे इनसे हमें आपने आप पर स्वतः ही नियंत्रण आ जायेगा .

यदि आपके संपर्क क्षेत्र में यदि बहुत सारे ऋ णा त्मक विचार धारा के लोग हैं तो आपको इस बारेमें भी सोचना चाहिए , येभी साधना सफलता में बाधक हैं .

मैं सोचता की अभी भी आप यदि मेरे दृष्टी कोण से सहमत न हुए होतो में महा ऋ षी श्री अरिविंद घोष जी शिष्य "श्री माँ" के जीवन के बारेमें उन्होंने लिखा हैं की बचपन में वे वे एक प्रार्थना गृह में जाया करती थी,जहाँ पर बड़ी मकड़ी छत पर रहती थी, वह मकड़ी सभी व्यक्तियों के द्वारा किजाने वाली प्रार्थना को ग्रहण कर लेती थी , क्या इस बात पर आसानी से बिश्वास कर सकते हैं , पर आध्यत्मिक जीवन के बहुत से ऐसे तथ्य हैं जिनके ऊपर सामान्य व्यक्ति बिश्वास ही कर प् सकता हैं

जब तक की वह स्वयं किसी भी दिव्य गुरु की शरण में आ पाया हो .

ghosh of pandichery , who know not about her, she also wrote that in a particular church where she in her child hood used to go , there was a big spider on the ceiling , that spider consume all the prayer offered by the people in that church, can you believe that ,or think this is believable but .spiritual field has so many secret that normal general people cannot understand till he comes under the divine shadow of a true guru

we always take this or that great diksha but are you aware of the fact that their effect are also day by day decreasing in fighting our negativism. a very highly placed army doctor , our guru brother once I asked him , now what is the status of his spiritual level since in first Allahabad shivir Sadgurudev himself talked about him on . he simply replied I have to again take diksha from the beginning ,

why so..

you are already taken so many before..

Sadgurudev ji told him that all the power of that Diksha already utilized so…

But question is here, til we not control our thought , til that our faith in Sadgurudev ji not so strong, or on sadhana and mantra tantra not so strong, or we are not able to take any great diksha than.. what is left for us……………….

हम लगातार ये या वह दिव्य दीक्षा गुरु त्रिमूर्ति जी से लेते हैं रहते हैं पर क्या आप इस तथ्य से अवगत हैंकि इन दिव्य दीक्षाओं का अ सर भी लगातार हमारे जीवन की ऋणा त्मक परिस्तितियों से संघर्ष करते करते धीरे धीरे कम हो जाता हैं . एक भारतीय सेना में उच्च पदस्थ गुरु भाई जिनके बारेमें अलाहाबाद शिविर में सदगुरुदेव ने हम सभी से परिचय कराया था , उस घटना के कई वर्षों के बाद जोधपुर गुरुधाम में मिलने पर में उनसे पूछह की आपका सधान्त्मक स्तर तो बहुत ही अच्छा होगा ,उन्होंने कहा की सदगुरुदेव भगवान् ने उन्हें फिर से सभी दीक्षाएं लेने को कहा हैं

पर क्यों

अरे अपने तो पहले से भी कई दीक्षा ले चुके हैं

सदगुरुदेव जी ने कहा था की ली गए सारी दीक्षाओं का असर ,उपयोग हो गया हैं .

यहाँ पर एक प्रश्न सामने आता हैं कि जब तक मानसिक विचारों पर हमारा नियंतरण न आये, जब तक सदगुरुदेव जी के प्रति हमारा बिश्वास अडिंग न हो या साधना या मंत्र के प्रति आगाध श्रद्धा न हो , जब तक कोई महा दीक्षा प्राप्त का कर ले तब तक क्या हम हाँथ पर हाँथ रखे बैठे रहे.

जहाँ पर परमहंस निखिलेश्वरानंद जी हैं वही पर विजय हैं जीत हैं वहीँ सब कुछ धनात्मक हैं.इसलिए जो कुछ भी सदगुरुदेव जी से सम्बंधित होगा उसमें स्वतः ही उनकी महानता दृष्टी गत हो गी ही . फिर चाहे वह गुरु मंत्र , गुरु यन्त्र हो , ओर यही बात पुर्णतः से लागु होती हैं इस महान , विशेष कवच पर भी .क्या कुछ भी संभव नहीं हो सकता हैं इस कवच के माध्यम से ,अर्थात सब कुछ पुर्णतः संभव हैं . यदि आप अभी भी ये सोच रहे हैं की ये तो सामान्य सी बात हैं जो की हर कवच के साथ लिख दी जाती हैं .ध्यान रखे ये कवच उन सभी कवच की श्रेणी का नहीं हैं ये तो हमारे सदगुरुदेव जी से संबंधित हैं . आप ये बात पुर्णतः ध्यान रखे की जिन्होंने भी सदगुरुदेव जी का सन्यास काल में एक क्षण के लिए भी दर्शन कर पाए थे , उन्हें स्वतः ही पूर्ण शक्तिपात हो जाया था ,

Where paramhansa Nikhileshwaraanand ji , is, there is victory and all the positive is. So anything related to Gurudev ji definitely have the greatness of our Poojya Sadgurudev ji, either guru mantra, of him, guru yantra and same things applicable of this great kavach.nothing can be impossible from this kavach, oh you think this is a common word written of any kavach, but keep in mind all are not that type of kavach like this one of our ever Sadgurudev ji's kavach,.people were lucky to see even a second glimpases of Sadgurudev ji and have shaktipaat , than think we are so close to him how much lucky, and when Sadgurudev very own kavach is available to children like than what is consider more boon .

Dear one not to be so disappointed, Sadgurudev ji 'sanyasi shishy swami shridharaanand ji living in siddhasharam had make a such a prayog/kavach ,we knew as sri nikhileshwaraanand kavach, and that Sadgurudev ji 's blessing that too is available to us .many of you already aware of that that kavach is available in ***danaik guru poojan vidhan*** book in the last pages, and in complete form OF that kavach (WITH vINIYOG AND KAR NYAS AND HRDYA NYAS) was first appeared in page 33 of july 1993 issue of MANTRA TANTRA YANTRA VIGYAN .

And what will be the process of applying

फिर उनके सन्यासी स्वरुप से संबंधित ये कवच के बारे में लिखना मानो सूर्य को दीपक दिखाना हैं . सोचे हम सभी उनके बच्चे कितने भाग्यशाली हैं जो उनके इस महत्पूर्ण कवच जो आज हमारे पास उपलब्ध हैं , उनकी कृपा के अतिरिक्त क्या हैं .

प्रिय गुरु भाइयों क्यों निराश होना, जबकि सदगुरुदेव जीके सिद्धाश्रम स्थित सन्यासी शिष्य स्वामी श्री धरा नन्द जी ने इक प्रयोग रूपी यह महत दुर्लभ कवच को प्राप्त कर /निर्माण कर ,सदगुरुदेव जी आशीर्वाद स्वरुप से हम सभी को उपलब्ध कराया हैं.आप में से अनेक इस कवच के बारे में पहले से ही जानते हैं यह कवच "दैनिक गुरु पूजन विधान" किताब के अंतिम प्रष्टों में दिया हुआ हैं . (कर न्यास , ह्रदय न्यास , ओर विनियोग के साथ ये कवच विस्तार से "मन्त्र तंत्र यंत्र विज्ञानं पत्रिका के जुलाई १९९३ अंक के पेज ३३ पर दिया हुआ हैं)

पर इस का उपयोग या प्रयोग किस प्रकार से करना हैं , इस का पूर्ण पाठ सम्पूर्ण न्यास , विनी योग सहित किसी भी साधना के प्रारंभ और अंत में जरुर करे , जिससे की साधना का प्रभाव दोनों ओर से कवचित हो सके , ओर हमारे मंत्र जप का प्रभाव काल का शिकार न बने , न ही कोई अद्रश्य सत्ता उसके प्रभाव को हम से छीन सके .कवच का सुरक्षात्मक घेरा सभी १० दिशाओं से हमें कवचित कर सफलता दे सके . इसका तो येभी मतलब हुआ की इस कवच का हम प्रयोग किसी भी साधना फिर चाहे वह शमशान या अघोर साधना ही क्यों न हो , यदि उसमें आपको कोई भी सुरक्षा चक्र निर्माण की विधि न प्राप्त हो .उसमें किसी भी आवश्यकता के समय बेहिचक किया जा सकता हैं . हाँ ये बात भली भांति जन ले की शमशान कोई खेल का मैदान नहीं हैं जिसमें आप कोई भी मन से खिल वाड करने को स्वतंत्र हैं और ऐसा करने पर आप उसके परिणाम को सहन करने की लिए फिर तैयार रहे. तो आप ये सोच सकते हैं की किसी भी प्रकार की साधना में सामान रूप से उपयोगित ये कवच क्या उनके द्वारा दिया गया महत वरदान ही नहीं हैं ...

यदि आप इस महत कवच का प्रयोग अपनी दैनिक या हमेशा की जाने वाली साधना में यदि अब भी

that do recite with full faith and devotion and heart to our beloved Sadgurudev ji in the beginning and after of the sadhana that makes a full protection of your sadhana mantra jap not to be wastes / theft by any un foreseen forces. Kavach is protecting coat/shield working all the 10 direction around us. and this mean kavach is equally applicable to sadhana related to home . what will happen when we do any type of sadhana in shamshan can anything protect us in time of need , if we do not know any protecting things, firstly try to understand that shamshan is not a play ground where you go for just play doing thing whatever you like ,if you do any thing there than ready to bear consequences. shamshan sadhana and aghor sadhana or any type of sadhana you can think, now realize what a great boon given to us from Sadgurudev ji to our guru bhai. Now even if you do not apply daily or routinely done sadhana than whose fault is this, I also pray that we all benefitted by that by applying in day to sadhana. Have a blessing of our sadgurudev ji...	नहीं करते हैं तो ये किसकी गलती होगी ...हम सभी इस कवच का प्रयोग अपने हर साधना में कर सदगुरुदेव के ज्ञान को अंतर समाहित कर उनका गौरव प्रवर्धित करे

श्री निखिलेश्वरानंद कवचम

ॐ अस्य श्री निखिलेश्वरानंद कवचस्य ,श्री मुदगल ऋषिः .अनुष्टुप छंद :.

श्री गुरुदेवो निखिलेश्वरानंद परमात्मा देवता .

"महोस्त्वं रूपं च " इति बीजम.

"प्रबुद्धम निर्नित्यमिति " कीलकम .

"अथौ नैत्रं पूर्ण " इति कवचम .

श्री भगवतो निखिलेश्वरानंद प्रीत्यर्थं पाठे विनियोग :.

कर न्यास :

श्री सर्वात्मने निखिलेश्वराय - अन्गुष्ठाभ्यां नमः .

श्री मंत्रात्मने पूर्णेश्वराय - तर्जनीभ्यां नमः .

श्री तंत्रात्मने वागीश्वराय - मध्यमाभ्यां नमः .

श्री यंत्रात्मने योगीश्वराय - अनामिकाभ्यां नमः .

श्री शिष्य प्राणात्मने सच्चिदानंद प्रियाय - कर तल कर पृष्ठाभ्यां नमः .

अंग न्यास :

श्रीं शेश्वरः हृदयाय नम : .

ह्रीं शेश्वरः शिरसे स्वाहा .

क्लीं शेश्वरः शिखायै वषट .

तंप् सेश्वर : कवचाय हुम .

तापे शेश्वरः नेत्रयाय वौषट .

एकेश्वरः करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट .

रक्षात्मक देह कवचम

शिरः सिद्धेश्वरः पातु ललाटं च परात्परः |
नेत्रे निखिलेश्वरानन्द नासिका नरकान्तकः || १ ||

कर्णौं कालात्मकः पातु मुखं मन्त्रेश्वरस्तथा |
कण्ठं रक्षतु वागीशः भुजौ च भुवनेश्वरः || २ ||

स्कन्धौ कामेश्वरः पातु हृदयं ब्रह्मवर्चसः |
नाभिं नारायणो रक्षेत् उरुं ऊर्जस्वलोऽपि वै || ३ ||

जानुनि सच्चिदानन्दः पातु पादौ शिवात्मकः |
गुह्यं लयात्मकः पायात् चित्तंचिन्तापहारकः || ४ ||

मदनेशः मनः पातु पृष्ठं पूर्णप्रदायकः |
पूर्वं रक्षतु तंत्रेशः यंत्रेशः वारुणीं तथा || ५ ||

उत्तरं श्रीधरः रक्षेत् दक्षिणं दक्षिणेश्वर |
पातालं पातु सर्वज्ञः ऊर्ध्वं मे प्राण संज्ञकः || ६ ||

कवचेनावृतो यस्तु यत्र कुत्रापित गच्छति |
तत्र सर्वत्र लाभः स्यात् किंचिदत्र न संशयः || ७ ||

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितं |
धनवान् बलवान् लोके जायते समुपासकः || ८ ||

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः |
नश्यन्ति सर्वविघ्नानि दर्शानात् कवचावृतम् || ९ ||

य इदं कवचं पुण्यं प्रातः पठति नित्यशः |
सिद्धाश्रम पदारूढः ब्रह्मभावेन भूयते || १० ||

Shree Nikhileshwaranand kavacham

om asy shree nikhileshwaranand kavchsy , shree mudgal rishih anushtupu chhandah,

shree gurudevo nikhileshwaranand parmatma devta

“mahostvam rupam ch” iti beejam .

“prabuddham nirnitymiti” keelkam .

“athau netram purnam”iti kavacham

shree bhgvato nikhileshwaranand prityartham paathe viniyogah

kar nyas:

shree sarvatmane nikhileshwarayay –angushtha bhyam namah

shree mantratmane purneshwarayay –tarjani bhyam namah

shree tantratmane vagishwarayay –madhymaa bhyam namah

shree Yantratmane yogishwarayay –anamika bhyam namah

shree shishy pranaatmane sachchidanand priyay –kar tal kar prishtha bhyam namah

Ang Nyas:

Shreem sheshwarah hradyay namah

hreem sheshwarah shirse swaha

kleem sheshwarah shikhayi vashat.

tpa seshwarah kavchay hum

taape Sheshwarah netrayay vaushat

ekeshwar kartal prishtha bhyam astray phat.

Rakshatmak Deh kavacham

shirah siddheshwarah paatu lalaatam ch paraatpar
netre nikhileshwaranand naasika narkantak || १ ||

karno kalatmakah patu mukham mantreshwarstatha

kantham rakshtu vaagishah bhujau ch bhuvneshwarah || २ ||

skandhao kameshwarah paatu hradyam bramhavarchasy
nabhim narayano rakshet urum urjaswalopi vai|| ३ ||

januni sachchidanandah paatu paadau shivatmakah
guhayam lyaanmakah paayaat chitt chintaphaarakah|| ४ ||

madaneshah manah paatu prishtham purnpradyakah

purvam rakshtu tantreshah yantreshah vaarunim tatha || ५ ||

uttaram shridharah rakshet dakshinamdakshineshwar
patalam paatu sarvgyah urdhvam me pransangykah|| ६ ||
kavachenavrito yastu yatrakutrapit gachhati
ttra sarvart labhah syat kinchidatr na sanshy|| ७ ||
yam yam chityte kamam tam tam prapnoti nishichitam
dhanvaan balvaan loke jayte samupasakah|| ८ ||

|grahbhutpishchaaksh yakshgandhrvrakkshsah
nashyantisarvvighanani darshanaat kavchavritam|| ९ ||

ya idam kavacham punyam pratah pathti nityashah

siddhashram padarudhamah bramh bhaaven bhuyte || १० ||

Gopniy Shukra Tantra Sadhana

गोपनीय शुक्र तंत्र साधना

जो साधक के लिए अनिवार्य ही है ,को सिद्ध करने का दुर्लभ विधान

Shivmesh Brother - Gurudev, yesterday also, the same incident happened with me…..What's my fault???? I am performing this act whole heartedly from so many years, but the moment I reach near to the success, each time the same incident happens…..For what reason, I am suffering for this…..Where I am lacking in my devotion ???? Shivmesh brother was crying in front of Sadgurudev….Neither his sobbing stopped nor he stopped crying… I was standing on the main door as Sadgurudev has called me up with a glass of water….When I was about to enter in the room, I heard this conversation….He was yelling with tears in his eyes that	गुरुदेव कल फिर मेरे साथ वही घटना घटित हुयी है , आखिर मेरा क्या दोष है? पूर्ण मनोयोग से मैं पिछले कई वर्षों से ये साधना कर रहा हूँ पर जब भी मैं सफलता के निकट पहुचता हूँ , हर बार बस वही घटना घटित हो जाती है. आखिर किन कर्मों का फल मैं भुगत रहा हूँ? क्या कमी है मेरी साधना में. शिवमेश भाई सदगुरुदेव के चरणों से लिपट कर रोते हुए कह रहे थे. ना तो उनकी सिसकियाँ बंद हो रही थी और न ही उनका प्रलाप. मैं दरवाजे पर खड़ा था और गुरुदेव ने मुझे पानी का गिलास लेकर भीतर बुलाया था. मैं पानी का गिलास लेकर जब भीतर पंहुचा तो ये आवाज मेरे कानों में पड़ी. वे रोते हुए कह रहे थे – हे गुरुदेव न तो कभी मैं विषय वासनाओं का चिंतन ही करता हूँ और न ही कभी कोई तामसिक आहार का सेवन ही मैंने किया है, मैं स्वयं पाकी (खुद भोजन बनाकर खाने वाला) हूँ , तो जब ऐसी कोई गलती मैंने की ही नहीं तब साधना के मध्य कामुक चिंतन और स्वप्नदोष कैसे संभव है???? और जब भी मैं साधना के अंतिम चरण की और अग्रसर

Shivmesh Brother -Sadgurudev I am never engaged in the materialistic things nor I have ate any Non-vegetarian food, I myself cook the pure vegetarian food….When I have not done any mistake, then how the indecent feelings and Nocturnal Emission (Swapnadosh) are possible????? And whenever I reach at the last point of my devotion, this happens…..

From last 17 years, I am trying my best to achieve my this dream and every time it becomes just a dream to feel the experience of Maa Lalitamba…..I think all the acts like Brahmand Stambhan, Brahmand Bhedan and Ashtadash Siddhi will become only dream of mine…..I am no more interested in my life and I want to end this life….

Sadgurudev – Don't act childish….You want to achieve that success for which the devotees give their whole life…. & what do you think that Brahmand Bhedan is such an easy subject that you just raise your hand and it will come like a fruit from the tree…..When the interference occurs in the work of the Universe activities, then what next remains????

Shivmesh Brother - Then what will I do???

Sadgurudev – Ok, now tell me what are the four main "Purusharth"????

Shivmesh Brother -These are Dharma, Arth, Kaam & Moksh

Sadgurudev – That's right….but do you know

होता हूँ ये क्रम घटित होने लगता है.

पिछले १७ वर्षों से मैं इस स्वप्न को साकार करने में लगा हूँ और हर बार माँ ललिताम्बा का प्रत्यक्षीकरण बस स्वप्न ही बन के रह जाता है. ब्रह्माण्ड स्तम्भन, ब्रह्माण्ड भेदन और अष्टादश सिद्धियाँ तो मेरा सपना ही रह जाएँगी. अब मुझे इस जीवन से कोई मोह नहीं है,मैं इस शरीर को नष्ट कर देना चाहता हूँ.....

बच्चों के जैसे बाते न करो- सदगुरुदेव ने डपटते हुए कहा .

तुम जिस सफलता को पाना चाहते हो उसके लिए साधक अपना जीवन लगा देते हैं . क्या ब्रहमांड भेदन इतना सहज विषय है की बस उठे और हाथ बढाकर उसे वृक्ष से तोड़ लिया. अरे जब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की क्रियाओं में ही आपका हस्तक्षेप हो जाये तो भला बाकी क्या रह जाता है .

तो फिर मैं क्या करूं ??

अच्छा बताओ मानव जीवन के चार पुरुषार्थ कौन कौन से हैं- सदगुरुदेव ने पूछा.

जी धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष .

ठीक, पर क्या तुम्हे पता है की मोक्ष का अर्थ मृत्यु कदापि नहीं होता . वास्तव में मोक्ष को लेकर भ्रांतियों के शिकार हैं सभी. मोक्ष तो समस्त इच्छाओं के पूर्ण होने पर पूर्ण तृप्त होने की क्रिया है जहाँ पर कोई वासना, कोई चाह शेष न रह जाये. पर हम तो भ्रम जाल में फँसे हुए हैं. और मनुष्य जब साधक बनकर पूर्णत्व अर्थात मोक्ष के मार्ग पर बढ़ता है तो उसकी अपनी सहचरी ये प्रकृति उस परम लक्ष्य तक पहुचने के पहले उसे भली भांति परख लेती है. और तुम्हे पता है ये परीक्षा कहाँ होती है ??

जी मुझे नहीं पता ...

देखो हमारी सभी शक्तियाँ और हमारी कमजोरियां हमारे भीतर ही होती है , हैं ना.

जी बिलकुल है .

that the Moksh does not at all related with Death….Eventually, many people are confused between Death and Enlightenment……Moksh is related with the complete satisfaction of the total desires of a person where no desires left….but we all are stucked in illusions and when a simple man turns into a devotee and walks on the path of completeness i.e. enlightenment then his basic nature verifies him before achieving his main aim and target….and do you know, where this exam happens ????

Shivmesh Brother -No, I don't know this…

Sadgurudev – Look, all our unconscious powers and weakness lies in ourselves, right???

Shivmesh Brother -Yes, that's true…

Sadgurudev – Then you must not be aware what are mythological and holy books says….They states that "Yat Pinde Tat Brahmande"….that means whatever lies inside us is visible in this Universe and similarly we see the beauty of nature from outside, the vacuum and capabilities lies inside us….And you only think, the things which lies inside us, we will be more able to understand the loops and holes rather than any outsider….But, remember this examination of the Nature differs for each person….A normal person gets engaged in the materialistic things and he is not able to focus on the aim and then the person pass away all his whole life in filling his greed and dies….But, when a person fights against all the odds to acquire his destiny he has to face all the difficult tasks of this nature….

तब क्या तुम्हे ये नहीं पता की शास्त्र क्या कहते हैं. शास्त्र का ही उद्घोष है " यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे" अर्थात जो कुछ हमारे भीतर है वही इस बाह्यागत ब्रह्माण्ड में दिखाई पड़ता है. और जिस प्रकार प्रकृति की सुंदरता हमें बाहरी रूप से दिखती है उसी प्रकार उसकी न्यूनता और सामर्थ्य हमारे भीतर ही होता है . और तुम खुद ही सोचो जो हमारे भीतर होगा उसे किसी अन्य की अपेक्षा हमारे कमजोर पक्ष की कही ज्यादा जानकारी होगी. परन्तु प्रकृति का परिक्षण व्यक्ति विशेष के लिए भिन्न भिन्न प्रकार का होता है . सामान्य मानव को उसकी दमित वासनाओं में उलझा कर वो लक्ष्य के बारे में सोचने का समय ही नहीं देती और एक आम इंसान अपने लालच का मटका भरते भरते ही इस जीवन से चला जाता है. परन्तु जब कोई अपनी नियति को प्राप्त करने की और कदम बढाता है तो उसे सबसे पहले इसी प्रकृति का विरोध झेलना पड़ता है.

भला ऐसा क्यों??

क्योंकि जब आप अपनी नियति अपने अस्तित्व को प्राप्त करने की और अग्रसर होते हो तो उसका अर्थ होता है पूर्णता को प्राप्त कर लेना, क्यूंकि विराटता सिर्फ श्री कृष्ण में ही नहीं बल्कि प्रत्येक मनुष्य में निवास करती है. और अपने अस्तित्व को जान लेने का अर्थ ही होता है अपनी विराटता को समझ लेना.तब ऐसा क्या है जो हम संभव नहीं कर सकते , ऐसा क्या है जो हमारी इच्छा मात्र से हमें प्राप्त नहीं हो सकता तब प्रकृति आपकी सहचरी बनती है न की स्वामी, परन्तु तब भी वो विराट मानव प्रकृति के नियमों की अवहेलना नहीं करता , क्योंकि विराट भाव मिलने का दूसरा अर्थ पूर्ण विवेक की प्राप्ति भी तो होता है . परन्तु ये इतना सहज नहीं होता, क्योंकि जन्म के साथ ही मानव प्रकृति के चक्र में फँस जाता है. या ये कह लो की हमारे जन्म के पहले ही प्रकृति को ज्ञात होता है की हम क्या बनेंगे. तब उसके लिए तो रास्ता आसान हो जाता है .

वो कैसे ??

क्योंकि हमारा जीवन प्रकृति की उन्ही शक्तियों में से एक नवग्रहों के अधीन हैं . और ये नवग्रह ही उन चारो पुरुषार्थों के प्रतिनिधि हैं. और सामान्य ज्योतिष इन बातों को नहीं समझ सकता . इसके लिए ही तो जीवन में सद्गुरु की आवश्यकता होती है.

Shivmesh Brother - But why this happens???

Sadgurudev – Because whenever you tries to accomplish your identity from your destiny it means you are very near to accomplish the completeness because the vastness not only exists in Shri Krishna but in every person & to understand the complete identity means to know the vastness of our selves….Then what is it which stops us to make it possible just as we desire….What is it that even when the nature becomes friendly not the master, still that vastness of the person cannot avoid the rules of the nature & that is because the experience of this vastness is another meaning of acquiring complete knowledge and sense of yourself…..But, this is not so much easy because a human gets entangled in the basic human nature as soon as he gets life or you can say before our birth the nature is well aware what we will be in future and the way becomes easy for the person…

Shivmesh Brother - But how???

Sadgurudev – Because our life is in under the supervision of the almighty powers of one of the Nine ruling planets and these ruling planets are the representatives of the four “Purusharths” & the normal astrology cannot explain these aspects….For this, you have to be in guidance of Sadgurudev….Only, he can tell which planet is in favor and which is against his work….but, the main obstacle in the path of Moksh or Dharma is the intense feeling of all the lecherous things and that too in the devotion time and the limit crossed when this feeling gets increased for the devotional God & Goddess and even for the Guru also……and this point is not under the control

वे ही बता सकते हैं की कौन सा ग्रह तुम्हारे लिए प्रतिकूल है और कौन सा अनुकूल. पर धर्म पथ पर या मोक्ष के मार्ग में जो सबसे बड़ा व्यवधान होता है वो होता है काम भाव का अति आवेग , वो भी साधना के दिनों में और हद तो तब होती है जब वो आवेग साधनात्मक इष्ट , समबन्धित देवी देवता और यहाँ तक की गुरु के प्रति भी हो जाता जाता है . और यही पर साधक के बस में कुछ नहीं होता. जहाँ जीवन में आर्थिक या अध्यात्मिक उन्नति का परिचायक शनि होता है , वहीं पर उसकी **दमित काम भावना, कुत्सित या सुप्त विचार, साधनाओं में व्यवधान के रूप में कामुक चिंतन, स्वप्न दोष, आसन पर बैठने की क्षमता में न्यूनता,चित्त की बैचेनी और आसन स्खलन** आदि का प्रतिनिधित्व शुक्र ग्रह करता है , शुक्र स्त्री ग्रह है, सौंदर्य और प्रेम का प्रतीक है पर तभी तक जब तक उसकी शक्ति संतुलित है . परन्तु ९७% व्यक्तियों की कुंडली में ऐसा नहीं होता है . वे शनि,मंगल अथवा राहू केतु की शक्ति को तो मानते हैं और उसका समाधान करने का भी प्रयत्न करते हैं पर शुक्र को तो गिनती में ही नहीं रखते , अरे बारहवाँ भाव मोक्ष का तो है पर यदि उसमे शुक्र की पूर्ण संतुलित अंशों में निरापद उपस्थिति हो जाये तो ये सोने में सुहागा ही होगा. अब हर कुंडली में तो ये नहीं हो सकता परन्तु यदि शुक्र को प्रयासपूर्वक व्यक्ति संतुलित कर ले तो निश्चय व्यक्ति को इसके सकारात्मक परिणाम मिलते ही हैं. यथा साधना में पूर्ण सफलता,प्रबल आकर्षण क्षमता,ऐश्वर्य, विशुद्ध प्रेम की प्राप्ति और सबसे बड़ा काम भाव पर विजय,यदि सामान्य रूप से एक आम व्यक्ति भी इस साधना को संपन्न कर लेता है तो उसे भी अद्वितीय सुंदरता,पूर्ण ऐश्वर्य और विशुद्ध प्रेम की प्राप्ति होती ही है.यदि कोई स्त्री या पुरुष अपने आप को कुरूप मानता हो या सौंदर्य में वृद्धि करना चाहता हो तो ये एक अद्भुत प्रभावकारी साधना है. और तंत्र अपनी कमियों को स्वीकार कर विजय प्राप्त करने की ही क्रिया है, ना की उसका दमन करने की. तुम भोजन में सात्विकता बरत सकते हो पर तुम्हारे शरीर, तुम्हारे चिंतन का जो प्रतिनिधित्व कर रहा है उसके लिए तुमने क्या किया? क्या कभी ये सोचा है ? तुम अकेले नहीं ८०% साधक इसी बाधा में फस कर सफलता से कोसो दूर रहते हैं.

आपने मेरी आँखे खोल दी- शिवमेश जी सदगुरुदेव के चरणों में गिर पड़े .

of the devotee where the Saturn (Shani) rules the financial and dedicational aspects as well as Venus (Shukra)rules all the lecherous feelings with the nocturnal emissions or diverting feelings, the capacity gets decrease for the devotion…because Venus represents – a female planet and represents love and beauty till the time the powers are balanced….but at the times,97% of the horoscopes does not focus on this part…People assumes Mars(Mangal),Rahu and Ketu as the main powerful planets and finds way to cure them but ignores the Venus planet(Shukra)…without knowing the fact that the 12th position is of Moksh and if the Shukra presence is there with the proper fragments it will be the best ever position…..Now, this is not possible in each horoscope. but if a person tries to balance the position of the Venus (Shukra),the person will definitely gets the positive result…

When the devotee performs the devotion with complete dedication he will acquire all the powers of strong attraction, wealthness, pure love & the most important victory on all the feelings…..and if a normal human being also performs this he will become able to control all the above powers….If a person feels that he or she is not attractive and is ugly can perform this devotion and wants to develop the beauty, this is the best unique devotion to get the same accomplished…& the Tantra is meant to control and come over all the lacking not to demoralize the aspects….You can maintain the dignity of the food as you wants but what about the body demands and the representative who is governing your emotions and feelings….What have you done for that???Have you ever thought for that????You are not alone; my son….80% of the devotees gets stucked in this problem and remains far away from the success…

अब आप बताइए मैं इस क्रिया को कैसे संपन्न करूँ.

देखो शिवमेश हो सकता है की हमें लगता हो की हमारे जन्मचक्र में ग्रह अनुकूल बैठा है पर वास्तव में ऐसा नहीं होता है . आज जो जन्मकुंडली का स्वरुप समाज में प्रचलित है वही मतभेद में घिरा हुआ है ,किसे जन्म समय मानें यही स्पष्ट नहीं है तो कुंडली का सही निर्माण और विवेचना कैसे संभव होगी.और मानव के जीवन में सिर्फ इस जीवन का नहीं बल्कि पिछले जीवनों का भी प्रभाव रहता है क्योंकि ये तो एक श्रृंखला है जो उत्पत्ति से अभी तक चली आ रही है. हो सकता है की आज तुम्हारा शुक्र अनुकूल हो पर विगत किसी जीवन में तुम उसकी प्रतिकूलता से पीड़ित रहे हो तब ऐसी दशा में उसका साधनात्मक परिहार कर लेना कही ज्यादा बेहतर रहता है . ऐसे में वो तुम्हारी साधना में बाधा भी नहीं बनेगा उलटे तुम्हे अनुकूलता देकर तुम्हारे अभीष्ट को भी दिलवाएगा. प्रत्येक साधक को अपने जीवन में इस साधना को एक बार अवश्य कर लेना चाहिए और हो सके तो अपने साधना जीवन के प्रारंभ में ही ऐसा कर लेने पर कही ज्यादा अनुकूलता होती है . और इस साधना को कोई भी कर सकता है , ये विचार करने की कोई आवशयकता नहीं की हमारी कुंडली में शुक्र या अन्य ग्रहों की क्या स्थिति है.

इतना कहकर सदगुरुदेव ने इस साधना का विधान उन्हें बता दिया , और उन्हें प्रणाम और श्रृद्धा अर्पित कर शिवमेश वह से प्रसन्न मन से चले गए.

गुरुदेव अब ये पानी ?????

अब इसकी कोई जरुरत नहीं –सदगुरुदेव ने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराकर कहा .

बाद में मैंने भी इस साधना को संपन्न कर इसके लाभ को प्राप्त किया और कई वर्षों बाद माँ कामाख्या पीठ में अचानक कालीदत्त शर्मा जी के यहाँ जब शिवमेश जी से मेरी मुलाकात हुयी तो उनका चेहरा सफलता के प्रकाश से जगमगा रहा था. मेरे पूछने पर उन्होंने बताया की हाँ सदगुरुदेव के यहाँ से लौटने के बाद उन्होंने इसी साधना को किया और इसके बाद उस साधना को संपन्न किया तो माँ ललिताम्बा की वो अद्भुत साधना पहली बार में ही सफलतापूर्वक संपन्न हो गयी , और मुझे वो सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी जिनके लिए कई वर्षों से मैं साधना कर रहा था . उन्होंने अपनी साधना शक्ति से

Shivmesh Brother - You have opened my eyes...& he fell in the holy feets of the Sadgurudev…Pls.tell me how can I perform this act????

Sadgurudev – Look Shivmesh,it may happen that we feel that this planet is in favor in our horoscope, but this is not the actual position…..In today's context the format of the horoscope is having too many different views….When we are not aware what is the correct birth time how can we analyze the right and accurate calculations because the person life not only gets affect by the current life but also gets affected by the previous birth as it is a long chain which is in existence from the first survival till now….It may happen that in today life, Venus planet is in favor with you but in your previous birth, it was against your positions….In this condition, to know and to at according to the position is the right thing for the devotee….By this,that planet will not harm you but will provide favor for your devotion and will fulfill your aim too…Each devotee needs to conduct this act in his devotional life once and is possible in the first learning phase gives more favor…This devotion can be done by anyone and no need to give second thought on this that in which position the Venus is lying with other planets…

After stating this Sadgurudev explained the method to perform this act and Shivmesh Brother went happily with the blessings of the Sadgurudev from there….

Me – Gurudev, what about the glass of water????

Sadgurudev – Now there is no need

कई अद्भुत कार्य भी करके मुझे दिखाए. सदगुरुदेव ने जो विधान बताया था वो मैं नीचे वर्णित कर रहा हूँ.

अनिवार्य सामग्री-सफ़ेद आसन व वस्त्र(साधक सफ़ेद धोती और सध्काएं सफ़ेद साडी का प्रयोग करे), ताम्र पत्र या रजत पत्र पर उत्कीर्ण चैतन्य और पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित शुक्र यंत्र,सफ़ेद हकीक की माला, घृत दीपक,अक्षत , सफ़ेद पुष्प(मोगरा मिल सके तो अतिउत्तम),खीर आदि.

प्रातः काल स्नान कर सफ़ेद धोती धारण कर पूजा स्थल में बैठे और आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) दिशा की और मुह कर बैठे , पूर्व भी किया जा सकता है. सामने बाजोट पर सफ़ेद रेशमी वस्त्र बिछा ले और उस पर चावलों की ढेरी बनाकर उस पर शुक्र यंत्र की स्थापना कर ले . हाथ में जल लेकर शुक्र साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए सदगुरुदेव और भगवान गणपति से प्रार्थना करे. तत्पश्चात गुरु मंत्र की ४ और गणपति मन्त्र की १ माला संपन्न करे , इसके बाद शुक्र का ध्यान निम्न मन्त्र से करे. और इस ध्यान मन्त्र को ५ बार उच्चारित करना है.

हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं ब्रहस्पतिम्.

सर्वशास्त्र प्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्..

इसके बाद उस यंत्र को जल से स्नान करवा ले और अक्षत की ढेरी पर स्थापित कर उसका अक्षत,चन्दन की धूपबत्ती, घृत दीप, पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करे.पूजन करते हुए

ॐ शुं शुक्राय नमः अक्षत समर्पयामी ,

ॐ शुं शुक्राय नमः पुष्पं समर्पयामी , धूपं समर्पयामी .....

आदि कहते हुए पूजन करे. तत्पश्चात निम्न मन्त्र की ५१ माला जप करे और ये क्रम १४ दिनों तक करना है जिस्सके साधना में पूर्ण सफलता की प्राप्ति हो और सभी लाभ मिल सके.

मन्त्र- ॐ स्त्रीम् श्रीं शुक्राय नमः

और प्रतिदिन जप के बाद मन्त्र के अंत में **'स्वाहा'** लगाकर उपरोक्त मन्त्र के द्वारा सफ़ेद चन्दन बुरे की २१

son….Sadgurudev smiled at me…

After this incident, I performed this act and gets benefits from the same….After so many years at Kamakhya Peeth co-incidentally I met Shivmesh Brother at the house of Kalidutt ji Sharma….& I saw his face was gleaming with the success…..and he told me that after reaching back from the Sadgurudev place, he performed all the devotion and in the first time he was able to feel the great and divine experience of Maa Lalitamba and apart from this he was able to accomplish all the other devotions for which he was trying for so many years…He also demonstrated me many divine acts….I am explaining the ritual which Sadgurudev has told for the devotion….

Essential Things – White Mat with white clothes (white dhoti for men devotee and white saree for women devotee), fully active and complete accomplished Shukra Yantra carved either on the copper or silver foil, White Hakik Mala,Ghee,Deepak,White flowers(Jasmine – best option),Kheer,etc…

Process – Early morning after taking bath, put white clothes and sit in the Agneya (South-East)direction facing towards it, can also face in east direction…Put the silk cloth on the stand and keeps rice heap and establish Shukra Yantra on it…Take holy water in palms and pray to the Sadgurudev and Lord Ganesh for the success of the devotion…Afterwards, accomplish 4 Malas of Guru Mantra and 1 Mala of Ganpati Mantra….After this,medidate by assuming Shukra image by the following mantra and this dhyan mantra needs to be enchanted 7 times –

“Himkund Mranalabham Daityanaam Param

आहुतियाँ डाले , ये नित्य प्रति का कर्म है ,जिसे १४ दिनों तक करना ही है ,इसके पश्चात जप पुनः एक माला गुरु मन्त्र की करके जप समर्पण कर आसन से उठ जाये.

अपने २४ वर्षों के साधनात्मक जीवन में मैं हजारों गुरुभाइयों और साधकों से मिला हूँ और उनमे से बहुतेरे को मैंने इन्ही समस्या से पीड़ित पाया है . और इसी कारण मैं सदगुरुदेव से प्रार्थना कर उस अद्वित्यीय साधना को आप सभी के समक्ष रखा है ये विधान अभी तक गुप्त रखा गया था. यदि आप इसे अपनाएंगे तो यकीन मानिये आपको कदापि निराश नहीं होना पड़ेगा. अब मर्जी आपकी है.

Brahaspatim…

Sarvshastra Pravaktaram Bhargavam Pranamamyaham”…

हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं ब्रहस्पतिम्.

सर्वशास्त्र प्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्…

After this, wash the Yantra and again establish it on the rice heap and perform Pooja with Akshat,Chandan Dhoopbatti,Ghee,Deepak,Pushp and sweet offerings and enchant the following mantra while pooja –

“Om Shum Shukraye Namah; Akshat Samarpayami

Om Shum Shukraye Namah; Pushpam Samarpayami, Dhoopam Samarpayami”

ॐ शुं शुक्राय नमः अक्षत समर्पयामी ,

ॐ शुं शुक्राय नमः पुष्पं समर्पयामी , धूपं समर्पयामी …..

Also, follow the below mantra with this Pooja –

Om Streem Shreem Shukraye Namah

ॐ स्त्रीम् श्रीं शुक्राय नमः

Follow this whole process for 14 days to accomplish success in this pooja and to get all the benefits…

Daily after the pooja put "Swaha" in the mantra – and give 21 Ahutis of White Chandan Powder….This is the practice of daily basis which needs to be conducted for continuous 14 days…After this, conduct one mala of Guru Mantra and offer whole pooja to the Sadgurudev and gets up from the pooja…

In my 24 years of devotional life, I have met many of the Guru bhai and devotees and have mound many of them suffering from this problem…and for this reason, I have present this divine devotional act in front of you all which was kept hidden till the time….and if you all will adapt this, trust me you will be never dismayed….Now, the choice is yours…

Dhoomra Vigyan Tantra Rahasy

१०८ विज्ञानं में से एक दुर्लभ गोपनीय विज्ञानं के कुछ अनछुए पृष्ठ

In front of me there was Ashok, my cousin brother, was on the bed struggling for his life, will he survive or not? From his childhood he used to take all type of drugs in the company of sadhu and sanyashi without ever thought that it might leads to him at the door of death. Rear chances that he could survive now, unspeakable on the moment, I just asked him why? He anyhow gathered the strength replied me only that brother does not involve in this circle and this dhroom secret spoil my life.	मेरे सामने ही लेटा हुआ था अशोक, जो की रिश्ते में मेरा चचेरा भाई लगता हैं , मरणासन्न. पता नहीं जीवित भी रहेगा की नहीं. बचपन से ही साधुओ और सन्याशीओ के मध्य में उसने बिना कुछ सोच विचार किये नशीले पदार्थो का दम लगाना शुरू कर दिया था. और यह लत उसे ले डूबी ओर ले आई उसे मौत के मुख तक. शायद ही उसका बच पाना संभव हो. में कुछ बोल नहीं पाया बस पूछा की की क्यों? तो उसने जेसे तेसे मुझे इतना कहा की भाई इन चक्करों में मत पड़ना न ही किसीको पड़ने देना, इस रहस्य - धूम्र ने बर्बाद कर दिया मुझे. देखके तरस आ रहा था मुझे उस पर, जीवन उसने बर्बाद किया ही था लेकिन देखा देखि में. अगर गांजा या चरस का सेवन करने से ही कोई

listening his word i was very sorry for him, he spoiled his valuable life ,just taking that very lightl, he never thought that if by just taking the drugs like ganaja and charas one may become the siddha than all the raods will be floded with sucha siddhas, drug taker are not the siddha. the world of siddha is very different one, where each process have definite purpose and meaning , if we follow any ritual than we are just expoiling ourself , due to such elements who are taking the name of tantra do fulfill their selfish deeds, no process of tantra is bad actually they are the way to reach ultimate goal not for tofulfill persons greeds. writing this i remembered the incedent..

सिद्ध बन जाता तो आज गली कुचे सिद्धो से ही भरे होते. नशा करने वाले सिद्ध नहीं होते. सिद्धो का संसार ही कुछ और हैं जहा पर कोई भी प्रक्रिया एक विशेष उद्देश्य के साथ होती हे, बिना कुछ सोचे समझे हम उनका अनुसरण करते हे और बर्बादी को अपनी तरफ मोड लेते हे. और ऐसे ही कुछ स्वार्थीओ के कारण पुरे तंत्र को भय से देखा जाता हे. कोई भी प्रक्रिया गलत नहीं होती जब वह मोक्ष का रास्ता हे भोग का नहीं. और यु ही बैठेबैठे याद आ गयी मुझे वो घटनाये...

Radiant faces, black hakeek and rudraksh rosary in his neck, deep reddish eyes with well built body, the person sitting with me in the room, in mysterious atmosphere, there was the none other than Tantrik PATRA, who have established various feats in tantra, I just checked and found it

तेजस्वी मुखमंडल, गले में काले हकीक और रुद्राक्ष की माला, गठीला शरीर, कुमकुम के सामान लाल आँखे, उस कमरे के रहस्यमय वातावरण में मेरे सामने बेठा हुआ ये वही व्यक्ति था जिसने तंत्र के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये थे. तांत्रिक पात्रा. घडी पर नजर डाली रात में १ बजे का समय हो गया था, वह अपने जीवन की दास्ताँ मुझे सुना रहा था, बीच बीच में धुए से कस लगाये जा रहा था, "मेरे फूफा जो की एक भयंकर तांत्रिक थे, उन्होंने वाम मार्गी पद्दति से खेचरी सिद्ध की थी, जिससे वह खटिया या पुरे पेड़ को अपने साथ उड़ा ले जाते" उसकी चमत्कृत कर देने वाली बाते कोई सुने तो सदा ही अविश्वास ही आए, लेकिन कुछ ही क्षणों में वो कुछ ऐसी चीज़े दिखा देता था की सामने वाला व्यक्ति नतमस्तक हो जाए.

साथ ही थे तांत्रिक पात्रा के शिष्य अविनाश जी ,रात की नीरवता में हम तीनो बाते कर रहे थे ,तंत्र जगत के रहस्यों की और अज्ञात तंत्रों की, जड़ता दूर करने के लिए अविनाश जी एक सिगरेट निकाली और धीरे

was1 Am at night, telling his life story and in between them smoking too.

"My phupha(uncle) is a fearful/dangerous tantraik thorough vaam margi process he achived the siddhita in khechrai process. Through that he can fly with bed or even the whole tree." His miraculous talks hardly earned believe from the surrounding person but within minite he shows something that everyone bows down to him.

In that deepening night we were accompanied by avinash ji, tantraik patra jis disciple were sitting there, talks were oriented towards tantra 's secrets and very confidential process. To remove the boredom avinash ji just lighted the cigarettes and take one or two kash , than "why to waste that smoke/ dhroom" patra ji shouted to him. He replied "who can destroy the droom /smoke," he instructed either to put out that cigarettes or give it that to him. He took the cigarettes in his hand wait for two minutes and move that in air and again give that back to avinnash ji, again avinash ji lighted that and have a kash, now the world has changed for avinash ji, later he understand that the tobacco of that

धीरे धुए को अपने अन्दर खीचने लगा, तभी उन्होंने एक दम लगाते हुए कहा की क्यों बर्बाद कर रहे हो धुए को ? उन्होंने कहा कहा पात्राजी धुए को कौन बर्बाद कर सकता हे. उसने कहा उसे बुझा दो या फिर मुझे दे दो, अविनाश जी ने वो सिगरेट उसे देदी, उसने आँखे बंद की और दो बार उस सिगरेट को हवा में घुमाया, फिर अविनाश को देदी, अब जब अविनाश जी ने कश लगाया तो एक अलग ही दुनिया थी, शुरू में समझ तो आया की यह तम्बाकू अब गांजा जेसी कोई चीज़ बन गयी हैं लेकिन उसके बाद की अनुभूति गज़ब की थी.

अविनाश जी ने बाद में कहा :

धीरे धीरे मेरा मन विचार शून्य हो गया, और आँखे बंद की तो बोध हुआ की जगत में हमारी गति ही क्या हे, सब तो उस ब्रम्ह के हाथ में हैं , वही जो कार्य करवाता हे उसे हम पाप या पुण्य मान लेने का बोध करते हैं , पर जब स्वयं में ब्रम्ह हैं और वह सदेव हर घटना में निहित ही हैं तो फिर क्या पाप और क्या पुण्य.... " उनको भूल, उनको चुन, जोगी अवधूत को पाप न पुन " आँखे खोली तो जेसे में निर्मल हो चुका था,मेरा दुनिया देखने के नजरिया ही बदला था. बस कुछ ही क्षणों की बात थी, मगर, सब कमाल तो उस धूम्र का ही था. मुझे आश्चर्य होना चाहिए था लेकिन उस समय मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ न ही कोई और भाव आया.

फिर खोज में लग गया की आखिर धूम्र ही क्यों? हविष्य को देवताओ तक पहोचाना धूम्र के माध्यम से ही संभव हैं. क्या खास बात हे इसमे जो एक क्षण में किसी को जीवन मुक्त करने की कबेलियत रखता हैं.

cigarettes changed to any ganaja like drugs, but the feeling was totally different.

Avinash ji later told me:

slowly slowly my mind became thought less,when i closed mine eyes ,found that in the whole universe where are we? everything is in his hand,whatever he do though us,we could foolish understand bad or good. when he is everywhere and in everywhere than what is punya or paap......""unko bhool,unko chun,jogi avdhoot ko pap na punah" means forget that ,selcet that, oh hey jogi for you never a sin can touch.when i opend mine eyes, i felt like i born agin, my attitide towards the world has changed, this only happens only in a second,but miracles has been done by that dhroom/smoke. i felt something amaze but at that time that feeling was even absent.

Later I searched why dhroom only. The havishya (food for god through yagya) is also reached to gods through dhroom /smoke. What that dhroom, has the power that in a second that can free a person.

सर्व जड़ का सत्व सार धूम्र ही हैं. जो शेष हे, जो अंतिम हैं, जो मुक्त हैं, जो स्थूल हैं तो सूक्ष्म भी, सभी में द्रश्यमान हैं तो अद्रश्य भी, जो साश्वत हैं ,हैं लेकिन अस्तित्व प्रकट करने पर ही दीखता हैं, वही हैं "धूम्र" .

सबसे पहले मैं ने जाना की आखिर चिल्लम या चुंगी जो कि नागा, नाथ अघोर सम्प्रदाय के मध्य प्रचलित हैं उसका क्या रहस्य हैं एक उच्च कोटि के अघोरी से जानने को मिला की " यह अति जटिल एवं गोपनीय क्रिया हैं जिसमे शिव और शक्ति का संयोग किया जाता हैं . विशेष मंत्रोचार से और विविध मुद्रा के माध्यम से जब चिल्लम सुलगाई जाती हैं तब उसमे योगिनी का आवाहन किया जाता हैं, और उसके सत्व को खिंचा जाता हैं, योगिनी का सत्व रज हैं जो की शक्ति का स्वरुप हैं. शरीर में रहे वीर्य को जो की शिव का स्वरुप हैं उसे शरीर में ही संगृहीत कर वायुवान बनाया जाता हैं.

जब इस शिव बीज और शक्ति बीज का आपस में वायु स्वरुप में ही संयोग कराया जाता हैं तो साधक सहस्त्रार भेदन कर लेता हैं ." इसमे भी अनेको भेद हैं जिसमे चिल्लम का चुनाव, जर्दा, उसे पीने के लिए मुद्राए, आसन, नाद और साफी जेसे अनेको भेद रहे हैं जिसे सिर्फ सिद्ध हस्त गुरु ही समझा सकता हैं. उदाहरण के लिए शाक्त मार्ग में दीक्षित साधको को कुण्डलिनी जागरण के लिए सुबह सिद्धासन में बेठ के दर्भासन पे अनामिका मुद्रा से लाल साफी से, शुद्ध किये हुए वछनाग का वनस्पति के संयोगो से जर्दा बना कर उसका सेवन कराया जाता हैं.

The essence of every stationery things in this world is dhroom. The remaining , is the end, is the free, that which is sthool and sooksham too.
Visible in all and invisible too. That is eternal but when take form visible than known as “dhroom”

इसी तरह अघोर और वाम मार्गी साधक अघोर प्याला का निर्माण करते हैं जिसमे स्वयं का मल एवं मूत्र भी होता हैं जिसे सुखा के श्मशान के मध्य में श्मशान भस्म के आसन पर क्रोध मुद्रा में मध्य रात्रि में, काली साफी का उपयोग करके सेवन करने से आसन सिद्धि एवं भूतकाल ज्ञान सिद्धि होती हैं इसी तरह के अनेको भेद हैं जो की गुरु गम्य हैं और ये भेद पाना आसानी से संभव नहीं हैं. बाकि तो नशा कर के अपने आपको बर्बाद ही करते हैं.

in the beginning I was willing to know what is the secret of chillam or chungi mostly available in naga, aghor or nath sect. through a highly accomplished aghor sadhu I was able to know that “ this is very complex process through that shiv and shakti unite to one, though various mudra and mantra when chillam lighted up than aawahan of yogini is possible in that. The yoginis satv tatv has been attracted through that, this satv tatv is raj of her,is a form of shakti. And the veerya tatv, come to contact through the special process than through this body gets stored the essence in it , and body get highly energies.

पारद विज्ञानं के क्षेत्र में पांच प्रकार के वेध हैं लेप वेध जिसमे वनस्पति और खनिजों को पदार्थ पर लेप करके उसे वेध किया जाता हैं शब्द वेध जिसमे मांत्रिक प्रक्रिया और विशेष मुद्राओ से धातुओ को वेध करके परावर्तित किया जाता हैं, क्षेप वेध, जिसके माध्यम से तैयार किये रसायन को ही वेधित करके उसे धातु परावर्तित किया जाता हैं, कुंत वेध जिसमे तैयार किये गए रसायन की मात्रा उससे कई गुना ज्यादा मात्रा में वेध करती हैं,
और धूम्र वेध, जिसमे मात्र धूम्र के सहयोग से ही वेध किया जाता हे. इन पांच वेध में सबसे उत्तम धूम्रवेध कहा गया हैं. इसी तरह रसायन में, सोमल को शुद्ध कर उसे विशेष तरीके से चिल्लम पीने से शरीर में आतंरिक वेधन होता हे और योगी निर्जरा अवस्था को प्राप्त कर लेता हैं, कह ने की जरुरत नहीं हैं की यही धुए से अगर किसी हलकी धातु पर फूंक लगादी जाय तो वह स्वर्ण में परावर्तित हो जाती हैं.

When this shiv beej and shakti beej get united in air form , than sadhak ‘s shashtradhar get bhedit means sahstradhar bhedan Is possible. This process is very complex and own very hidden ways like the selection of chillam, tobacco, mudrayen , aasan, naad and safi . These all can be only taught by a competent master/guru.

कई विशेष उग्र साधनाओ खास करके भैरव साधना में

For example the sadhak belongs to shakat mat, if want to have kundalini jagaran has been asked to sit in siddhasan and in darbhasan using anamika mudra, with red safi , have to take a tobacco purified by using vachchanag , has been made,

Like that the sadhak belongs to Aghor and vaam narg sects makes a aghor pot in that have self stool and urine too, after fully dried in shamshan, at the night hour, on asan of ashes available shamshan through krodh mudra and with the help of black safi if consumed than the siddhi of aasan siddhi and bhut kaal kaal can be easily get. There are several such a various differences / process available but all are can be only get through a competent master. Getting that process is very difficult, others are just destroying themselves doing whatever they like taking the name of tatrik process..

There are five type of vedh mentioned in ras granth means granth related to parad field first one is lep vedha- through that, using various herbs and minerals a paste is made and vedh process can be done. second is the shabd vedh – through

जो की षट्कर्म से सबंधित होती हैं , गुरु द्वारा निर्देश होने पर कई बार साधक को धुए का सेवन करने से सिद्धता जल्द प्राप्त होती हैं क्योंकि धूम्र भैरव को प्रिय हैं और साधना के मध्य में भैरव का शरीर में निवास रहता हैं . लेकिन एसा कोई कोई विशेष साधना में ही विधान हैं. १०८ विज्ञानं में भी धूम्र विज्ञान का समावेश होता हैं जिससे धूम्र के माध्यम से पदार्थो का निर्माण करना, परिवर्तन करना या फिर सिर्फ धूम्र की सहायता से अष्ट सिद्धि प्राप्त कर लेना आदि सहज संभव हैं, मगर ये विज्ञान जरुर दुर्लभ हैं.

सदगुरुदेव को इस विज्ञान का भी पूर्ण रूप से ज्ञान हैं और उन्होंने अपने कई सन्याशी शिष्यों को इसमे पूर्ण निपूर्ण किया हैं.धूम्र के देवता सदाशिव धुम्रेश्वर स्वरुप में हैं. धूम्र के बारे में जितना लिखा जाए उतना कम हैं. मगर तंत्र में एसे अनगिनत रहस्य छूपे हुए हैं जिन्हें सिर्फ गुरु कृपा के माध्यम से ही जाना जा सकता हैं. बाकि तो व्यर्थ में नसे में आदि होके अपने अस्तित्व को समाप्त करने की मूर्खता करते हैं और कुछ अपने आपको महान कहने वाले साधू और तांत्रिक कुछ पैसे ठीकरो के लिए अपने ग्राहक शिष्यों को उलटी सीधी पट्टी पढ़ाके उनका जीवन नशे में बर्बाद करने से ज़रा भी कतराते नहीं.

using various mantra and mudras the vedhan process can be completed. Third is kshep vedh – through that a specially prepared chemical substance has been used to be converted metals / or vedhit. The forth one kunt vedha- in that the chemical substance prepared has been /are able to convert much more quantity compare to it. The fifth one is dhroom vedh- though dhroom /smoke this metallic transmutation can be completed successfully. The best one among the five vedha is dhroom vedh. Like that in rasayan kshetra- smoking of somal prepared/purified under special process than the internal vedha is possible. And the concerned yogi achieved the nirjara state (the ever youthful body). Needless to mention that, if a bit amount of this smoke is capable of converting cheap metals into gold as soon as it comes in contact with smoke. in the Mantra sadhana which are directly related to shatkaram , if sadhak uses the dhroom as instructed or guided by his guru than success is early. Since lord bhairav likes dhroom and in sadhana kaal bhairav reside in sadhak body itself.	

Is there any science through that this science one amongst the 108 science, getting asht siddhi through dhroom vigyan is also possible? But this Scence is very rear. Sadgurudev ji has full and complete knowledge of this sciences and he made some of the sanyasi shishya component in regards of this science. Lord of the dhroom, is in the form “dhomershwar” what ever be writing here about dhroom ,is very very less ,comparing to there are many thousand of mysteries belonging to dhroom tantra .and here are they the saints or sadhus who title them self as mahan /great sadhu and for to get some money they taught wrong to his disciple and ruins their life.	

Beej Mantra Rahasy

बीज मंत्रो से मंत्र सिद्धि

बीज मंत्रो के प्रकार और उनकी शक्ति से परिचित करता लेख

In the beginning there was a word alone , so whole universe is coming out of that word. Except god everything has a beginning and end, and for beginning there must be some seed required. And the what would be out come , totally depend upon what Is inside a seed. So word or seed definitely has some weight to carry or you can understand everything is depend upon that . what is mantra have you ever thought that is just a combination of some beej mantra and other helping words also.

जीवन के प्रारंभ में में केवल शब्द था .. ओर सारा विश्व इस शब्दसे ही उत्पन्न हुआ हैं . सिर्फ इश्वर के अलावा हर चेज का अदि ओर अंत हैं , किसी भी नए निर्माण के लिए बीज होना जरुरी हैं और क्या ओर किस प्रकार का निर्माण होगा ये तो पूरी तरह से बीज कि क्षमता ,गुण वत्ता पर ही निर्भर हैं इसलिए इस बीज या शब्द को समझना ही होगा ये तो मानना ही पड़ेगा की हर वस्तु (जीवित या निर्जीव) सभी के मूल में इस बीज की सत्ता हैं ही . मंत्र क्या हैं कभी आपने सोचा ? कुछ बीज मन्त्रों के साथ सहयोगी शब्दों से बना समूह ही तो हैं.फिर से जानना चाहूँगा की की क्यों इतने बीज मंत्रो की सहायता से एक मंत्र का निर्माण होता हैं .

इन बीज मन्त्रों को समझने से पहले यह समझना जरुरी हैं की आखिर ये बीजमंत्र हैं क्या ? वास्तव में

and I gain ask you have you ever notices that why so many beej mantra is added to make mantra.

But before understanding the beej mantra , the question arises what is beej mantra. Actual they are the special holiest sound representing in writing combination of letter. Like hreem pronouncing as reem and in that remember h is silent through for writing is write like hreem , like that so many beej mantra..

How many beej mantra do you know? everyone raise hand ,but if I ask you what is rama beej?, which is vadhu (new bed) beej?, what is maya beej? , like that if I go on and on may be some of us have little problem to answer that .so first we try to understand that .taking some...

1. Maya beej mantra – hreem
2. Kaam beej mantra – kleem
3. Rama beej mantra – shreem
4. Vadhu beej mantra – streem
5. Krodh beej mantra – hooum.
6. Shrsti beej mantra - ayeem
7. Taar beej mantra – om

अत्यंत पवित्र ब्रह्माण्ड में गुजते हुए शब्दों का लेखन अक्षर के माध्यम से ही हैं उदहारण के लिए " ह्रीं" का उच्चारण hreem किया जाता हैं पर इसमें "h " का उच्चारण नहीं किया जाता हैं . हाँ लेखन की दृष्टी से लिखा "hreem " ही जायेगा .इसी तरह से अनेकों बीज मंत्र के साथ क्रिया हैं .

आप कितने बीजमंत्रों को जानते हैं ? हम में से सभी हाँथ उठाने के लिए मानो तैयार ही बैठे हैं , पर यदि आपसे पूछ्र की "रमा बीज " क्या हैं ? "वधु बीज" क्या हैं ?"माया बीज " क्या हैं ? इसी तरह से पूछता जाऊ तो थोडासा तो समस्या सभी को उत्तर देने में आयेगी ही . चलिए कुछ के उत्तर हम देखते हैं .

1. माया बीज -ह्रीं
2. काम बीज -क्लीं
3. राम बीज - श्रीं
4. वधु बीज - स्त्री
5. क्रोध बीज - हुं
6. श्रृष्टि बीज --ऍं
7. तार बीज - ॐ
8. कूर्च बीज - हुं
9. काम कला बीज -ई
10. अग्नि सुंदरी बीज मंत्र -स्वाहा

इसी तरह हम सामान्यतः कुछ बीज मन्त्रों को जो किसी भी देवी/देवता से सम्बंधित हैं . इसी प्रकार हैं

1. भगवती माँ बल्गा मुखी बीज मंत्र - ह्लीं
2. भगवती माँ तारा बीज मंत्र -स्त्री
3. कामख्या बीज मंत्र -त्रीम
4. महालक्ष्मी बीज मंत्र - स्त्री
5. सरस्वती बीजमंत्र - ऍं
6. भगवान हनुमान बीजमंत्र - हुं
7. महाकाली बीज मंत्र - क्रीं
8. भैरव बीजमं -भ्रं
9. गणेश बीज मंत्र – गं

इसी तरह के कई ओर भी बीज मन्त्र हैं ,यहाँ में इस

8. Kurch beej mantra - hum
9. Kaam kala beej mantra - e
10. Agni sundari beej mantra – swaha

Like that we generally know some of the beej mantra related to daity.. like that

1. Bhagvati ma Balgamukhi beej mantra – hleem
2. Bhagvati ma Tara beej mantra – shtreem
3. Kamakhaya beej mantra - treem
4. Malakshami beej mantra – shreem
5. Sarasswati beej mantra - ayem
6. Bhagvaan hanuman beej mantra – hum
7. Mahakali beej mantra – kreem.
8. Bhairav beej mantra - bhram
9. Ganesh beej mantra _ gam

There are many more to list , here I pointed out that beej mantra

बात से अवगत कराना चाहूँगा , विशेष कर जो बीज मंत्र "ह" से प्रारंभ होते हैं जिस तरह से ह्रौं , ,ह्रें आदि आदि , इनमें " ह" का उच्चारण नही किया जाता हैं , पर बीज मंत्र "ह्लीं" में "ह" का उच्चारण किया जाता हैं ., और इस तरह से जब तक आपको बीजमंत्रो का सही उच्चारण ठीक से उच्चरित करना नहीं आयेगा , तब तक मन्त्र अपनी शक्ति कैसे प्रदर्शित करेगा .

इसी तरह के कुछ बीज मंत्र हैं जो एक से ज्यादा एक ही प्रकार के या बिभिन्न बीज मंत्रो के योग से बने बने हैं उन्हें भी बीज मन्त्रों की श्रेणी में ही रखा गया हैं . जैसे " " या "त्रीम त्रीम त्रीम ".

आखिर सामान्य सांसारिक भाषा में इन बीज मन्त्रों का क्या अर्थ हैं .यहाँ पर में परमहंस स्वामी विशुद्धानंद जी के शब्द उच्चारित करना चाहूँगा "कि ब्रह्मा ,विष्णु , महेश की भी सामर्थ्य नहीं हैं कीं बीज मंत्रो की शक्ति या इनके पीछे की शक्ति का वर्णन कर सके " ठीक इसी तरह सदगुरुदेव जी ने "नवार्ण मंत्र साधना " ओर अलाहाबाद शिविरमें कहा था -" सारे विश्व का निर्माण केवल त्रि गुणा त्मक शक्तियों - महाकाली , महालक्ष्मी , महासरस्वती से बना हैं , यदि कोई इन तीन बीज मंत्रो को पूर्णता के साथ सफलता के साथ पूर्ण सिद्धित्ता प्राप्त कर लेता हैं तो उसके लिए इस संसार मेंकुछ भी असंभव नहीं रह जाता हैं ."

अधिकांश महा साधक जैसे कि परमहंस निगमानंद जी महाराज और अन्य ने भी जीवन के प्राम्भिक काल में सिद्धता इन बीज मंत्रो के माध्यम से ही पाए थी , हम में से कौन निगमानंद जी महाराज कि प्रारंभिक कष्ट ओर संघर्ष से अवगत न होगा जो उन्होंने सही तरीके से तारा बीजमंत्र कि प्रक्रिया सिखने के लिए लगभग सारे भारत कि यात्रा ही कर डाली थी .और अंत में परम योगी वामा ख़ेपा (राम पुर हाट पश्चिम बंगाल) ने उन्हें अपनाया ओर इस ओर सही मार्ग दर्शन किया . इस बारेमें कुछ कहना चाहूँगा कि यहाँ बीजमंत्रों से मेरा तात्पर्य मात्र हमेशा एक अक्षर से ही नहीं हैं बल्कि जो भी गुरुदेव द्वारा निर्देशित हो , जो मन्त्र उनके द्वारा दिया जाये , जो भी प्रक्रिया बतलाई जाये , उसमें ही आपको सफलता मिलेगी ,न कि आप भी किसी भी साधक कि

specially started with h has should take some care , mantra like hroum ,hreem, hren, hraoum ets have h silent but beej mantra alike hleem have ha has to speak here in that this "h" is not silent .without understanding the pronunciation how will mantra will have power.

There are some mantra which is made by combination of either two same beej mantra or different beej mantra also come into the category of beej mantra. Like on "kreem kreem kreem" and "trieem treem treem" etc.

What is worldly meaning carries by these beej mantra , here I would like to write the word says our great Parahansa swami Vishuddhanand ji that . *" even brahma and Vishnu and mahesh not having the power to define the power carries and behind by these beej mantra*. " like the same way Sadgurudev ji says in "Navararn mantra" audio castes and also in Allhahad shivire held at minto park s " *the whole universe is made by or have tri- Gunatmak shakti means Mahakali Mahalakshami and Mahasaraswati and even if anyone have siddihta in these three beej mantra completely and successfully alone*

कॉपी करके ठीक वैसे ही बन जायेंगे , क्योंकि उस साधक ने उस प्रकार से सफलता पाई थी. हां हाँ आप भी सफल हो सकते हैं और उनसे भी अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं पर ये तभी संभव होगा जब गुरुदेव से आप निर्देशित हो , उनकी आज्ञा पालन करें .

सारी साधना जगत कि यात्रा उन दिव्य चरण कमलों से प्रारभ होती हैं और अंत में उन्ही के श्री चरणों में अंत होती हैं पर बिना यात्रा किये ये कहना कि , हमें सब ज्ञात हैं ,हमारी यात्रा पूर्ण हुए . मात्र अपने आप को छल करना हैं ही , इसके सिवा कुछ नहीं .

कई बार अपने कुछ बीज मन्त्रों को मंत्र के प्रारभ में पाते हैं पर वे ही बीज मन्त्र, मंत्र के अंत में विपरीत क्रम से लगे हुए पाते हैं तो इस प्रकार इसलिए होता हैं जिससे मंत्र कि शक्तियों में प्रवर्धन होता हैं , मन्त्र शक्तिशाली होता हैं . वह हमारे लिए उपयोगित हो सके .इन मन्त्रों कि रचना मंत्र पूत महयोगियों के द्वारा होती हैं जो ब्रम्हांड कि ध्वनि के ज्ञाता ओर उनका किस प्रकार से उपयोग किया जाये कि वह हमारे लक्ष्य /इच्छा पूर्ति कर सके .

कितना जप इन बीजमंत्रो का किया जाये जिससे कि इनमें सिद्धता पायी जा सके ?.

शाश्त्रोंमें वर्णित हैं कि जितने अक्षर जिस मंत्र में होते हैं उतने ही लाख मन्त्र जप किया जाने चाहिए , तो इस हिसाब से तो काफी कम समय लगेगा इन बीजमंत्रो कि साधना में .

आखिर बीजमंत्रो कि साधना करे ही क्यों ?

आप ही सोचिये कि कौन सा तरीका उत्तम होगा , सारे पेड़ के पत्ते पर पानी डालना या फिर जड़ में ही पानी डालना .

क्या हमें इन बीज मन्त्रों कि साधना में भी साधना काल के नियम का पालन करना पड़ेगा ?

nothing is impossible for him in this world.

Many great sadhak like Paramhansa swami Nigamanandji maharaj and others too have siddhita in earlier part in their sadhana life, through beej mantra, who can forget his(swami Nigamanandji) quest and struggle for to get the proper way to do the jap of ma tara beej mantra for that he traveled almost whole india , later Param yogi Vama Khepa a sadhak of ma tara resideds at Rampur hat at west bangal. accepted him and provide the direction for that, here I would like to mentioned that , beej mantra that means always not the single letter's mantra it is depend upon your Gurudev to decide how and when and which type a particular sadhana can be done under a proper guidance can only bring fruit, not to make just copy of other thinking that iof he has this way get siddhita than why not you, yes you can have but that too be followed word by word direction of your Gurudev.

The whole sadhana world journey start from his divine lotus feet and later comes to end on that divine lotus feet . but without the journey saying that yes I am realized, is just

क्यों नहीं जो भी नियम एक साधना के होते हैं जैसे उचित निर्देशित धोती पहिन ना , निर्देशित माला , ओर इस बीज से सम्बंधित यंत्र भी मिलजाए तो , क्या यह वरदान नहीं होगा.

क्या इनका जप सीधे ही ऐसे किया जाये या फिर ॐ का उच्चारण आगे पीछे किया जाये .?

एक उच्चस्तरीय सन्यासी गुरु भाई ने मुझे बताया था कि यदि आगे पीछे यदि ॐ का उच्चारण किया जाये तो ज्यादा उचित होगा . क्या ये ज्यादा उचित नहीं होगा कि जोधपुर में गुरुदेव त्रिमूर्ति से सपर्क जिस भी बीज मंत्र में रूचि हैं उससे सम्बंधित दीक्षा प्राप्त कर उनके निर्देशन में साधना यदि कि जाये , ओर फिर वे ॐ के साथ या बिना ॐ के साथ जप करना हैंजैसा बताये , आप उनके निर्देश का ही पालन करें. तभी सफलता आपके पास होगी .

a fooling to yourself.

Sometime you have seen that beej mantra added in the beginning and the reverse order at the end of mantra through thses beej mantra ,mantra get fortified and useful for us and the mantra is constructed by the great mantra poot yogis, who understand the cosmic sound and their proper application to fulfill the aim.

How much mantra jap is necessary for to have siddhita in beej mantra ?

As you all aware of the fact that to have siddhita in any mantra, you have to chant as much as lakhs of mantra as the total letter in any particular mantra, so is not very easy to have siddhita in beej mantra compare to complete mantra.

Again question raise why to go for beej mantra? ,

so again whatis best way to help to grow a tree instead of giving water to each and every leves , it would be better to applying to root of that.here beej is the root of the mantra.

Do we have to follow rules in beej mantra sadhana?

You have to follow all the instruction as applicable in any sadhana also applicable in this too. Like wearing appropriate cloth and if having the beejmantr's yantra and rosary can be obtained than. Its like boon.

Again a question is raise how to chant then simply beej or some more letter is need to add like om ,before and end of beej mantra?,

one highly accomplished sanyasi guru bhai is advised me that use om and before after that beej mantra and chant that. and it would be much better if any body is in interested in that beej mantra contact guru dev Trimurti and prior Diksha for that must be taken as per their advice and agya and chanting should be with om or without om should be done as per their instruction .

11 Durlabh Adbhut Tantra Prayog

सदगुरुदेव से प्राप्त ११ दुर्लभ तंत्र प्रयोग जो हमारी धरोहर हैं, अब भी कोई कहे ....

Torn clothes, tangled hair and his dress was strange and I was feeling very uncomfortable with him, but it was Bengali Maa's order for me that I have to live with him because he has compiled many granths about different sadhnaas produced by SADGURUDEV himself and I need to share his experience as well. When I listened that he has such a great collection of books about sadhnaas I reached Mughalsarai station via Kaali Kho (Vindhyachal) and sat in the train of Jabalpur.

All the way I was thinking whatever

फटे कपडे, बिखरे और उलझे बाल , अजीब सी ही वेशभूषा थी उनकी और बहुत असहज सा महसूस कर रहा था मैं उनके साथ , पर बंगाली माँ का आदेश था मेरे लिए की मुझे उनके साथ रहना है और सदगुरुदेव के द्वारा प्रदत्त विभिन्न साधनाओं का जो संकलन और अनुभव उन्होंने प्राप्त किया है वो मुझे उनके सानिध्य लाभ से लेना है. उनके पास ऐसा संकलन है ऐसा सुनकर मैं काली खोह (विन्ध्याचल) से मुगलसराय स्टेशन पहुंचकर जबलपुर जाने वाली ट्रेन में बैठ गया .

रास्तेभर जो भी माँ ने उनके बारे में बताया था वही सब सोचता रहा , जबलपुर पहुच कर पहले बाज्नापीठ जाकर भैरव के दर्शन किये और फिर माँ नर्मदा के तट की और चल पड़ा. जबलपुर मेरा इसके पहले भी कई बार जाना हो चूका था. और आश्चर्य की बात ये है की हर बार एक नवीन रहस्य ही मेरे सामने खुलते जाता साधना

Maa had told about him and after reaching at Jabalpur firstly I took the blessing of BHAIRAV at BAJNAMATH and then walked towards the banks of Narmada. I had come many times in Jabalpur and every time I came to know a new secret about sadhnaas.

This city was full of SIDDHS does not matter they belong to Jain Tantra, Muslim or Shaaber Tantra. There was a time when all the tantric procedures done here was matchless but with time SIDDHS and their tantric process became/turned secret. Bhai Arvind, Hasadbakhs, Jeevan Laal, Manikaa Nath, Avdhooti Maa was known to me but now I am going to meet a new gurubhai Paritosh Banerji.

In 1993 when shivir arranged on Chaitra Navraatri's had completed I directly went to Bengali Maa in Vindhyachal for my sadhnaas and it was summer season so weather was hot, hot and just hot. In that shiver GURUDEV gave me knowledge about a new fact," to complete SHAAKT SADHNAS you need to go Vindhyachal and remember in SHAAKT SADHNA acquire deep knowledge of SWER TANTRA by this very soon you will get success in the field of sadhnaa because when process of breathing (SHWAS PRASHWAS) is going on chanting (JAP) of every SHAKTI MANTRA is good because at that time MANTRA PURUSH remain conscious and during the middle of RIGHT breathing(DAAYE SHWAS PRASHWAS)

जगत का.

एक से एक सिद्धों से भरा हुआ शहर , चाहे वो जैन तंत्र से सम्बंधित हो या फिर मुस्लिम या शाबर तंत्र से सम्बंधित , किसी ज़माने में यहाँ की जाने वाली तांत्रिक क्रियाओं का कोई जवाब नहीं होता था पर समय के साथ साथ ये सिद्ध और इनकी परम्पराएँ गुप्त सी ही हो गयी थी. भाई अरविन्द, हसदबक्स , जीवन लाल , मणिका नाथ , अवधूती माँ और अब एक नए गुरुभाई पारितोष बनर्जी से मुलाकात होने जा रही थी.

सन १९९३ की बात है चैत्र नवरात्री का शिविर संपन्न होने के बाद मैं अपनी साधनाओं के लिए सीधे विन्ध्याचल बंगाली माँ के पास चला गया था और तबसे से गर्मी, गर्मी और गर्मी.उस शिविर में ही गुरुदेव ने एक नवीन तथ्य का मुझे ज्ञान दिया था की **"तुम शाक्त साधनाओं को संपन्न करने के लिए विन्ध्याचल चले जाओ और ध्यान रखो की शाक्त साधनाओं के स्वर तंत्र का गहन अभ्यास करना,उससे साधनाओं में शीघ्र ही सफलता मिलती है क्योंकि बाये स्वर द्वारा जब श्वास प्रश्वास की क्रिया चल रही हो तभी शक्ति मन्त्रों का जप उचित होता है क्योंकि मन्त्र पुरुष तब चैतन्य होता है और दाये श्वास प्रश्वास की क्रिया के मध्य शक्ति सुप्त रहती है परन्तु और बेहतर होता है की जिस भी मंत्र का जप किया जा रहा हो उस मन्त्र के पहले और बाद में "ईं" बीज जो की कामकला बीज है लगाकर जप करने से भगवती शक्ति की निद्रा भंग हो जाती है" इसी तथ्य को ध्यान में रख कर अपनी साधनाएं मैंने पूरी की.**

वहाँ से जब जबलपुर पंहुचा था तब मई का मध्य आ गया था और मई की गर्मी जैसे दिमाग को फोड ही डालती , सूरज सिर को जैसे पिघलाने को ही आतुर था, बोतल का पानी भी खत्म होने वाला था पर जैसे तैसे जी कड़ा कर मैं लगातार चलते ही जा रहा था . मुझे माँ ने बताया था की तुम्हे सरस्वती घाट से नीचे उतर कर बस सीधे हाथ की तरफ नाक की सीध में चले जाना. लगभग ३ किलोमीटर के अंदर ही शमशान से लगी हुयी उनकी झोपडी है .

पर मैं उन्हें पहचानूँगा कैसे –मैंने माँ से पूछा था.

तुम उसे नहीं बल्कि वो तुझे पहचान लेगा-माँ ने कहा .

बस इसी शब्द के सहारे मैं चलता चला जा रहा था ,

power remain sleeping but chanting becomes more better if word "EEM" used at starting and ending on the mantra which is being chanted. This "EEM" beej is Kaamkala beej and by using it at starting and ending of JAP MANTRA sleeping of BAGHWATI SHAKTI get disturbed" by keeping all these in my mind I completed my sadhnaas.

From there when I reached at Jabalpur it was mid of May and hot sun rays were dying to melting me and water in the bottle was about to finish but by making my heart bold continuously I was walking on. Maa has told me that by stepping down from SARASWATI GHAAT I have to go straight on right side. Within the range of 3 kilometers nearby at SHAMSHAAN his hut was there.

But how I will recognize him-I asked Maa.

It's not you but he will recognize you-Maa replied.

Keeping these words in my memory I was going on and Narmada ji's water which flows at such speed that gives birth to fog (dhuaan) but just 2 kilometer away from that place at here SARASWATI GHAT its water was running with slow and sound tides. In such a bone melting hotness by seeing its water the satisfaction I felt, I cannot express in words. At first I took bath, changed clothes and start walking side by side of river. Suddenly someone call

नर्मदा जी की धाराओं में जो गति धुआँधार में रहती है उससे कही ज्यादा सौम्यता बस उससे २ कि.मी. आगे इस सरस्वती घाट से लगकर बह रही उनकी धाराओं में थी. तपती दोपहरी में जो सुकून मुझे जल को बहते देखकर हो रहा था वो शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है. सबसे पहले मैंने जी भर कर नहाया ,वस्त्र बदले और आगे बढ़ता चलागया नदी के किनारे किनारे ही. अचानक किसी ने मेरे नाम को पुकारा .... मैंने रुक कर देखा एक मध्यम कद काठी का गौर वर्णीय व्यक्ति मुझे हाथ हिलाकर आवाज़ दे रहा था. मैं उस और बढ़ गया.

जब मैं उनके नजदीक पंहुचा तो उन्होंने 'जय गुरुदेव' कहकर मेरा अभिवादन किया , मैंने भी उत्तर दिया तो उन्होंने मुझे साथ चलने के लिए कहा, बाकी सब तो ठीक था पर उनकी वेश भूषा से मुझे बड़ी कोफ़्त हो रही थी, खैर जैसे तैसे उनके घर तक पहुचे, कच्चा मकान जिसमे मात्र दो कमरे थे , एक कमरा रसोई और बैठक के काम आता था और दूसरे में बहुत सारे हस्तलिखित ग्रन्थ,खरल,मृग चर्म आसन,बाजोट,बाजोट पर करीने से रखे विविध यंत्र तथा पूर्ण तेजस्वी तथा भव्य सदगुरुदेव का चित्र उस कमरे को भव्य ही बना रहा था.

चाहे बाहर से कितना ही छोटा दिख रहा था वो मकान पर भीतर से अजीब सा सुख लग रहा था उस घर में, उस तपते दिन में भी अजीब सी शीतलता थी वहाँ पर.

शाम हो गयी थी,पारितोष भाई अपनी मध्यान्ह साधना में व्यस्त थे और अब शाम घिर आई थी.वे साधना कक्ष से बाहर निकले और मेरे पास बैठ गए, मैं भी भोजन और नींद लेकर स्फूर्ति से भर गया था.वे मुझे लेकर नदी के तट पर चले गए जहा हम पानी में पैर लटका कर बैठ गए और बहुत देर तक चुप रहने के बाद मैंने उनसे उनके बारे में पूछा तो, उन्होंने कहा-" सन १९८२ में मेरी सदगुरुदेव से मुलाकात हुयी थी तब मैं अपने ननिहाल मिदनापुर (बंगाल) गया हुआ था, नाना जी कि तंत्र में बहुत रूचि थी और उन्होंने सदगुरुदेव से दीक्षा लेकर विविध साधनाएं भी संपन्न कि थी. बंगाली होने के नाते स्वभावगत हम सभी माँ आदि शक्ति कि पूजा करते थे, मेरा रुझान माँ काली कि साधनाओं में कही ज्यादा था , मैं घंटो नाना जी के पास बैठ कर उनकी साधनाओं के अनुभव को सुना करता था.वे भी अपने अनुभव बताते और कई चमत्कार भी दिखलाते. क्या मैं भी ऐसा कर पाउँगा-मैंने नाना जी से पूछा. बिलकुल कर

my name...I stopped and saw a man of middle height with fair complexion was calling me by waving his hand. I stepped forward at that direction.

When I reached closed he welcomed me by saying" JAI GURUDEV", I replied the same and he said to me to come with him. Everything was all right but I was irritating by his dress, but at last we reached at their house, it was mud house with two rooms, one room was used as kitchen and drawing room and other room was filled with many hand written granths, kharal, Mrig Charmasan, Bajot, on the Bajot arranged different types of Yantra and majestic picture of SADGURUDEV was making this room more majestic.

From outside though this house was looked strange but from inside I was feeling a different type of comfort and on that hot day it was cooling inwardly.

It was evening and Paritosh Bhai was busy in his MADHYANAH SADHNA and when it was about to dark he came out from his sadhnaa kaksh and sat by me. I too was feeling fresh after having food and sleep. He took me to the river bank where we sat down having our legs in water and after a long silence I asked him about his life and he said," in 1982 when I was in my granny's house(nanihaal) at Midnapur(Bengal) first time I met with SADGURUDEV. My Nana ji had great interest in Tantra and he took DEEKSHA from SADGURUDEV and had completed many sadhnaas. As

पाओगे, पर तंत्र का रास्ता इतना सहज नहीं है, तलवार कि धार पर चलने से भी ज्यादा खतरनाक है पर,ये बहुत आसान हो जाता है यदि कोई समर्थ गुरु आपको अपना ले तो. तब मेरी जिज्ञासा और रुझान को देखकर उन्होंने मुझे सदगुरुदेव से मिलवाया और उनसे दीक्षा देने कि प्रार्थना की.सदगुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी और फिर मैं उनके निर्देशानुसार साधनाएं करने लगा, समय के साथ साथ साधनाओं को गति भी मिलने लगी. सफलता असफलता दोनों को पूरे मन से स्वीकार करता था मैं . ये देखकर एक बार सदगुरुदेव जब जबलपुर आये तब,उन्होंने मुझे अपने हाथ से लिखी हुयी एक तीन मोटी मोटी डायरी दी. जिसमे उन्होंने विविध प्रकार के तांत्रिक प्रयोग लिखे थे, बस उन्ही डायरी के आधार पर मैं साधनाएं संपन्न करने लगा और विविध प्रकार की सफलता भी मैंने पाई."

रात होते होते ही हम वापिस लौट आये. रास्ते में उन्होंने बताया की वे जीवन यापन के लिए बैंक में जॉब करते हैं. और उनका स्थायी निवास गोरखपुर(जबलपुर) में है , पर वो अपनी साधनाओं की वजह से विगत कई वर्षों से यहाँ पर रह रहे हैं. और मैं हमेशा ऐसा नहीं रहता हूँ- उन्होंने अपने स्वरुप की तरफ इंगित करते हुए कहा और हँसने लगे.

मैं अभी कोई अघोर क्रम कर रहा हूँ इसलिए ऐसी वेशभूषा हो गयी है, इसके लिए मैंने ३ महीने की बैंक से छुट्टी भी ली हुयी है.

रात में उन्होंने अपनी प्रेत शक्तियों की मदद से मेरा मनपसंद भोजन बुलवाया.

क्या आपको भय नहीं लगता?

किससे-उन्होंने पूछा .

इन भूत प्रेतों से ...

क्यूँ लगेगा भला, ये तो अत्यधिक निरापद होते हैं.और सदगुरुदेव ने इनको सिद्ध करने की इतनी सहज विधियाँ बताई हुयी है की सामान्य व्यक्ति भी भली भांति अपना जीवन यापन करते हुए इनको सिद्ध कर सकता है. रात को उन्होंने कालिका चेटक का प्रयोग कर स्वर्ण का निर्माण कर के दिखाया , पारद विज्ञानं के माध्यम से रत्नों का निर्माण कैसे होता है ये समझाया. उच्छिष्ट

we are Bengalis so it's in our nature to pray MAA AADI SHAKTI, my whole attention was in MAA KAALI's sadhnaa and by sitting with nana ji I regularly heard his experiences about his sadhnaas for hour and hour. He too shared his experiences and also showed some chamatkaars. I asked from nana ji- can I do the same. He replied yes you can but tantra field is not a bed of roses but it becomes easy if one gets an able guru. After seeing my curiosity he took me to SADGURUDEV and requests him to give me DEEKSHA. SADGURUDEV gave me DEEKSHA and than according to his direction I started sadhnaas and with time it came into action. I accept success and failure with an equal heart. After seeing all that once when SADGURUDEV came to Jabalpur he gave me three heavy-heavy diaries which were full of with different types of TANTRIK PARYOGS. After that I completed my sadhnaas based on that diaries and get success."

When it gets dark we came back and in the way he told me that for his earnings he does job in a bank. His permanent residency is in Gorakhpur (Jabalpur)but from many years he is living here for his sadhnaas and I do not remain the same he pointed at his dress and start laughing-

I am doing some AGHOR KRAM that's why I am on three months leave from my bank.

At night by his PRET POWERS he

गणपति प्रयोग के द्वारा वशीकरण की अत्यधिक सरल क्रिया बताई. रोगमुक्ति, बगलामुखी साधना द्वारा शत्रु स्तम्भन का सरल मगर तीव्र प्रभावकारी प्रयोग,शमशान चैतान्यीकरण प्रयोग , दीप स्तम्भन का विधान समझाया, किन मन्त्रों से तंत्र प्रयोग दूर किया जाता है उसकी मूलभूत क्रिया समझाई. पूर्वजन्म दर्शन की गोपनीय क्रिया बताई. व्यापार वृद्धि के एक से बढ़कर एक प्रयोग प्रायोगिक रूप से करके दिखाया और इन सभी साधनाओं का आधार उन डायरियों को मुझे देखने और नोट करने के लिए दिया, वे डायरियां १९६३,६५,६८ और ७३ की थी मैंने लगभग ४६८ प्रयोगों को उनमे से २२ दिनों में लिखा. बाद में भी कई बार मैं उनके पास गया और उन्होंने उदारतापूर्वक उन क्रियाओं और साधनाओं को मुझे समझाया भी और लिखने भी दिया

एक से बढ़कर एक प्रयोग थे वे सभी,बाद में मैंने उनमे से बहुत से प्रयोग और साधनाएं संपन्न की तथा पूरी तरह सफलता भी पाई. जब इस अंक का विचार आया था तो हम सभी अपनी साधनाओं के लिए ६४ योगनी मंदिर में मिले थे तब मैंने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने मुझे कहा की अब वो प्रयोग तुम्हारे अपने हैं तुम उन्हें निश्चित ही अन्य गुरुभाइयों और बहनों के साधनात्मक जीवन को आगे बढ़ाने के लिए देने के लिए स्वतंत्र हो. आज उन्ही प्रयोगों और साधनाओं में से ११ प्रयोग मैं इस महा विशेषांक में आगे के पृष्ठों में दे रहा हूँ . मैंने यंत्रों का आवरण पूजन और प्राण प्रतिष्ठा विधान वगैरह नहीं दिया है क्यूंकि हमारे गुरुधाम जोधपुर और दिल्ली में परम पूज्य गुरुत्रिमूर्ती की साधना शक्ति से युक्त ये सभी यंत्र पूर्ण चैतन्यता के साथ मिल जाते हैं तो फिर जटिलताओं को देने से साधना पक्ष कठिन ही होता. क्यूंकि हर यंत्र के लिए अलग अलग प्रतिष्ठा विधान होता है जो बेहद जटिल भी हैं. ये सभी प्रयोग मेरे अनुभूत हैं और मैंने इनका प्रभाव अपने जीवन में करके देखा है. और मैं आशा करता हूँ की आप सभी भी एक बार अवश्य इन प्रयोगों को अपनी आवश्यकता या सामर्थ्यानुसार अवश्य करेंगे और सामर्थ्यवान बनकर सदगुरुदेव, परम पूज्य गुरु त्रिमूर्ति तथा सिद्धाश्रम साधक परिवार के गौरव को बढ़ाएंगे.

arranged my favorite food.

Don't you have any fear?

From whom-he asked

These ghosts and phantoms (bhoot preat)...

Why I get feared from them as they are very obedient (Nirapadd) and SADGURUDEV has told such an easy process that an ordinary man can get them sidh while carry on his normal life. At night by using KAALIKA CHEATAK he produces gold and by PAARD VIGYAAN he dictates me how to produce rubies (rattan). With the help of UCHSHHITT GANPATI PARYOG he told me very easy process for VASHIKARAN, ROGMUKTI, an easy but very effective process of BAGLA MUKHI SADHNAA to destroy enemy, SHAMSHAAN CHAITANYIKARAN Paryog, Process of DEEP SATAMBHAN. He also told me about the Mantra by which effect of Tantra can finish, to see past life he told me its secret process, he told me many ways to flourish business and moreover he gave me that diaries which are the base of all these paryog and allowed me to get them noted.

Those entire practicals were unique of their kind and after that out of them I almost completed every paryogs and sadhnaas and got success as well. When I thought about this section of magazine we all met in 64 YOGINI MANDIR for our sadhnaas and when I

discussed with them about it they said now these practical and sadhnaas are you own and you are completely free to give them for other guru Bhai and bahen(spiritual community) so that their spiritual life can go further. Today out of from those paryogs and sadhnaas I am giving 11paryogs in the next pages of this MAHA VISHESHANK. I am not giving the process of Aawran Poojan and Praan Pratisthaa of Yaantraas because in our Gurudham Jodhpur and Delhi all these yantraas can be acquired in full life due to the sadhnaa shakti of PARAM PUJYA GURU MURTI .And it is useless to give tough section of sadhnaas as it divert the attention only. I have done all these practical and experienced their effects in my life. I hope that all of you will carry out these practicals in your life according to your capacity and needs and make SADGURUDEV and PARAM PUJYA GURU TRIMURTI proud on your success.

1 तीव्र उच्छिष्ट गणपति साधना

(Teevra Uchchhisht Ganpati Sadhana)

ON KRISHAN PAKSH KI ASHTAMI take root of bitter neem and make statue(pratima)of lord GANESHA equal to your thumb. During the first part(pehla pehar) of night wear red clothes and sit on red altar(aasan) facing west direction and with the unbrushed or stale mouth(JOOTHA MUH) put(sthapit) that GANESH pratima on plate in front of you and then pray in front of SADGURUDEV for his blessing and then make your resolution and after that offer Laal chandan(RED SANDAL), akshatt(RICE), pushp(FLOWERS) to LORD GANESHA and then with the rosary of Laal Chandan(RED SANDAL) do MANTRA JAP five times and remember you need not to fresh you mouth(arthaat muh jootha hi hona chahiye). Continue the process for seven days and on eighth day means on AMAAVASYAA with five dry fruits (PANCH MEWA) offer 500 aahuties. With this MANTRA get SIDHH and then you can do many usages of it and two usages are given here-

-1- The person to whom you want to attract or hypnotize establish(sthapit)SIDHH LORD GANESHA pratima on his or her

कड़वे नीम की जड़ से कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन अंगूठे के बराबर की गणेश की प्रतिमा बनाकर रात्रि के प्रथम प्रहर में स्वयं लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर पश्चिम मुख होकर झूठे मुँह से सामने थाली में प्रतिमा को स्थापित कर साधना में सफलता की सदगुरुदेव से प्रार्थना कर संकल्प करें और ततपश्चात गणपति का ध्यान कर उनका पूजन लाल चन्दन,अक्षत,पुष्प के द्वारा पूजन करे और लाल चन्दन की ही माला से झूठे मुँह से ही ५ माला मन्त्र जप करें. सात दिनों तक ऐसे ही पूजन करे और आठवे दिन अर्थात अमावस्या को पञ्च मेवे से ५०० आहुतियाँ करें इससे मंत्र सिद्ध हो जाता है. तब आप इनके विविध प्रयोगों को कर सकते हैं. २ प्रयोग नीचे दिए गए हैं.

जिस व्यक्ति का आकर्षण करना हो चाहे वो आपका बॉस हो, सहकर्मी हो, प्रेमी,प्रेमिका या फिर कोई मित्र या शत्रु हो जिससे, आपको अपना काम करवाना हो.उसके फोटो पर इस सिद्ध प्रतिमा का स्थापन कर ३ दिनों तक १ माला मन्त्र जप करने से निश्चय ही उसका आकर्षण होता है.

अन्न के ऊपर इस सिद्ध प्रतिमा का स्थापन कर ११ दिनों तक नित्य ३ माला मंत्र जप करने से वर्ष भर घर में धन धान्य का भंडार भरा रहता है और यदि इसके बाद नित्य

photograph and do MANTRA JAP for three days to get success. This person can be anyone your boss, lover, beloved, colleague, friend or enemy.

2.On grain (Ann) get this SIDHH PRATIMA establishes (sthaapan) and for 11 days everyday complete three rosary circle of MANTRA JAP. By doing this in the whole year there will be no shortage of money and food in your house and after that if you do this MANTRA JAP everyday than the results remain same forever otherwise repeat this process within 6 months or a year.

DHYAAN MANTRA-

दंताभये चक्र- वरौ दधानं कराग्रग्रम् स्वर्ण घटं त्रि-नेत्रं ,

धृताब्जयालिंगितमब्धि-पुत्र्या लक्ष्मी-गणेशं कनकाभमीडे.

Dantabhaye chakra varau dadhanam karagragram swarn-ghatam tri-netram,

Dhritabjayalingitamabdhi-putrya lakshmi ganesham kankabhmide.

मंत्र- ॐ नमो हस्ति मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने क्रां क्रीं ह्रीं घे घे उच्छिष्ठाय स्वाहा

Om namo hasti mukhaay lambodaray uchchhisht mahatmane kraam kreemhreem ghe ghe uchchhishthaay swaha.

५१ बार मंत्र को जप कर लिया जाये तो ये भंडार भरा ही रहता है. नहीं तो आपको प्रति ६ माह या वर्ष में करना चाहिए.

ध्यान मन्त्र –

दंताभये चक्र- वरौ दधानं कराग्रग्रम् स्वर्ण-घटं त्रि-नेत्रं ,

धृताब्जयालिंगितमब्धि-पुत्र्या लक्ष्मी-गणेशं कनकाभमीडे.

मंत्र- ॐ नमो हस्ति मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने क्रां क्रीं ह्रीं घे घे उच्छिष्ठाय स्वाहा.

2. निशा काली – पूर्ण गृह और परिवार की रक्षा हेतु

(Nisha Kali – For Complete Protection of Home & Family)

When it comes to the safety of family and home community nothing better we can have than this stuff.It is used Siddhiprad immediately. We make very agreeably home, build wealth, but suddenly in the home office is robbed, is fire, disasters face etc etc, and we remain with empty hands. If you want complete safety of the family, home to complete legislation that will be used by the view, you will be surprised to see its use. Macro-level national security to be done if the experiment will prove this amazing armor. This is just the application of only one night and relaxing throughout the year. I myself have used this many times. Even i did it for last the two workshop's safety and all my guru brothers witness that any kind of damage of health or life not happened infact results were amazing.

In evening make a Bhagwati Mahakali black statue of the clay and establish her and start worshipping in the night with all due instructions mentioned in 'Mahakali Sadhna " book published by Shree Sadgurudevji.The given method in texts they

परिवार की और घर की समाज की सुरक्षा की आती है तो इस प्रयोग के सामान कोई और प्रयोग है ही नहीं. ये प्रयोग तत्क्षण सिद्धिप्रद है . हम बहुत चाव से घर बनाते हैं ,संपत्ति का निर्माण करते हैं,पर अचानक घर में डाका पद जाता है, आग लग जाती है, आपदाओं का सामना करना पड़ता है आदि आदि, और हम हाथ मलते रह जाते हैं. यदि आप घर परिवार की पूर्ण सुरक्षा चाहते हैं तो पूर्ण विधान से इस प्रयोग को अवश्य करके देखे, आप इसके प्रयोग को देख कर आश्चर्यचकित रह जायेंगे. वृहद स्तर पर यदि इस प्रयोग को किया जाये राष्ट्र सुरक्षा के लिए ये अद्भुत कवच साबित होगी. ये मात्र एक रात्रि का ही प्रयोग है और वर्ष भर की निश्चिन्तता. मैंने खुद इस प्रयोग को कई बार किया है. घर के लिए तो करता ही था , पर पिछली दो वर्क शॉप की सुरक्षा के लिए भी इस प्रयोग को मैंने किया और सभी गुरु भाई साक्षी हैं की किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य या जीवन क्षति नहीं हुयी

सायंकाल मिटटी से भगवती काली की प्रतिमा का निर्माण कर रात्री में उनका स्थापन कर 'महाकाली साधना' ग्रन्थ में दी हुयी पद्धति से उनका रात भर पूजन तथा बलिदान की क्रिया संपन्न करे और एक रात्रि में १२१ माला निम्न मन्त्र की करें तथा सूर्योदय के पहले ही उस प्रतिमा का

must conduct all night worship and sacrifice a 121 mala to the following mantra and before sunrise immersion of statue in water must be done.By doing this procedure throughout the year it provides armor to us.

At the time of worship appropriation must be done in such way :-

Om Asya shree nisha kali mantrasya dakshinaamurti rishi:, pankti: chhand, shree nisha kali devta:, hreem beejam,hreem shakti:,keelakam, gruha(kutumbam) raksharthe jape viniyogah :,

Karnyass and Shadang nyas -

Hraam Angushthabhayam Hraday Namah:

Hreem Tarjanibhyam Shirashe Swaha

Hroom Madhyamaabhayam shikhaye Vashat

Hraim Anamikabhayam Kavachay Hum

Hroum kanishthabhayam Netrataryaay Vo ushat

Hrah karatalkarprashthaabhyam Astraay Phat

Trust must carry out factor that is now part guided by the mantra Speaking associated organs should touch to -

Om Atma tatvay swahaa paadaadi nabhi paryantam

Om hreem vidyaa tatvay swahaa nabhyaadi hriday paryantam

Om hasau : shiv tatvay swahaa hridayadi mastak paryantam

जल में विसर्जन कर देने से ये प्रयोग वर्षभर के लिए कवच प्रदान कर देता है.

पूजन के समय विनियोग करे.

ॐ अस्य श्री निशा काली मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः ,पंक्तिः छन्द,श्री निशा काली देवताः,ह्रीं बीजं,ह्रीं शक्तिः, कीलकं, गृह(कुटुंब) रक्षार्थे जपे विनियोगः .

करन्यास एवं षडंग न्यास -

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां हृदाय नमः

ह्रीं तर्जनीभ्यां शिरषे स्वाहा

ह्रूम् मध्यमाभ्यां शिखायै वषट्

ह्रैं अनामिकाभ्यां कवचाय हुम्

ह्रौं कनिष्ठाभ्याम् नेत्रत्रयाय वौषट्

ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्

अब तत्व न्यास संपन्न करे अर्थात मन्त्र बोलते हुए सम्बंधित अंग से निर्देशित अंगों तक स्पर्श करे-

ॐ आत्म तत्वाय स्वाहा पादादि नाभि पर्यन्तं

ॐ ह्रीं विद्या तत्वाय स्वाहा नाभ्यादि हृदय पर्यन्तं

ॐ हसौः शिव तत्वाय स्वाहा हृदयादि मस्तक पर्यन्तं

ध्यान मंत्र का ११ बार उच्चारण करे –

चतुर्भुजां कृष्ण वर्णां मुंड माला विभूषिताम्,

खड्गं च दक्षिणे पाणो विभ्रतिन्दिवर द्वयं.

Attention should pronounce dhyan mantra 11 times -

chaturbhujam krushna varna mund mala vibhushitam,

Khadang ch dakshine pano vibhritindavar davayam

Katri ch kharpram chaiv kramad vamen vibhritim

Dayaam lihintim jatamekaam vibhritim shirsa davayam

Mund mala dharaam sheershe grivaayaamath chaparam

Vakshagre naag haaram ch vibhritim rakt lochanaam

Krushna vastra dharam katyaam vyaghraajin samvitaam

Vaam paadam shav hridi sansthapyay dakshinam padam

Vilapya siham prashthe tu lelihaanaasavam swayam,

Sattahaasaam mahaa ghor raav yuktaam su bheeshanaam.

Their after chant by 121 mala of the following mantra should then complete the above mentioned procedure
and accordingly pray for the blessings and success from shree Sadgurudev.

Mantra - Kreem hreem hreem

कर्त्री च खर्परम् चैव क्रमाद् वामेन विभ्रतिम्,

द्याम् लिहंतिम् जटामेकाम् विभ्रतिम् शिरसा द्वयं

मुंड माला धराम् शीर्षे ग्रिवायामथ चापरां,

वक्षाग्रे नाग हारम् च विभ्रतिम् रक्त लोचनाम्.

कृष्ण वस्त्र धरां कट्याम् व्याघ्राजिन समंविताम्,

वाम पादं शव हृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम्.

विलप्य सिंह पृष्ठे तु लेलिहानासवं स्वयं,

सट्टाहासाम् महा घोर राव युक्ताम् सु भीषणाम्.

ततपश्चात १२१ माला निम्न मन्त्र -की करे

मंत्र - और उसके बाद ऊपर बताये अनुसार पद्दति को पूर्ण कर सदगुरुदेव से आशीर्वाद और सफलता की प्रार्थना करे.

मन्त्र-

Mantra - Kreem hreem hreem

3. कालीका चेटक साधना

(Kalika Chetak Sadhana)

The type of alchemy, mercury, sun and star science discipline are the authentic ways of realization of the gold, exactly in the same way if sadhak just studiously seek mother Bhagwati Mahakali world to take this wonderful Chetka proven in some time,he can earn some gold towards the realization of her continual on daily basis.Now first of all place this Mahakali yantra and chant this mantra in front of it the first full quarter million of legislation in only 7 days,u can find the procedure of worship in book written by Sadgurudev "Mahakali Sadhana" is described in texts, worship her in the same order.Then chant the following mantra with full concentration and devotion should chant the mantra throughout 7 days a quarter million should be done, on 8th day take jasmine flowers together with melted butter, let the 1000 holocaust same mantra. **Mantra - Om kali kankali kile kile swahaa**	जिस प्रकार रसायन विद्या,पारद, सूर्य विज्ञान और तारा साधना से स्वर्ण की प्राप्ति होती है , ठीक उसी प्रकार से साधक यदि पूर्ण मनोयोग से भगवती जगत जननी महाकाली के इस अद्भुत चेटक को सिद्ध कर ले तो उसे नित्य प्रति कुछ मात्र में स्वर्ण की प्राप्ति होती है . इस मंत्र को पहले महाकाली यन्त्र के सामने पूर्ण विधान से सवा लाख की मात्र में ७ दिनों में जप कर ले, पूजन का विधान आप सदगुरुदेव द्वारा लिखित “महाकाली साधना” ग्रन्थ में वर्णित है, आप उसी क्रम से पूजन करले और फिर आप निम्न मंत्र का जप पूर्ण एकाग्रता के साथ करे जिससे ७ दिनों में सवा लाख मन्त्र पूरे हो जाये, ८ वे दिन चमेली के फूलों को घृत मिलकर १००० आहुति इसी मन्त्र से दें. **मन्त्र- ॐ काली कंकाली किलेकिले स्वाहा.**

4. हाजरात प्रत्यक्षीकरण प्रयोग

(Hajraat Pratykshikaran Prayog)

After moon rises on Friday after a quarter pound of barley flour which an effigy of Bnoan called Hajrat.These actions can perform out of d town or village may be held by visiting a shrine. Take a water full container having a tap in it and wash ur your hands, feet in the water, mouth wash and rap up the apron and chekks inner or a kurta can be wear.If the asan's and shirt color is green the it would be better.Then spread perfume heena and offer sweets.Then be seated in heroic posture or take a same posture as a muslim prayer does at the time of reading namaz facing towards west direction and the lock the directions.Then establish the Hajrat infront of u, first read Hajrat Derud decent for 101 times

Allah Humma Salle Ala Saiyadano Maulana Mauhdiv Bareeik vasallm Salato Salamoka ya Rasulallah Salallaho tala Alaiah vasallam .

Then the following mantra should be chanted with 11 rosary mala hakik one and this order other than a Friday to Friday, the statue is suppose to be the

शुक्रवार को चाँद निकलने के बाद जौ के सवा किलो आटे से एक पुतला बनाओं जिसे की हाजरात कहा जाता है, ये क्रिया शहर या गाँव के बाहर किसी मजार पर जाकर संपन्न की जा सकती है. टोंटीदार लोटे में पानी अपने साथ लेजाकर अपने हाथ पाँव,मुह धो ले और लुंगी तथा जाली दर बनियान या कुरता धारण करे रहे , यदि हरा आसान और वस्त्र हो तो ज्यादा बेहतर रहता है .उस मजार पर हिने का इत्र और मिठाई चढ़ा दे और आसन पर वीर आसन की या नमाज पढ़ने की मुद्रा पश्चिम दिशा की और मुह करके बैठ जाये और दिशा बंधन कर अपने सामने हाजरात को स्थापित कर सबसे पहले १०१ बार दरूद शरीफ पढ़े.

अल्लाह हुम्मा सल्ले अला सैयदना मौलाना मुहदिव बारीक़ वसल्लम सलातो सलामोका या रसूलअल्लाह सल्ललाहो ताला अलैह वसल्लम.

इसके बाद निम्न मन्त्र की हकीक माला से ११ माला करे और ये क्रम एक शुक्रवार से दुसरे शुक्रवार तक करना है,पुतला वही रहेगा जिस पर आपने पहले दिन साधना की है.ऐसा करने से हाजरात प्रत्यक्ष हो जाता है तब उससे तीन बार वचन लेकर उसे जाने को कह देना और जब भी जरुरत हो उसे बुलाकर कोई भी उचित कार्य करवाया जा सकता है. कमजोर दिल वाले साधक इस साधना को ना करे और करने के

same on which the first day you have performed.Doing in same way the Hajrat directly appears before u then take three times prmise frm him and then let him go.Then call him when it is required, by calling him any appropriate action can be made. The spiritual seeker should not the weak hearted and definitely take the first master's orders. **Mantras - Ya Yayyyal Alau Innee Kalkia Ilallaya Kitabun Karim** **Ernn Uananuhu min Sulemana Minn Hu bismilllahhirrahamanirraheem**	पहले गुरु की आज्ञा अवश्य ले लें. **मंत्र- या यैययल अलऊ इन्नी कलकिया इलैलया किताबून करीम** **ईन्न उन्नुहु मिन सुलैमाना मिन्न हु बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम**

5. अचूक विद्वेषण प्रयोग – जिसका प्रभाव कभी खाली नहीं जाता

(how to win over Enemy)

Many a times in our lives also increases the enemies would not interfere or spouse, or children are trapped in the wrong correspondingprocedure that use these displays intense effects. If only the holi's aupicious night chanting of the 7 Rosary is done facing south and the	बहुत बार हमारे जीवन में शत्रुओं का दखल ना चाहते हुए भी बढ़ जाता है या पति या पत्नी, या संतान गलत संगत में फँस जाते हैं तब ऐसे में ये विद्वेषण प्रयोग तीव्र प्रभाव दिखाता है. होली की रात्रि में यदि मात्र इसका ७ माला जप दक्षिण की और मुह करके कर लिया जाये तो ये मन्त्र पूरी तरह से सिद्ध हो जाता है,फिर जब भी आवशयकता हो सूखी हुयी ढाक

mantra gets fully proved siddh, then when need do take a dry Huyie Dack (Palass, Pkar) brought the dry stems and 108 of mudar fresh leaves following the mantra that you have perfected and so and so write their names on it between whom u want fight. And at midnight in alone take that dry stems and fire it and while firing just chant that mantra once facing south direction and just put one by one leave on which desired name is written offer it in the fire.In the mantra where amuk amuki is written just pronounce the names of those person between whom u want fight.Similarly offer all 108 leaves your desire will be accomplished if it's appropriate . Mantra - **Aak dhaak dodno bagrai,amuk amuki aise lare jas kukur-bilai.** **Aadesh guru satya naam ko.**	(पलास,पाकड़) की लकडियाँ ले आये और आक के १०८ ताजे पत्तों पर निम्न लिखित मन्त्र जिसे आपने सिद्ध किया है लिख ले और अमुक और अमुकी की जगह उन व्यक्तियों का नाम लिखे जिनके मध्य झगडा करवाना हो. और आधी रात के समय एकांत में ढाक की लकडियों को जलाकर दक्षिण मुख करके १ बार मन्त्र पढकर एक पत्ता डाल दे मन्त्र में भी नाम का उच्चारण करना है,इसी प्रकार १०८ पत्ते डाल दें,निश्चय ही आपका मनोरथ यदि उचित है तो सिद्ध हो जायेगा. **मन्त्र- आक ढाक दोनों बगराई ,अमुका अमुकी ऐसे लरे जस कुकुर-बिलाई.** **आदेश गुरु सत्य नाम को .**

6. सात्विक प्रेत वशीकरण साधना

(Saatvik Pret Vashikaran Sadhana)

Often whenever people hear ghost ghostly name they filled with a prevalent fear. So who ll say to prove them, in anyways the ways by which they can be proven are really not meant for a normal person or weak hearted person. Upon that various illusions are spreader that whosoever proves them is always troubled. Even they finished off the remaining confidence by doing such acts. But all these facts are very far from reality. Phantom Ghosts are such souls who are restless for their liberation in any way to his release by direct and indirect are willing to cooperate. They performs both type of work whether it is good or bad, right from wrong but when the seeker misuse them becomes the salvation of souls is the seeker's life is miserable. But their utilization on where you play the role of the medium to be free spirits there is protected from any harm. So present's u a harmless from any and effective method and it can be done by any seeker, Due to this sadhna only well discipline and high values of Phantom or ghosts get in your control, who remains with u like a true friend without the harming and always ready to help you.

On full moon day of take shower and keep fast for whole day with purity, only have fruits and wear red cloths, with divine and pious way just remember the ghost and phantom whole day, think that they remain with u are friendly to me to be fully cooperative, this thinking should be in your mind. In night go under the Bodhi tree, take

अक्सर भूत प्रेत का नाम सुनकर लोगो में भय व्याप्त हो जाता है उन्हें सिद्ध करने की कौन कहे,वैसे भी उन्हें सिद्ध करने की जो क्रियाएँ वर्णित होती हैं वो कम से कम सामान्य साधको और कमजोर मनोमष्तिष्क वालों के लिए तो नहीं है.ऊपर से ये भ्रान्ति की जो इन्हें सिद्ध करता है उसे ये तकलीफ दते हैं, साधक का बचा खुचा मनोबल भी समाप्त कर देते हैं.परन्तु ये सभी तथ्य वास्तविकता से कोसो दूर है. भूत प्रेत तो अपनी मुक्ति के लिए बैचेन ऐसी आत्माएं होती हैं जो किसी भी प्रकार अपनी मुक्ति चाहती हैं और परोक्ष अपरोक्ष रूप से सहयोग के लिए तत्पर होती हैं,वे सही और गलत कार्य दोनों कर सकती हैं परन्तु,जब साधक उनका दुरूपयोग करता है तो उन आत्माओं की तो मुक्ति हो जाती है पर साधक का जीवन दूभर हो जाता है. लेकिन उनका सदुपयोग करने पर आप जहाँ उन आत्माओं को मुक्त होने में माध्यम की भूमिका निभाते हो वहाँ किसी भी प्रकार हानि से भी सुरक्षित रहते हो.प्रस्तुत पद्धति किसी भी प्रकार से हानि रहित और प्रभावकारी है और इसे कोई भी साधक कर सकता है ,इस साधना की वजह से सिर्फ उच्च संस्कारों वाले प्रेत या भ्होत ही आपके वश में होते हैं ,जो एक सच्चे मित्र की भांति बिना नुक्सान पहुचाए हमेशा आपकी मदद को तत्पर रहते हैं.

अमावस्या के दिन स्नान कर पूर्ण पवित्रता के साथ व्रत रखे, फलाहार करे और लाल वस्त्र धारण करें, सात्विक रूप से प्रेत का चिंतन करे, वो पूर्ण रूप से सहयोगी बन कर मेरे साथ मित्रवत रहे ,यही चिंतन आपके मन में होना चाहिए.रात्रि में पीपल वृक्ष के नीचे जाकर पीपल के पांच हरे पत्तों पर पूजा की पांच सुपारी रख कर उनमे प्रेत शक्ति का ध्यान किया जाना चाहिए , फिर लोहबान अगरबत्ती

five green leaves and keep five nuts of worship and should keep in mind the ones that phantom power, then myrrh incense sticks, black sesame and laid flowers, then keep curd rice on that leaves then sprinkle rose water on it. And their only on standing mode just do the chanting 11 rosary of black mala from the following mantra. Mantra : **Om kreem kreem sadaatmane bhutay mam rupen siddhim kuru kuru kreem kreem phat.** After chanting the mantra and pray that you bless me and remain with me as my friend, to this order, you have to do that is just for three times on moon to the moon every time. Then just after 3 moon as the divine forms appears in front of u and promise u help and for 3 years remains in the hands of the seeker	,काले तिल और फूल अर्पित करें और पीपल के पत्तों पर ही दही चावल का भोग गुलाब जल छिड़क कर लगादे और काली हकीक माला से वही खड़े खड़े ११ माला निम्न मन्त्र की करें. **मन्त्र- ॐ क्रीं क्रीं सदात्मने भूताय मम मित्र रूपेण सिद्धिम कुरु कुरु क्रीं क्रीं फट्.** और मन्त्र जप के बाद प्रार्थना करे की आप मेरी रक्षा करे और मेरी मित्र रूप में सहायता करे , ये क्रम मात्र ३ अमावस्या तक आप को करना है अर्थात प्रत्येक अमावस्या को को मात्र ३ बार ऐसा करना है.३ अमावस्या को सद् रूप में भूत आपके सामने आकार आपकी सहायता का वचन देता है.और ३ वर्ष तक साधक के वश में रहता है.

7. रतिपति गन्धर्व साधना

(RatiPati Gandharva Sadhana)

In sadhna world we didn't get much detail on gandhaarv sadhna, With the blessings of Sadgurudev I received apparently varios Gandharvs containing various strengths of the discipline .From that I got complete pleasure in household discipline the sadhna called Ratipati Gandharv sadhna is done. Even though swami Pragyanand ji also says that if individual sperm in semen is not even the full been given to this discipline is the origin of sperm and the person who normally work for him this spiritual power greater than any deficiency does not remain thereafter.

On full moon morning worship the lord Mahamrityunjay, Ganapathy and mother's Parvati and do the chanting of Mahamrityunjay mantra 11 times. Do satisfy the Bhrahmin with the food and donate something. In night be seated on asan in the bedroom and wear that **Gandharva Mudrika** and deep ignite grease before holding pearl rosary mala and chant for 21 rosary.Do it for one full moon to second full moon should be continually chanting the following mantra 21 mala. Showing the effects of meditation takes you from day one woman or man power to complete work and children are equipped with the ability to achieve go. And it is much more than usual Rati power.

साधना क्षेत्र में गन्धर्व साधना का विवरण ज्यादा प्राप्त नहीं होता है, सदगुरुदेव के आशीर्वाद से कुछ विभिन्न शक्तियों से युक्त गंधर्वों की साधना मुझे प्राप्त हुयी थी.उनमे से पूर्ण गृहस्थ सुख के लिए रतिपति गन्धर्व की साधना की जाती है , स्वामी प्रज्ञानंद जी का तो ये भी कहना रहा है की यदि व्यक्ति के वीर्य में शुक्राणु न हो, तब भी पूर्ण निष्ठां से की गयी ये साधना शुक्राणुओं की उत्पत्ति कर देती है और सामान्य रूप से जिस व्यक्ति में काम शक्ति की न्यूनता है उसके लिए तो इस साधना से बड़ी कोई साधना ही नहीं है.

पूर्णिमा की प्रातः भगवान महामृत्युंजय का पूजन गणपति और माँ पार्वती के साथ करें तथा महामृत्युंजय मन्त्र की ११ माला भी संपन्न कर ले.ब्राम्हण को भोजन तथा दान दक्षिणा से तृप्त कर दें ,रात्रि में शयन कक्ष में ही आसन पर बैठ कर हाथ में गन्धर्व मुद्रिका धारण कर सामने घृत दीप प्रज्वलित कर मोतियों की माला से २१ माला मंत्र जप संपन्न करें. एक पूर्णिमा से दूसरी पूर्णिमा तक नित्य निम्न मंत्र का २१ माला जप होना चाहिए. साधना का प्रभाव तो पहले दिन से ही दिखने लग जाता है स्त्री या पुरुष पूर्ण काम शक्ति और संतान प्राप्ति की क्षमता से युक्त होते जाते हैं. और ये रति शक्ति सामान्य से बहुत अधिक होती है.

मन्त्र- ॐ गन्धर्व रतिपति रतिबलम् कुरु ॐ.

Mantra : **Om Gandharva ratipati ratibalam kuru om**.	

8. गुरु प्रत्यक्ष दर्शन साधना
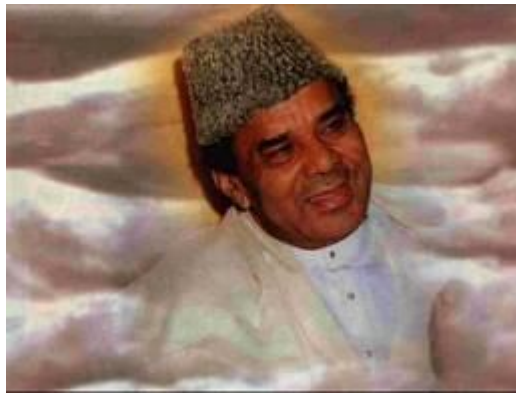
(Guru Pratyaksh Darshan Sadhana)

If the seeker wants to get direct vision and philosophy of his master to get their continuous guidance to the effect of this meditation is wonderful miracle, the Guru Mantra Mantras of the quarter million by the discipline to carry out the ritual to be done, then of course, success get. On a blank pious space establish the **Guru yantra** and **Guru pratyaksha darshan siddhi yantra** and pray to achieve success in meditation with this resolution and start the daily meditation method given by Sadgurudev's texts provided the whole procedure to carry out worship of Guru mantra chanting mala to 11 The following day, according mantra chanting spells to be done following the 2 months, 9 million mantras happens, then of course the master has the benefit of Views and get their continuous guidance is in	यदि साधक को अपने गुरु के दर्शन करने हो और उनका सतत मार्गदर्शन प्राप्त करना हो तब इस साधना का प्रभाव अद्भुत चमत्कारी रहता है , यदि गुरु मन्त्र के सवा लाख मन्त्रों का अनुष्ठान संपन्न करके इस साधना को किया जाये तो निश्चय ही सफलता मिलती है.पूर्ण निर्जन स्थान या पीठ में **गुरु यन्त्र** और **गुरु प्रत्यक्ष दर्शन सिद्धि यंत्र** स्थापित कर साधना में सफलता प्राप्त हो ऐसा संकल्प लेकर उनयंत्रों और गुरु चित्र का दैनिक साधना विधि ग्रन्थ में दिए विधान से पूजन संपन्न कर गुरु मन्त्र की ११ माला जप करने के बाद प्रतिदिन इस हिसाब से मंत्र जप निम्न मंत्र का किया जाये की २ मास में ९ लाख मन्त्र हो जाये , तो निश्चय ही गुरु के दर्शनों का लाभ होता है और उनका सतत साधनात्मक मार्गदर्शन भी प्राप्त होता रहता है. इस साधना को गुप्त रखना चाहिए अन्यथा लाभ नहीं मिल पाता है. मन्त्र- **ॐ गुं गुरुदेव हुं फट्**

sadhnatmak way. The secrecy should be maintain otherwise no benefit can be achieve Mantra : **Om gum gurudev hum phat.**	

9. मुक़दमे में विजय प्राप्ति हेतु तंत्र प्रयोग

(Prayog For - To win in litigation)

Trial system used to achieve victory in life sometimes deceitful person who take money and give back not only to the person or for no reason just assured the court the affair, whether it is honesty how many ways but lawyers from the intrigues his and his family's life becomes miserable, Therefore for getting favour in his side that the lawyers and judges mind gets divert towards him,to customize this experiment is a simply mash. If you wear blue clothes and be seated on s blue or black asan facing towards south direction in midnight and establish Chinnmsta yantra and Masters image then worship them by the full procedure and then if 21 rosary of blue beads is done with following mantra then the mantra becomes activate for him.Whenever its debate time or to go to trial hearing at court then, only 3 rosary beads run by chanting let the party is	जीवन में कई बार व्यक्ति का धन लोग छल से ले लेते हैं, और वापिस ही नहीं करते सिर्फ आश्वासन ही देते हैं या व्यक्ति अकारण ही कोर्ट कचहरी के चक्कर में फस जाता है, चाहे वो कितनी भी इमानदारी बरते परन्तु वकीलों के षड्यंत्रों से उसका व उसके परिवार का जीवन दूभर होता जाता है तब वकीलों,विपक्षियों और जज की बुद्धि अपने अनुकूल करने में इस प्रयोग का कोई सानी नहीं है , यदि नीले वस्त्र धारण कर नीले या काले आसन पर बैठकर दक्षिण मुख हो कर मध्य रात्रि में छिन्नमस्ता यंत्र को सामने रख व्यक्ति उनका और गुरु यन्त्र चित्र का पूजन पूर्ण विधान से करके और नीली हकीक माला से २१ माला निम्न मन्त्र की कर ले तो ये मन्त्र उसके लिए जाग्रत हो जाता है , और जब भी वाद विवाद के लिए या मुक़दमे के लिए जाना हो तो मात्र ३ माला जप करके चला जाये तो कार्यवाही साधक के ही पक्ष में होती है , याद रखिये जप के मध्य कोष्टक के शब्दों का उच्चारण नहीं करना है , जब प्रयोग करना है तब उस स्थान पर नाम भी जोड़कर मंत्र करना है.

in the action seeker and in his favour only. Remember not to pronounce the words between parentheses, when to use by adding the name instead of it and then spell it Mantra : **Neeli Neeli Mahaneeli(shatru/vakeel/judge's name) jeebhi taalu sarva khili,sahi khilo tatskhanay swaha**	मन्त्र- **नीली-नीली,महानीली (शत्रु/वकील/जज का नाम)** **जीभी तालू सर्व खिली ,सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा.**

10 तीव्र आकर्षण साधना –गुमशुदा व्यक्ति को बुलाने के लिए

(Teevra Akarshan Sadhana – To Attract missing Person)

To call back the missing persons I have found the effect of this particular experiment simply astonishing. And rather than mantras proving this mantra is much easier and does not have any problem, In Navratree, if the number of 10,000 mantras are done then it said to be to proven. Just place Teevra Akarshan Yantra in front of it do chanting with coral beads for 14 times on the mantra of continual 9 days to prove it is spiritual. Whether such Mantra is proved or not to test it take Binolah, yellow mustard, and mud of rats home, while mixing it do the 108 times spellbound, and a reed in the middle of the rip to two different people to be caught out strongly and read mantra spellbound mix that died on the reed. Let the cane ge joint each other added to the sense of taking has been successful. Then when a lost person to call	गुमशुदा व्यक्तियों को वापिस बुलाने के लिए मैंने इस साधना का प्रभाव बहुत अचरजकारी है. और अन्य मन्त्रों के बजाय इसे सिद्ध करने में कोई दिक्कत भी नहीं आती, नवरात्री में १०,००० की संख्या में इस मन्त्र को कर लेने से ये सिद्ध हो जाता है , सामने तीव्र आकर्षण यन्त्र रख कर मूंगा माला से इस मंत्र को १४ माला नित्य करने से ९ दिन में ये साधना सिद्ध हो जाती है. मन्त्र सिद्ध हुआ या नहीं इसका परीक्षण करने के बिनोला,पीली सरसों,तथा चूहे के बिल की मिटटी को मिला निम्न मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करे,और एक सरकंडे को बीच में से चीर कर दो अलग अलग लोगो को जोर से पकडे रहने के लिए दे दे , और मन्त्र पढ़ कर उस अभिमंत्रित मिश्रण को उस सरकंडे पर मारे .यदि सरकंडा आपस में जुड जाये तो समझ ले की

back take the lost person's picture in the middle of the night before or put clothing on him spellbound Pishte mantra recited 540 times. If the person is alive as soon as possible so of course he comes back. Mantra : **Om Namo bhagwate rudraye e drishti lekhi naahar : swaha** **Duhai kansasur ki jut-jut, furo mantra ishawaro vacha**	सफलता मिल गयी है . फिर जब भी किसी खोये हुए व्यक्ति को वापिस बुलाना हो तो मध्य रात्रि में खोये हुए व्यक्ति का चित्र अथवा वस्त्र सामने रख उस पर अभिमंत्रित पिष्टी को ५४० बार मंत्र का उच्चारण करते हुए मारे. यदि व्यक्ति जीवित है तो निश्चय ही शीघ्र अतिशीघ्र वो वापिस आ जाता है. मन्त्र- **ॐ नमो भगवते रुद्राय ए दृष्टि लेखि नाहर: स्वाहा,** **दुहाई कंसासुर की जूट-जूट ,फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा .**

11 सर्व विष हारक गरुण साधना

(Sarv Vish Haarak Garun Sadhana)

In world of sadhnas many sadhnas are performed at lonely places, When desired wishful sadhnas are accomplished then we need the help from herbs.In such situation we have to visit woods for getting such herbs and their there is afraid of reptiles like snake etc. But if the seeker do the following mantra Gharoon for 3000 times and sit in front of Parad shivlingam and do worship after that the mantra is siddh. When you enter the forest before Let chant the mantra 108 times and then blow up the wood on the ground strongly and in that way no curse of snake fear does exists. We	साधना जगत में कई साधनाए निर्जन में होती हैं, कई बार मनो वांछित साधना के लिए किसी वनस्पति की आवश्यकता होती है .ऐसे में वन में जाने पर सर्प आदि का भय होता है , परन्तु यदि साधक निम्न गरुण मन्त्र को ३००० बार पारद शिवलिंग के सामने बैठकर उनकी पूजा करने के बाद कर ले तो ये मन्त्र सिद्ध हो जाता है और जब भी वन में जाये तो प्रवेश करने के पहले इस मन्त्र को १०८ बार पढकर जमीन पर लकड़ी से आघात कर दे तो कोसो तक सर्प का भय नहीं होता

also use this mantra in our workshop. Mantra : **Om pakshiraj rajpakshi om thah: thah: thim thim yaralav om pakshi thah: thah:**	है. इस मंत्र का प्रयोग भी हमने दोनों वर्कशॉप में किया था . **मन्त्र- ॐ पक्षिराज राजपक्षि ॐ ठ: ठ: ठीम् ठीम् यरलव ॐ पक्षि ठ: ठ:**

Here, I provide the sadhana, that have very high value in my life, I did that and get positive result, I also urge you all that do once **You will azamed to see the result , if Sadgurudev ji blessing with me, than in this series many more mysterious facts revealed to you.**	ये जो भी साधनाएं यहाँ पर मैंने आप लोगो के सामने रखी है, उनका मेरे जीवन में बहुत मूल्य है. मैंने इनका प्रयोग करके देखा है और लाभ प्राप्त किया है. मैं यहीकहूँगा की आप भी एक बार जरुर करके देखे. प्रभाव देखकर आप स्वयं आश्चर्य के सागर में डूब जायेंगे. यदि सदगुरुदेव की इच्छा और आशीर्वाद रहा तो क्रमशः और भी कई नवीन और गोपनीय तथ्य फिर आपके सामने होंगे.

3 Durlabh Tantrik Prayog

३ दुर्लभ तांत्रिक प्रयोग

३ दुर्लभ तांत्रिक प्रयोग

होली के अद्वितीय अवसर पर संपन्न कर सफलता अपने भाग्य में स्वयं ही लिख ले .

होली के अद्वितीय अवसर पर संपन्न कर सफलता अपने भाग्य में स्वयं ही लिख ले .

the holi festival is not only realeted to colours only nether itis started due to the famous epic story of burning of holika , but the basic root of this festical reaches to time immorial , true itis that the festival celebrated in this forms only now the basic values are loosing its ground. but this festival actually a maha tantraik festival whatever type ofsadhana which you were not able	होली का पर्व मात्र रंग गुलाल तक ही सीमित नहीं हैं न ही ये होलिका के जलने से प्रारंभ हुआ हैं , इसकी मूल जड़े तो अर्वाचीन काल से हैं हाँ ये जरुर हैं की ये अब इसी स्वरुप से ही मनाया जाता हैं, इसके शालीनता अब कहीं खो सी रही हैं , पर ये पर्व तो महा तांत्रिक पर्व हैं जो साधना वर्ष भर किसी भी कारण से न कर पाए हो उन सभी के लिए भी उचित महूर्त हैं पर जरा सोचे सम्मोहन से लेकर धन तक हर साधना के लिए यदि यह काल होगा तो यह अद्भुत ही होगा ये पर्व. कुछ गृहों का कुछ नक्षत्रों का ऐसा संयोग

to do the reason/cause of any, can be done without any hesitation again. think about a minit if anysadhan from finance to wealth can be done even , any means any. either aghor to shamshan or saber too, this simply means definitely this days has some very special combination made from planets and stare position . and this days such avivration is developed that the gandharv and yaksh lok also vibrated, and yakshini are the ruler of tantra when they are having the vibration than this days is the tantra days .,

when this holi day is approches than our heart is full of happiness and vivration is also having happiness and joy . ifthese can be stable for the whole year than what could be more usuful. than each days be full of joy , happiness . but how this can be popossible colours will be feded within some days , but colours of sadhana will be of whole life, only if we pay attention on this , merely reading does not create the

होता हैं की सफलता मानो कदम बढ़ाये स्वयं ही आ जाती हैं ,गंधर्व ओर यक्ष लोक के लिए भी इन दिनों कुछ ऐसे तरंगे बनती हैं , क्योंकि यक्ष लोक में ही सारे तंत्र से सबंधित यक्षिणीयों का निवास हैं तो फिर तंत्र से सबंधित हर साधना ही हो सकती हैं .

जब होली का समय आया हैं तो मन में हंसी की उल्लास ही जो तरंगे बनती ही हैं उन्हें यदि सारे वर्ष के लिए यदि स्थायी करदिया जाये तो क्या हर दिन ही उल्लास मय, प्रसन्नता मय , उर्जा मय न हो जायेगा , पर ये होगा कैसे , रंग ओर गुलाल तो कुछ ही दिन में फींके पड जायेंगे पर साधना का रंग तो सारे जीवन भी चल सकता हैं .पर यदि हम साधनामय बने तो . मात्र लेख पढ़ने से क्या होगा .

इन्ही तथ्यों को ध्यान में रख कर आनेवाले होली के महा पर्व समय के लिए तीन सरल पर तीव्र प्रभाव दायक प्रयोग आपके सम्मुख रखे जा रहे हैं इन्हें पूर्ण मनोयोग से करे ओर अपने जीवन में गुरु के ज्ञान को निहित कर आत्मसात कर अपना ही नहीं सद गुरुदेव जी के गौरव को प्रवर्धित करे.

सर्व सम्मोहन प्रयोग :

सम्मोहन के शब्द से ही मन खिल जाता हैं पर

situation.

While taking care thses facts , in coming holi festival here are the three sadhana which are very easy with having most effective are being in front of you, do this very very sincerely, having faith in your Sadgurudev /gurutrimurti ji . have a sadgurudevjis divine knowledge in yourheart , do not only glorified your life but also raise the glory of sadgurudevji.

Sarva Sammohan prayog:

merely reading word sammohan , spark a rays in ourheart , butonly controlling others does not serv the purpose, throughthis prayog internal changes inside you has started and when internal changes started than how long outer changes will be stopped. means outer also get affected.

ये मात्र किसी अन्य को तो वश में करने से ही तो नहीं चलेगा, इस प्रयोग से आपके अंतर में भी परिवर्तन प्रारंभ हो जाते हैं , जब अंतर मन ही सम्मोहन युक्त हो ता जायेगा तो बाह्य पर भी तो असर दृष्टी गत होगा ही .

कैसे हमारे चेहरे में ही नहीं सम्पूर्ण जीवन में ही सम्मोहन हो जाये , तो क्या बात हैं. किस किस को वश में करने के लिए आप साधना करते जायेंगे , जीवन में पौरूषता लाये , आप सदगुरुदेव जी के शिष्य हैं यह तथा हमेशा याद रखे , तो जीवन में उन्नति के अवसर आने हो लगेंगे . पर केबल सोचने से हो तो नहीं होगा उसके लिए साधना का बल भी तो चाहिए . ओर जहाँ सदगुरुदेव जी को मन में धारण करना लिखा या बोला गया हैं वहां तो तात्पर्य केबल ओर केबल उनके द्वारा दिए गए ज्ञान को अपने शरीर के रक्त कण कण में स्थापितकरना ही हैं, मात्र जय कारा लगाने से तो कुछ नहीं होगा .

स्वयं का सिन्दूर से तिलक करके ,काली हकीक माला से या रुद्राक्ष माला या फिर कोई भी माला से निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप लाल आसन पर बैठ कर करे. यह प्रयोग होली की रात्रि में ११ बजे के बाद करे.

ॐ सर्व सम्मोहितं दुर्गाय महादेवी हूं

अगले ९ दिनों तक प्रतिदिन इस मंत्र की १ माला करके स्वयं सिन्दूर का तिलक लगाये.

how not only ourfaces but whole life completely get changed, how many times you can do the sadhan to attracts aother poeple to you , how manytimes ,instead of it would not be better that that converted your life in a way that who so ever sees you will automatically get hypnotise . have manliness in your personalty. yoy are the sadgurudev most beloved shishy, always keep this faith in your heart.and the door of opprtunity will opend to you. but merealy thinking will not serve the purpose. for that you needed a force of sadhana, and where ever the written that to have sadgurudev ji in your heart sinply means that try to have sadgurudev ji knowledge as a shandhan in your heart . merely jai gurudev will not serve the purpose. his knowledge has to be digested in our heart and soul.

apply sindur on your forehead , and through black hakeek rosary or rudraksha rosary do chant 51 times round of rosary th ebelow mentioned mantra on sitting on ared colour aasan, and do start the jap after 11 P.M. night only on holi .

यह प्रयोग से चहरे पर एक आकर्षण छा जाता हैं सर्व जन उसे सन्मान की नज़रों से देखते हैं . इस प्रयोग से भौतिक सफलता प्राप्त करने में अत्यधिक अनुकूलता रहती हैं

धन प्राप्ति प्रयोग:

आजके दिन प्रतिदिन के जीवन का धन तो आधार ही हैं अब प्राचीन काल के भिक्षाम देहि सेतो आज का जीवन नहीं चल सकता हैं, ये प्राचीन काल में भी बहुत उचित नहीं माना गया हैं , हमारे वैदिक ऋषि भी आर्थिक दृष्टी से संपन्न रहे हैं , साधक अपने जीवन धन से परिपूर्ण रहे इस हेतु तो उसे हमेशा साधना मय रहना चाहिए , क्योंकि एक प्रयोग कर लिया फिर कभी उसे दोहराना नहीं क्या साधना की दृष्टी से ही नहीं बल्कि दैनिक जीवन की दृष्टी सभी से कितना जरुरी हैं आप स्वयं ही समझ सकते हैं , क्या एकबार भोजन ग्रहण कर के बाद फिर अगले दिन भोजन की आवश्यकता नहीं पड़ेगी.

अपने सामने ही एक सुपाड़ी स्थापित कर इसे देवी का स्वरुप मानते हुए इसकी सामान्य पूजा करे. इसके बाद निम्न मंत्र से ३१ माला का जाप

om sarv sammohitim durgaay mahadevi hum.	करे **ॐ द्रव्य सिद्धिम गौ योगिनी नमः**
next 9 days do the same process continuously and daily applu sinduoor on your forehead.	मंत्र जप के बाद इसी मंत्र से १०८ बार आहुति शुद्ध घी से दे.
The resultant effect of this prayog creates such a attraction that every one sees sadhak with a respect, when this happens than the material success how far can away.	यह प्रयोग संपन्न करने पर व्यक्ति के आय के स्त्रोत खुलने लगते हे, किसी न किसी रूप में उसे सहायता मिलती हैं जिससे उसे धन सबंधित समस्याए समाप्त होने लगती हैं .
Dhanprapti parayog : In today s life finance is basic base of normal day to day living . now a days old era 's "bhiksham dehi " will not serve the purpose, even that era it is not highly considered very respectful. Our vedik sages were also financial healthy , sadhak always be financially sound for that he should always engaged in such type of sadhana understand this fact that once you did a sadhana and never try to repeat it again if get some positive result , is not a	शत्रु उच्चाटन प्रयोग: साधना जगत भी जीवन की मूल भूत आवश्यकताओं के लिए उदासीन नहीं हैं न ही वह कोई कल्पना लोक में रहने की बात करता हैं , सदगुरुदेव तो स्पस्ट करते ही रहे हैं की पहले जीवन की नीव को दृढ बनाओ फिर अपने कदम आगे बढाओ , जब नीव ही कमजोर होगी तब उस पर आधारित घर कितने झटके झेल पाएगा . उन्होंने कभी आकाश वृति या आर्थिक रूप से विपन्न रहने को कभी कहा नहीं , न ही शत्रुओं के सामने सर नीचा करने को कहा , वीर पुरुषों का ही क्षमा भूषण हो सकती हैं पर केवल क्षमा करने से आप वीर नहीं हो जायेंगे , ये तथ्य ध्यान में रखे, जीबन के छोटे छोटे से कार्यों के लिए व्यर्थ में ही गिड गिडाते रहने मानव जीवन

wise decision , think for a second that if taken food on a day that means on second day you do not need that .	का उपहास ही तो हैं .
To have a supari(betel nut) in front of you , considered that form of devi, have a small puja og it and do chant 31 round of rosary of below mentioned mantra.	अपने सामने एक हल्दी का टुकड़ा रखके उसे पर सिन्दूर का अच्छे से लेप कर दे. उसके ऊपर अपने शत्रु का नाम लिखे और हल्दी की माला से निम्न मंत्र का जाप ३१ माला रात्रि में १० बजे के बाद करे
Om dravay siddhim gou yogini namah	**ॐ ह्लीं शत्रु स्तंभन कुरु में देवी रक्षयामि नमः**
And after completing themantra do offer 108 aahuti through ghee	
Through the completing this prayog sadhak finds that the clodes door offinance agin opening up for him, and many ways he gets helps ,so his worry of financial matters starts getting down.	इस प्रयोग से शत्रु निस्तेज हो जाता हैं और भविष्य में वह कभी भी आपके लिए परेशानी खड़ी नहीं करता. देवी कृपा से साधक की सभी तरफ से रक्षा होती रहती हैं .
Shatru uchchtan prayog :	
Sadhana world also recognize the day to needs of various needs of life and had not turn away his faces towards this. Neither it recommended to live fools paradise. Sadgurudev ji's on many	

occasion clearly mentioned that first get your foundation very strong only then proceeds forward, if the foundation is week than how long you can face the challenges of the life. he never ever recommended that living penniless is sign of greatness, nor he advices us to surrender in front of our enemy, pardoned of bad person can be considered a sign of veer, but merely pardoned cannot makes you victor. Keep this in your heart and realize this. merely asking others favors to get your work done is not good sign of.

Place piece of turmeric and thoroughly covered with sindur and then write your enemy name on that and do chant 31 round of rosary though rosary made of turmeric after 10 P.M. night .

Om hleem shtru stbhan kuru

main devi r akshyami namah.

Through this prayog satru get /loose s his power to creates anymore trouble for you , and theblessingof devi sadhak is always protecting from all side.

Isht Devta And His Sadhak

ईष्ट देवता और उनके साधक
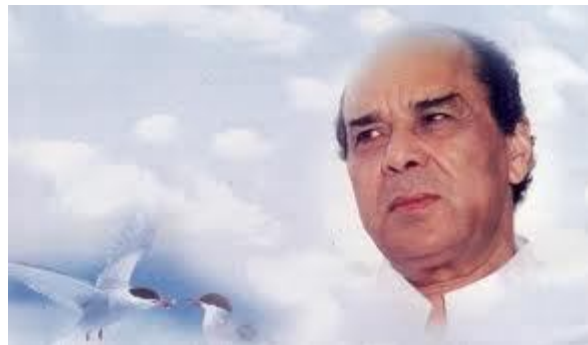
क्या अपने ईष्ट के स्वरुप जैसे ही साधक में परिवर्तन आने लगते हैं

Sadhana world has many unfold and untold secrets and without knowing that meaning of moving on this path not make good sense. so countless sadhana and same countless devta and devi are available in sadhana field . sadhak often, when read some specific writing about particular devi or devta , make his mind that this is the required devta to full filled his needs..off course worldly desire and wishes whatever you may call. Is this decision made with/ due temptation can be considered with wisdom?.

If some writing comes about ma Tara

साधना जगत में अनेकों सुलझे या अनसुलझे रहश्य हैं ओर उनको जाने /समझे बिना इस पथ पर चलते रहना कोई बुद्दिमत्ता तो नहीं कही जा सकती हैं . अनगिनित साधनाए ओर उनसे सम्बंधित अनगिनित देवी देवता से भरा ये साधना संसार ,साधक के लिए कभी कभी उसकी बुद्धि को चकरा देने वाले तथ्य बन जाते हैं . और जब भी साधक किसी भी देवी देवता के बारे में कोई विशेष तथ्य पढता हैं तो उसे लगता हैं की यही वह देवी देवता हैं जो उसकी भौतिक ओर साधनात्मक तृप्ति प्रदान कर सकने में सक्षम हैं , ओर वह उस साधना / देवता की अग्रसर हो जाता हैं पर इस तरह से लिया गया निर्णय क्या बुद्धिमत्ता युक्त कहा जा सकता हैं

यदि कोई लेख माँ भगवती तारा के बारेमें आता हैं की वह ये हैं वह वे हैं ओर वे अधिस्ठार्थी हैं इस क्षेत्र की या उस क्षेत्र की ,तो साधक गण बिना एक सेकंड भी समय गवाए ये निर्णय ले लेते हैं की की आज से चलो माँ तारा की साधना प्रारंभ करेंगे, पर जब उनकी रूचिओर आशा अनुकूल परिणाम नहीं मिलता हैं तो वे अत्यधिक परेशान हो उठते हैं ओर इस पर या उस पर आरोप

about that she is this or that and she has the ruling over this or that, sadhak without thinking a second take a decision, and when result are not coming as per his expectation then he worried more and more. usually tries to blame this or that , that he has not been guide properly. ,but who has taken the first step to go for that sadhana , is you so why to blame, have you ever tried to understand what are the specialty and peculiarity related to that devta or devi?... No than why to blame.

Yes you have taken Diksha and following the instruction as much as your per your worldly responsibly allows you than still not got the desired result than where is the problem. (in mine blog post "sadhana main saflata" I pointed some of such sadhana related problems), in this article we will move further.

I remembered while I was attending parad workshop- first , in ashram one sanyasin whom we call didi ask me ,when I was discussing with other guru brother about the devta's quality. I was telling that sadhak of maa durga always has to fight the negativity of the world and of course negativity of inside too , since what is out side is also inside ,"yatha pinde tatha brahmaand." Maa has form of a warrior so his devotee has also has the same warrior like condition in his

आरोपित करते हैं .कहते हैं की उन्हें सही तरीके से /उचित मार्गदर्शन नहीं दिया गया .पर किसने इस साधना करने की दिशा में पहला कदम बढाया था ,वह तो आप ही थे , तो अन्य को अपनी असफलता का दोष क्यों देना?क्या आपने कभी भी ये जानने की कोशिश की उस देवी देवता की क्या विशेषता हैं उनसे संबंधित क्या विशेष तथ्य हैं ? नहीं न .. तो फिर किसी अन्य को दोष क्यों देना

ये भी सत्य हैं की आपने दीक्षा भी प्राप्तकर ली हैं ओर अपने भौतिक जीवन की सामर्थ्य नुसार साधना से संबंधित सारे नियमो का भी पालन किया पर अब भी वैसा अभी भी इच्छानुसार परिणाम प्राप्त नहीं हुआ तो असफलता के मूल में क्या तथ्य हैं (ब्लॉग में दिए गए पोस्ट "साधना में सफलता " में कुछ ऐसे ही संदर्भो की चर्चा की गयी हैं , पर उनसे भी आगे यहाँ विवेचना करते हैं)

में पारद कार्यशाला -१ में एक दिन बातों बातों में चर्चा किसी देवता के विशेष गुण पर चल पड़ी , हम जिस आश्रम में रह रहे थे वहां पर एक सन्यासिन जिन्हें हम सभी दीदी कहते थे , ने उस समय पूछा जब ये कहा जा रहा था कि माँ दुर्गा के साधक को हमेशा ही विश्व कि ऋ णा त्मक शक्तियों से संघर्ष करते ही रहना पड़ता हैं फिर चाहे वह अंतर गत कि हो या बाहय गत हो , क्योंकि ये कहा भी गया हैं "यथा पिंडे तथा ब्रम्हांड " माँ एक योद्धा के स्वरुप में हैं तो उनके साधक को भी उसी तरह कि परिस्थितियों का सामना अपने जीवन में करना पड़ता हैं ही . बिना समय दिए हुए उसके सामने एक के बाद एक इस तरह कि स्थितियां आती ही रहती हैं , परये भी उतना सत्य हैं कि उसकी हार कभी नहीं हो सकती हैं वह हमेशा विजयी के रूप में ही होता हैं .उसकी हार तो संभव ही नहीं हैं , इतना सुनने के बाद उन्होंने कहा कि "भैय्या आप जो कह रहे थे वह सही हैं ", उन्होंने लगातार आपने जीवन में एक के बाद एक कठिन समस्या का सामना कर रही थी , ओरभी अभी ओर परीक्षायें उनका इंतज़ार कर रही थी , पर अब वे ,ये जानती थी कि ऐसा क्यों हैं .

साधना जगत का लक्ष्य क्या हैं यही न्ना कि साधक अपने धनात्मकता को अपने गुरु द्वारा प्रदत्त साधना ,निर्देशों का , ओर आज्ञा पालन करते हुए अपनी ऋ णा त्माकता सेकई गुना ऊपर उठाये,साधारणतः ४ लक्ष्य साधक के लिए सामने होते हैं

life, he has to fight continuously and no waiting for him , one by one more trouble some condition imposed upon him, yes it is also true that he definitely comes out of as winner , there is no loosing to him , that is sure. On listing that next day she told me bhaiyya , what you were telling Is true that she also facing a lot of trouble all around but always comes out of that with success, but some more test waited for her, now she understand why that is so.

What is the aim of sadhana or spirituality to increase your positivity over your own negativity through proper and under controlled direction of your own guru. And the four aims a sadhak has to his isht deity .

1. Salokya
2. Saropya
3. Sah yojya
4. Shreshthey nirvana

In salokya . sadhak will have the opportunity to live along with his/her ishat daity, what a joy.In second ,sadhak has the same appearance to sadhy means both are one. means having the same personality radiance. In third sadhak will have any of the kala (special quality) of his isht daity. And in nirvaan , sadhak's man(mind) finally fully absorbs .

सालोक्य

सारुप्य

सहयोज्य

श्रेष्ठ निर्वाण

सालोक्य में साधक अपने इष्ट के साथ ही रह पाने में समर्थ हो पाता हैं कितने आनंद दायक क्षण होंगे, दूसरी अवस्था में साधक का स्वरुप अपने इष्ट के सामान ही हो जाता हैं यहाँ मेरा तात्पर्य इष्ट के गुणों को आत्मसात करना हैं . तीसरी अवस्था में साधक अपने इष्ट कि किसी भी कला को धारण करने में समर्थ हो जाता हैं .ओर अंत अवस्था में साधक इष्ट के ब्रम्ह स्वरुप में ही लीन हो जाता हैं.

ये चारों अवस्थाये क्रमानुसार ही साधक के जीवन में आती हैं .प्रारंभ में साधक के मानसिक स्तर पर उसके इष्ट के सद्रश्य ही परिवर्तन दृष्टी गोचर होता हैं इस तथ्य को ध्यान में रखे क़ी जो भगवान् हनुमान के साधक हैंउनमें साधना काल समय , उनमें क्रोध क़ी भावना एक दम से बढ़ने लगती हैं ओर ऐसा किसी के साथ हो रहा हैं तो वह उसकी हनुमान साधना में प्रगति के लक्षण हैं

हाल ही में एक उग्र भैरव के साधक से मिला , जिन्होंने मुझे अपनी कालेज के दौरान क़ी साधना प्रारभ के पहले ओर सम्पूर्ण रूप से सफल होने के बाद क़ी फोटोग्राफ दिखाई , फोटो स्वयंम ही अपनी कहानी कह रही थी .उनका स्वरुप साधना काल में भैरव साद्रश्य हो गया था ,ओर क्यों न्हा ऐसा होगा क्योंकि न तो तेल ,जल के साथ ओर ,न ही जल रेत के साथ मिल सकता हैं ,जब तक आप ओर आपके इष्ट में तनिक सी भी जगह रहेगी सफलता प्राप्ति कोशों दूर हैं .

इसी तरह माँ तारा के साधक को हमेशा ,चाहे वह कोई भी काम कर कर रहे हो , क़ी यह महसूस होता रहता था क़ी उनका जीवन बस कुछ दिन का ओर शेष हैं , पर ये भावना उनमें कोई ऋ णा त्मकता नहीं लाती थी बल्कि हर समय ,समय क़ी महत्ता उन्हें पता रहती थी . एक दिन उन्हें किसी अन्य माँ तारा के अनुभव पढने को मिले उससे उन्हें पता चला क़ी ये तो माँ क़ी कृपा हैं कि वे अपने साधक को संसार क़ी आसरता से सदैव याद दिलाये रहती हैं .

isht 's brahma swarup .

Actually theses four stages comes one by one , in the beginning , sadhak mental attitude will change reflection starts coming to his isht. like *sadhak who is the worshipper Bhagvaan hanuman will have high degree of anger, and if this happening specially in the sadhana that is the sign*. so keep that in mind.

Recently I have meet sadhak of ugra bhairav he showed me his college time photograph before starting the sadhana and after completing the successfully the sadhana photo were saying the story itself his appearance changes like bhairav, why should not be that, since oil can not mix with water, or water and sand cannot mix together, so until you and your isht deity are one how can you expect success . and when both are one. Success is at your door step.

I also meet *a sadhak of ma tara who has always the feeling that his days are numbered*. no matter what he do, he has not having any problem to this type of thought, actually more joyful his personality , now he tries to live each moment, one day he read other sadhak's exp. on ma Tara that mother Tara blessing such that her sadhak never forgot the temporary existence in this mortal world .

यहाँ पर में कुछ संकेत दे रहा हूँ ,जो भी भगवान गणेश के साधक हैं वे सारे जीवन हांथो में लड्डू लिए सिहांसन में बैठे ही जीवन व्यतीत करते हैं तात्पर्य ये हैं क़ी उनका जीवन पूर्ण भौतिक सुख सुविधा से उनका जीवन परिपूर्ण रहता हैं .हम मेंसे अधिकांश साधक माँ भगवती के महाविद्या स्वरुप के उपासक हैं . इस में कोई गलती क़ी नहीं बल्कि भाग्य ओर उच्चता क़ी बात हैं ,परक्या उन्हें ये ध्यान रहता हैं क़ी ये माँ के १० सर्वोच्च स्वरुप क़ी साधना हैं . तो उनके इन महत ,सर्वोच्च स्वरुप क़ी साधना क्या इतना आसान होगी .वास्तव में माँ ही अपने साधक क़ी कड़ी परीक्षा लेती ही रहती हैं, ओर परीक्षा का की मतलब यहाँ मुझे यहाँ लिखने क़ी आवश्यकता नहीं हैं .उसमें आप ये नहीं यह कह सकते हैं क़ी मेरा भाग तो पूरा हुआ .माँ के स्नेह को प्राप्त कर पाने क़ी परीक्षा में बहुत ही कम ही ठहर पाते है. सम्पूर्ण जीवन ही उस के परीक्षा काल का रहता हैं .

यह तथ्य भी विदित रहे क़ी जो साधक बहुत जल्दी क्रोध पर अपने नियंतरण नही कर पाते हो ओर वे यदि हनुमान साधना में प्रवेश करे तो ये क्रोध समस्या ओर भी बढ़ सकती हैं जो उनके दिन प्रति दिन के जीवन में काफी परेशानी खडी कर सकती हैं .

अपने युवा काल में स्वामी विवेकानंद जी किसी गृहस्थ के घरपर ठहरे थे , जब उनके व्यक्तिव से प्रभावित हो कर गृह स्वामी ओर उनकी पत्नी ने उनसे दीक्षा देने के लिए प्रार्थना क़ी ,स्वामी जी के लगातार मना करने पर भी वे दोनों अपने निश्चय से तनिक भी डिगे नहीं .तब उन्होंने पूछा क़ी वे भगवान् के किस स्वरुप क़ी उपासनाअभी तक करते आये हैं , दोनों ने कहाँ ऐसा तो कभी किसी विशेष के लिए किया नहीं , कभी इसकी क़ी कभी उस देवता क़ी ,स्वामी जी ने हस्ते हुए कहा ऐसा कभी नहीं करते हैं , किसी विशेष देवता के तरंगो से ही साधक के तरंग मिलती हैं वही उसका इष्ट होता हैं ओर उसकी उपासना से साधक शीघ्रता से अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता हैं उसके बाद स्वामी जी ध्यानस्थ हो कर बैठे फिर उनसे जल से भरे घड़े को स्थपित करने को कहा .....

तो इस का निर्धारण तो गुरुदेव ही कर सकते हैं कि किस देवता क़ी उपासना में साधक सफल हो सकता हैं ,और किस देवता /देवी /महाविद्या साधक के लिए इष्ट या सफलता दायक हो सकती हैं , या यदि साधक क़ी रूचि , किसी विशेष देवी /देवता कि साधना करने में ही हैं तो

Here is the general indication some of the lord. *One who worship Bhagvaan ganesh , rest of the life he eats laddu and with joy. Means he will leads a life with complete comforts*. one more important that many sadhak just to became mahavidya sadhak ,nothing wrong in it actually very blissful thing in the life but keep in mind that they are the supreme most 10 form of mother divine, ***so how can you just think its so easy, actually mother take much teste to her sadhak, tested means you know , you cannot say from your side this is over, to have mother love , very few can stand that test.all his life so many type of this or that trouble always comes his way.***

Like you already if you are *having short temper problem and doing sadhana of hanuman ji surely your anger also boost up that could be a problem in your day to day life think about a minit . .*

once swami Vivekanand in his youth time stay in a house owner and his wife so much impress him that asked him to give them Diksha ,he simply refused , but they also continued for their request, later swami ji ready for that ask them which form of god they aware worshipping till that , they replied nothing special ,some time this some time that, swami ji smiled and said this

किस उपाय / किस दीक्षा के माध्यम से यह संभव हैं .. आप सभी इन बातों का ध्यान रख कर और पालन कर साधना करें ,सदगुरुदेव जी के आशीर्वाद से आप निश्चय ही सफल होने ही ...

should be like that only a particular deity's vibration suits you and success in that can be very easy , and he sit in meditation than told them to installed a earthen pot filled with water .... So its much better to take guidance and follow the instruction of Gurudev to which devi or devta sadhana suits you , and than if you proceed on the path , this helps you a lot. , success will be yours.	

Kaal Sarp Yog - In My View

काल सर्प योग -- मेरे दृष्टीकोण में

From few years I have came across the fact that the people are getting afraid by the few Astrologers bya myth Kaal Sarp Yoga (A planetary position in a horoscope which is not considered good at some instances). Kalsarp Yoga has become a very popular astrological concept today with a number of controversies surrounding its authenticity and true nature. Many astrologers claim that there is no mention of Kalsarp Yoga in any of the classical astrological texts.

विगत कुछ वर्षो से एक आधार रहित योग से लोगो को अनावश्यक भयभीत किया जा रहा है.और लोग ज्ञान और सच्चाई के अभाव में भयभीत होकर मानसिक शान्ति और धन दोनों का नाश कर रहे हैं.और ताज्जुब तो यह है की हर ज्योतिषी को इसके बारे में पता है फिर भले ही उसने अभी ही ज्योतिष की प्रवेशिका को हाथ में लिया हो.इसका कारण इस योग की नकारात्मक प्रभाव का प्रसार ही है.और यह तो हमारे परंपरा और संस्कृति में है कि यदि किसी चीज से नुक्सान हो रहा है तो फिर उसका सच मत जानो बस भयभीत रहिये और अनावश्यक उपाय में अपना धन और कीमती समय लगाओ.

Now let us first understand what it is????What is Kalsarp Yog? Why and how it is formed? What are its

यह हो सकता है कि कई वरिष्ठ ज्योतिषियों को मेरी बात ग़लत लगे पर यदि ऐसा हो तो वे निम्नाकित तथ्यों का खंडन सटीक और

solutions and remedies? If all the seven planets come between Rahu and Ketu then Kalsarp Yog formed.	शास्त्रोक्त आधार पर करें ताकि सबको सच्चाई तो पता लगे.काल सर्प जैसा कोई योग या दोष नहीं है. इस बात के लिए मेरे निम्न तथ्य हैं:
If in between Rahu & Ketu all seven planets come then it is not considered good in Astrological studies. It is assumed that if a person who takes birth in this yoga suffer from various problems like child problems, loss in business, family problems etc. Rahu is known as snack and Ketu is its tail. All planets come under the execs of Rahu & Ketu because of which Kaal Sarp Yog is formed in horoscope.	जन्मकुंडली में जो ९ ग्रह हैं उनमे २ ग्रह, छाया ग्रह हैं .राहू और केतु.तथा पृथ्वी का स्थान जातक का स्वयं का स्थान यानि की लग्न होती है. राहू और केतु का प्राकट्य-चंद्रमा का परिक्रमण ताल पृथ्वी के परिक्रमण ताल की सीध में नही है बल्कि कुछ झुका हुआ है,इस का औसत झुकाव ५ अंश ८ कला और ४५ विकला है.यही झुकाव कभी कभी बढ़कर ५ अंश २० कला भी हो जाता है तो कभी घटकर ४ अंश ५७ कला भी रह जाता है.और पृथ्वी के सूर्य की परिक्रमा करने के कारण चंद्रमा का ताल वर्ष में कम से कम २ बार सूर्य के केन्द्र की दिशा में आ जाता है.
This Kalsarp Yog can be formed in any person's horoscope like king, rich, president, prime-minister, peon, poor etc. and those who has Kalsarp Yog in their horoscope, instead of they have all kind of facilities but always suffer from any tension, fear, insecure.A person who has bitten by snack cannot sit comfortably like this a person who has Kalsarp Yog in his horoscope always fear from death.	जब पृथ्वी और चंद्रमा के यह परिक्रमण ताल एक दुसरे को एक सीधी रेखा में काट देते हैं तो इस रेखा के मिलन बिन्दु को 'संपात' कहते हैं.जब चंद्रमा पृथ्वी को काट कर ऊपर चढ़ता है तो उसे आरोही संपात और जब नीचे उतरता है तो अवरोही संपात कहते हैं यही आरोही संपात राहू और अवरोही केतु कहलाता है. केतु को चंद्र छाया और राहू को पृथ्वी की छाया कहा जाता है.पृथ्वी की छाया मंडलाकार होती है और राहू इसी छाया में भ्रमण करता है.
Why this yog is formed? This yoga is more dangerous than other malefic yoga. This yoga effects a person till 47 years and some time throughout his life, its depend upon the position of	खगोल विज्ञानं के अनुसार चंद्रमा महीने में सिर्फ़ २ बार ही पृथ्वी पथ को काटता है.इसी तरह राहू केतु कभी एक साथ निर्मित नही हो सकते क्यूंकि एक संपात बिन्दु से दूसरे संपात बिन्दु तक पहुचने में १३ दिन और ११ तो १२ घंटे लगते हैं. राहू केतु सदैव एक दूसरे से ७ वे स्थान में होते हैं या १८० डिग्री दूर होते है . इसलिए अधिकतर

Kaal Sarp yoga.If, in a horoscope, all the planets are placed between Dragons-head (Rahu) and Dragons-tail (Ketu), it is considered to be Kalsarp yoga. According to Indian astrology, there are many types of Kaal Sarp yoga- If inauspicious planets like Mars and Saturn are placed on the opposite side of Rahu and Ketu, then it is considered to be a partial Kaalsarpa Yoga. In the partial Kaalsarpa Yoga, the effects are not as powerful as Kalsarp Yoga Lets again come to our pointThe people are wasting their money and energy both by the above misconceptions and I am amazed that the Astrologers are well known about these facts and realities no matter they are new or old in this profession The main reason of all this is the assumption of the ill effects of this yoga.Its in our culture and custom that if something is harmful for us; the people will not find the root cause of that; the only thing they will do is to get away from the things and will fear always and will find the solutions by wasting time and money. It might happen that the few respected and superior astrologers	कुंडलियों में अधिकांश या सारे ग्रह इनके बीच हो सकते हैं.पर इसका अर्थ यह नही हो सकता कि अन्य ग्रहों की प्रबलता या प्रभाव को ये शुभ या अशुभ कर सके.यह दोनों छाया ग्रह हैं अतः न तो इनकी कोई राशि है और न ही इनका कोई भाव . अतः भावेश के गुणों को यह ग्रहण कर लेते हैं. जन्म कुंडली में ३,६,११ भावः में राहू की स्थिति शुभकारक या धनात्मक होती है. राहू केतु के प्रभाव क्षेत्र में बाह्य वर्ती ग्रह मंगल,बृहस्पति, तथा शनि आ हि नही सकते. जब राहू त्रिक स्थान पर शुभ प्रभाव देता है तो कालसर्प योग के वासुकी ,महापद्म, विषाक्त आदि कैसे दुष्प्रभाव देंगे जरा बताइए तो...जबकि इन स्थानों से निर्मित होने वाले काल सर्प योगों का विवरण भयानक ही है. सबसे अहम् बात यह है कि यह काल सर्प एक योग है या एक दोष ,इस विषय में ही मतभेद है. ज्योतिष में कोई भी योग ४ मूलभूत नियमो के अंतर्गत निर्मित होता है: १.ग्रहों के परस्पर संबंधो के आधार पर. २.ग्रहों की सापेक्ष स्थिति के आधार पर. ३.आकृति विशेष से ग्रहों का समय होने पर. ४.ग्रहों की राशि विशेष में स्थित होने पर. अब जबकि कोई भी योग या तो शुभ फल देता या अशुभ फल प्रदाता है तो काल सर्प योग कैसे किसी को शुभ और किसी को अशुभ फल दे सकता है.यह राहू से केतु के मध्य ग्रहों के स्थित होने पर होगा या केतु से राहू के मध्य ,इस बात पर ही मतभेद है उन महानुभावो में ,जो की इसका समर्थन करते हैं.

may find my version wrong; and if this is the point they are free to oppose my facts through the accurate base from the knowledgeable books so as to bring the Truth in front of all The Kaal Sarp Yoga is not a curse for anyone and for this I have few

facts which are as follows:-

In a birth horoscope, there are 9 Planets in which 2 Planets are the Shadow Planets Rahu & Ketu the planetary position of the Earth is considered as the Planetary position of the person itself which is also known as LAGNA...

The origin of the Rahu & Ketu is because of the tilt resolution of the Moon in compare with the straight resolution of the EarthIt is average tilted 5 Ansh 8 Kala & 54 VikalaThis tilt sometimes become higher and becomes 5 Ansh 20 Kala & sometimes become less to the 4 Ansh 57 KalaBecause of the Sun and

Earth rotation, the tune of the Moon minimum 2 times in a year comes in the centre direction between the Sun position.

Whenever the resolution of the Earth and the Moon cut each other in a straight line the adjoining point of the line is known as SAMPAATWhenever the Moon cuts the position of the Earth and get above on it is known as

इस योग का प्रचलन कब हुआ और किस प्राचीन ग्रन्थ में इसका विवरण है यह भी कोई समर्थन करने वाला ज्योतिषी नही बता पाता है . और आप ख़ुद ही सोचिये की दिव्य दृष्टि संपन्न हमारे प्राचीन ऋषियों से भला इतना भयानक योग बचा रहा यह बात मेरे गले के नीचे नही उतरती...और जो भी इसके समर्थन में तथा इसकी प्राचीनता को सिद्ध करने के लिए निम्न श्लोक बताते हैं :

"पुत्र भवः सर्प शपत सूत क्षय,नाग प्रतिष्ठाया पुत्रः प्राप्ति"

तो यह श्लोक तो पंचमस्थ राहू का फल बताता है न कि काल सर्प योग का.और इतने सारे इसके प्रकार और उप प्रकार बता दिए गएँ है जितने कि कुल ज्योतिष योग की संख्या भी नही है.अब इन तथ्यों को यदि ग़लत साबित किया जा सके, तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर तो ही इस योग या दोष को सही माना जा सकता है .अन्यथा व्यर्थ में भयभीत करना तो ग़लत ही है.....

एक बात तो निश्चित हैं की आधारहीन बात को ही हज़ार बार मजबूती से कह दिया जायेगा तो वह भी सत्य सामान लगने लगेगी . अब ढेरों किताबे ढेरों नियम, उपनियम इसके लागु होने के , उतने ही वही इसके प्रभाव हीनता के भी , अब क्या क्या एक व्यक्ति याद रखेगा . किस किस की बात माने ओर किस की बात न माने , सभी तो अपने तरकश में तीर भर कर छोड़ रहे हैं .

एक बात विचारणीय हैं की दक्षिण भारत के वैदिक ज्योतिष के उच्च कोटि के विद्वान डॉ. श्री बी , व्, रमण ने जिन्होंने अपना सारा जीवन ही ज्योतिष के क्षेत्र में लगा दिया , ज्योतिष पर अनेकों किताब के रचियता ओर

AAROHI SAMPAATsimilarly when it gets down it is known as AVROHI SAMPAAT or AAROHI SAMPAAT Rahu or AVROHI SAMPAAT Ketu.

The Ketu is assumed as the shadow of the Moon and the Rahu as the shadow of the EarthThe Rahu revolve in the Mandlakaar shadow of the Earth

According to the Space Science, The Moon cuts the course / path of the Earth 2 times only in a monthDue to this, the Rahu & the Ketu cannot create together in any condition as the time taken to reach from 1st Sampaat to the 2nd Sampaat is approx 13 Desh and 11 12 Hours

The Rahu & The Ketu remains together or they lie on the 180 degree positionsIn most of the horoscopes, almost or maximum planets lie in between these twobut this doesnt mean that these two will cause any useful or harmful effects on the strength or the effect of the planetsRemember, these two are the shadow planets hence neither they resemble any zodiac sign nor they have any ratings hence they both acquire the ratings of the dominating positions In a birth horoscope the position of the Rahu lies in the 3rd, 6th & the 11th positions The external Planets like Mars, Jupiter & Saturn cannot come across in the effects of both Rahu & Ketu

विख्यात व्यक्तिव्व ने भी अपनी कृति " "A catechism of Astrology " में इस काल सर्प योग को अमान्य किया ओर चूँकि प्राचीन आचार्य वराह मिहिर ओर सत्याचार्य ने अपनी कृति में इसका उल्लेख ही नहीं किया इस हेतु , उन्होंने इस योग की इसकी प्रमाणिक ता ओर प्रभाव क्षमता पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया हैं , अर्थात उन्होंने भी इसकी मान्यता नहीं दी हैं.

और अंत में आधुनिक युग के वराह मिहिर तथा भीष्म पितामह माने जाने वाले सदगुरुदेव जी जिन्होंने ज्योतिष की पुनर्स्थापन इस युग में की हैं ओर जिनकी सूक्ष्म दृष्टी से कुछ छूट पाना संभव ही नहीं हैं , उन्होंने भी इस योग को कोई मान्यता नहीं दी हैं इसका खंडन ही किया हैं ओर उनकी की दो किताबे ज्योतिष योग पर अभी भी उपलब्ध हैं , "ज्योतिष योग चन्द्रिका" ओर "ज्योतिष योग दीपिका" , तो क्या उन जैसे व्यक्तिव से आप ये उम्मीद कर सकते हैं की लगभग ३०० योग उन्होंने दिए हैं इस महत्वपूर्ण योग को भूल वश छोड़ दिया हो . नहीं यह संभव ही नहीं हैं .आधार हीन तथ्य हीन ओर प्रभावहीन योग को क्या कहा जाये . क्योंकि सदगुरुदेव ने "बाबा वाक्यं प्रमाणं " को आधार नहीं बनाया बल्कि वे तो आंखन देखि ही कह्ते रहे हैं .

अब एक नयी बहस छेड़ने से कोई फायदा ही नहीं हैं, दो अति उच्च कोटि के विद्वानों की बाते आपके सामने रख दी हैं , शेष जिन्हें जिसकी बाते मनानी होगी वे मानेगे ही . आखिर जीवन हैं ये

When The Rahu gives the Auspicious results in its trick position then how the Vashuki, Mahapadya, Vishaktpositins of the Kaal Sarp Yog will give the ill effects???? Rather then this the origin of the Kaal Sarp Yog from these positions is something dangerous The most important point of controversy is that is this is a simple planetary position or a lack in a horoscope. In Astrology any of the Yog (Planetary Position) originates under the 4 basic principles as follows:- **The personal combination of the Planets** **The present positions of the Planets** **Special Timing of a Planet depending on its size and shape** **The special position of a zodiac sign with the Planets** Now if any of the Yog either gives the Good Result or Bad Result overall; how come the Kaal Sarp Yog will effect someone to Good and Others to Bad???? Many of the renowned Astrologers are also confused whether this Yog will be created when the planets will be situated between the Rahu or Ketu???	आपका .....

It is still dispute on the point where the same has been originated and in which Book there is a proper description of the same is still a mystery for usAnd my dear friends you only think that our Saints who have the Power of the divine vision were also unaware of this dangerous yoga is somewhat not

acceptable for me All the praises & the verses which support the existence from the ancient times are as follows:-

Putra Bhava Sarp Shapat Soot Kshaya Naag Pratishthaya Putra Prapti

This praise told the result of the Rahu placed in the 5th position in a horoscope not the result of the Kaal Sarp YogaMany of the Astrologers have told so many types & sub-types of this but the fact is this the whole Astrology count is also less than this.

The Conclusion lies in the fact that if the above statement can be proved wrong it has to be proved with the completes facts and figures only then the ill effects of the same will be treated as the Authentic studies.otherwise there is no need to get afraid from the same.

One thing is very sure that if

thousand time a lies speak with full strength than the lies appears as a truth. Now thousands of rules sub rules on applying this kaal sarp and same number of cancellation yoga of it ,are also available than normal person totally dizzy what to do. Every one praising his own song.

One very important to be consider that Late dr. shree B V Raman who had devoted entire his life for the sake of vaidaik astrology , and authored so many valuable books , he even not mentioned this yoga in his book named 300 hundreds important yog, and in a catechism of astrology , also not accepted this yog maintaining that this yog has not mentioned by ancient astrologer like varah mihir and satyachary so authenticity and effectiveness of this yog a is questionable things..

In modern times Sadgurudev ji considered as a modern varah mihir and did bheesm pitamah like work to again rejuvenated the entire life for jyotish cause.. he indicted so many direction and view n each even very small topic on this subject , so considered that this subject left from his eyes is unreliable .Poojya Gurudev has authored more than 200 books ,in that two special book on the astrological yog " jyotish yog chandrika " jyotish yog deepika " in that he discussed in length about so

many astrologoical yog . but he also pay no attention that kaal sarp. He also denied on the authenticity and effective ness of this yog. Sadgurudev always believe and taught that one view should not be like that to follow "baba vakya pramanam" Now here two great giants has also express their view but still people has to believe on this , that s is their wisdom and thought , who will take responsibility . after all it is their life………	

White Tara Sadhana

परम दुर्लभ श्वेत तारा साधना

(दस महाविद्या में से एक भगवती तारा के अत्यंत दुर्लभ स्वरुप की साधना)

Truly, the fortune of the human arises when they go ahead in the path of sadhana world. And passing with sadhanas, prepares for mahavidhya sadhanas. Who the one will be in the world of sadhana that after receiving one sadhana of any mahavidhya among ten, have not accepted him self as wealthy as Kubera. These 10 mahavidhyas controls universe. Really, whole sadhana world is merged with these forms of maa parambaa. Every Mahavidhya is completely powerful but because of their own specialties of	सही अर्थो में मानव का भाग्योदय तब होता हैं जब वह साधना के रास्ते पर अग्रसर होता हे. और जब साधनाओ के मध्य में अपने आपको आगे बढ़ाते हुए वह महाविद्या की साधनाओ के लिए तैयार होता हैं .साधना क्षेत्र का कौन सा ऐसा व्यक्तिव न होगा जो अपने मन में कभी १० महाविद्या मेंसे किसी भी एक की भी साधना मिल जाने पर अपने आप को कुबेर वत न समझ लिया हो, यह १० महाविद्या ब्रम्हांड का संचालन करती हैं , सत्य हैं माँ पराम्बा के इन दिव्य रूपों में तो सारा साधना क्षेत्र ही सिमट आया हैं , हर महाविद्या अपने आप में सर्व समर्थ पर अपने ही कुछ विशेषताओं के कारण साधक वर्ग में अत्यधिक लोक प्रिय होती हैं जैसे की भगवती छिन्मस्ता तो वीरों की आराध्य रही हैं तो शासक वर्ग के /राजपुरुषों के मध्य ज्यादा लोक प्रिय रही हैं माँ को

powers they has remained most favorite among sadhaks like for bravo people, Chinnamasta had remained as deity because the people involved in political world and kingdom gets attracted toward her

But who can give relief from the all 3 problems related to Material, spiritual and Physical; generally people makes mother Mahakali as base but only few people know that mother is naked and to the naked mother only child is allowed to go, that's why sadgurudev have always been thoughtful to give related diksha, because sadhak must owns clear holy mind. Then, don't we have other solution?Why not?

Every mahavidhya has many forms, impossible actually that one who is in the sadhana world had not dreamed for Mahavidhya Tara's sadhana. Mahavidhya tara not only gives boon of fulfilling wishes but it is famous among sadhak that also, after completion of sadhana, there would no more worries regarding monitory problems in the future till whole life and complete material success is also be gained. The sadhana of bhagawati Tara is a bit difficult but then too there are sadhak who have completely accomplished sadhana.

Today in this world filled with all short of problems, every human, unbounded

रुधिर अधिक प्रिय हैं , तो उनका रुझान आसानी से समझा जा सकता हैं .

पर इस जीवन में त्रि ताप से कौन मुक्ति दे सकता हैं , भौतिक ,शाररिक ,आध्यात्मिक तापों से मुक्ति कोन देगा , साधारणतः लोग पहले महाकाली माँ के स्वरुप हो ही आधार बनाते हैं पर बहुत कम ही जानते हैं की माँ काली तो दिगम्बर| हैं ओर दिगंबरा माँ के पास तो केवल शिशु ही जा सकता हैं , इस लिए सदगुरुदेव् जी इनसे सम्बंधित दीक्षा बहुत सोच विचार कर ही देते हैं, क्योंकि साधक को निर्मल चित्त तो पहले बनना पड़ेगा ही. तब क्या कोई उपाय नहीं हैं क्यों नहीं .

सभी महाविद्याओ के भी कई रूप भेद हैं संभव ही नहीं हैं की साधना जगत में साधक को महाविद्या तारा की साधना करने की इच्छा न हुयी हो. महाविद्या तारा अपने साधको को मनोवांछित सिद्धि देती ही हैं , और साधको के मध्य प्रचलित हैं की तारा महाविद्या साधना करने के उपरांत पूर्ण रूप से भौतिकता प्राप्त होती हे और भविष्य में धन सबंधी समस्या उसे कभी नहीं सताती. भगवती तारा की साधना थोड़ी कठिन जरुर हैं लेकिन कई साधको ने इसे पूर्ण रूप से सिद्ध किया हैं .

आज के त्रि ताप से दग्ध समाज ,हर परिजन व्यक्ति , देशकाल की सीमा से परे एक ही साधना के शरण में जा ता हैं , सद्ग्गुरुदेव भगवान् ने भी भूरी भूरी प्रसंशा , माँ पराम्बा के इस अद्वितीय रूप की हैं. क्योंकि जो तारे वही तारा हैं, सूर्य की अद्भुत शक्ति के पीछे माँ ही हैं, ओर दस अवतार में भगवान राम की आधारभूता शक्ति भी यही हैं . पर ऐसा क्या हैं विशेष माँ इस रूप में .

भगवती तारा के इस रूप की विशेषता हैं की इन के साधक को आर्थिक आभाव से मुक्ति मिलती हैं ,उसे किसी अन्य के सामने हाँथ फैलाने से माँ बचाती हैं लगातार किसी न किसी स्त्रोत के माध्यम से उसे सहायता मिलती ही रहती हैं, यो तो

by the boundaries of country goes to one sadhana only. Sadgurudev Bhagwan also widely appreciated this divine form of mother Parambaa. Because the one who saves from every problem that is Tara. Behind the amaizing power of the sun, there is mother Tara. And in Dasawatar, the Skati of the rama is also the same. But what is so special about her this form?

The specialty about this form is the sadhak of her get ride on monetary troubles, mother save the sadhak who goes into debt, continue with any medium the sadhak receives her help. Though the worship of the mother could be with Chinachaar system, the simple form of the mother do not expect the fluency of prayers from sadhak but if sadhak is bit even egoistic then in thousands life even the success can not be gain though following all the rules even. For the simple heart mother stands always, we need not to call her, the child might be unknown to the name of mother but she is always everything for him. If this is the base mentality of the sadhak, nothing remains impossible. Mother is always with him.

Mother is giver of knowledge & wealth she saves from every danger. But every

माँ की साधना चीनाचार पद्धति के माध्यम से ही की जा सकती हैं, माँ का यह सरल रूप अंपने साधक से किसी पांडित्य ता की अपेक्षा नहीं रखता , अगर साधक थोडा सा भी अंहकारी हैं तो हज़ार वर्ष में भी सफलता सारे नियम उप नियमो के पालन के बाद भी नहीं मिल सकती हैं. वही सरल ह्रदय के लिए तो माँ तो पहले से ही खड़ी हैं , क्या उन्हें भी बुलाना पड़ेगा, भला शिशु माँ कानाम कही जानता हैं, उसके लिए तो वह सबकुछ होती हैं यही भावभूमि धारण करने वाले साधक के लिए मानों क्या असंभव हैं .माँ तो सदा साथ ही हैं .

माँ ज्ञान विज्ञानं बुद्धि धन्प्रदाता हैं साथ ही साथ तारने वाली हैं. पर माँ के भिभिन्न रूप में हर रूप की अपनी एक अलग ही विशेषता हैं , चाहे वह नील तारा हो या एक जटा या महौग्र तारा हो या उग्र तारा हो , किस रूप की साधना की जाये ये तो सदगुरुदेव का ही अधिकारका क्षेत्र हैं , वही निर्धारण कर सकते हैं .साधक कि मनोभाव माँ के किस रूप से मिल पा रहे हैं ओर उसका लक्ष्य किस रूप की आराधना से पूर्ण हो सकता हैं.

बौद्ध तंत्रों की जो अद्भुत श्रंखला इस देश में आई वह अद्वितीय थी, साधना के अनेको ,ज्ञान विज्ञानं के ऊँचे ऊँचे कीर्तिमान जो खड़े किया गए वे अपने आप में बेमिसाल थे, ये तो कालांतर में कतिपय दुर्बल मानसिकता ,स्वार्थी तत्वों की अकलुषित मानसिकता के कारण सही पद्धति ह्रास के कगार में पहुच गयी , तब भगव द पाद अदि शंकराचार्य को सनातन संस्कृति की पुर्नस्थापन करनी पड़ी .

जन सामान्य के मध्य माँ तारा , बौद्ध तंत्रों की देवी हैं सुच भी हैं माँ सरेबौद्ध तंत्रों की अधिस्थार्थी हैं भी , वहां पर माँ के अनेको रूपों से सम्बंधित साधना हैं पर जन सामान्य से कोशो दूर किसी अगम्य मठों में ही माँ के कुछ रूपों की साधना आज भी पाई जाती हैं , माँ के इन रूपों में एक हरित तारा का भी हैं , पर स्वेत तारा का रूप के बारेमें तो कभी

divine form has their own specialty, rather it is Neel tara or Ek jata or Mahogra tara or Ugra tara, who should be worshiped that is completely depend on Sadgurudev, he only can decide that with which form the mentality of the sadhak does match and sadhana of which form can lead him to achieve desire.

The system of buddh tantra which came to the nation was unique. Many pillors of the knowledge and science made were incomparable, it was the cheap thinking and selfishness of few who made this system vanished and extinct, at that time holy Shankaracharya were made the re establishment of the ancient Sanatan tradition.

In the middle of general public, mother tara is diety of Buddhtantra. It is fact, she is diety of all buddhisth tantra. There we can find so many sadhanas in regards of different forms of her but very far from the general people, in some Maths only such sadhanas could still be found. In the various forms of the mother, there is Harit tara, but Swet tara is not even been heard by anyone. The unique sadhana of this divine form is not difficult but it is too rare.

सुना ही नहीं हैं , इस दुर्लभ रूप की सधना कठिन तो नहीं हैं पर अगम्य, अत्यधिक दुर्लभ हैं ही .

पूज्य पाद सदगुरुदेव जी के सानिध्य में बैठना ही जीवन की उच्चता हैं परि पूर्णता हैं सौभाग्य हैं, और बातों बातों मैं कुछ ऐसे दुर्लभ अगम्य अप्राप्य रह्श्य खोल देते ,उस दिन भगवती तारा के दिव्य रूपों की चर्चा चल पड़ी , मैंने पूछा की क्या गुरुदेव के कोई रूप उनका ऐसा हैं हैं जो दुर्लभ हैं पर अपने आप में परि पूर्णता देने वाला हो , साथ ही साथ साधना भीकम समय की ही हो , की इतने सारेदुर्लभ संयोग उनके किसी रूप में संभव हैं.

क्यों नहीं उन्होंने कहा ओर कहाँ , की एक ऐसे हो रूप की साधना हैं जो भगवती के **श्वेत** तारा रूप की हैं .

श्वेत तारा ,गुरुदेव ये नाम तो सुना नहीं , कुछ इसके बारेमें प्रकाश डाले ????

सदगुरुदेव मुस्कुरातेहुए बोले- भगवती का यह रूप अत्यंत हिमनोहारी हैं, शुभ प्रकाश से जिसकी कान्ति चहुँ ओर खिली हैं ,जिन्होंने **श्वेत** वस्त्र ही धारण किये हुए हैं .वह कल्याण कारी तारा का रूप तो अत्यंत ही दुर्लभ हैं .भगवती साधक को मनोवांछित वरदान दे कर अपनी कृपा का अमृत वरसाती हैं .भगवती के इस रूप का जिसने दर्शन कर लिया उसने साधना जगत में अपना ही एक स्थान बना लिया .

उच्च कोटि के योगी भी ये साधना सपन्न करने की इच्छा रखते हैं .इस तारा रूप के साधक को सभी आदर की दृष्टी से देखते

To sit in the holy feet of sadgurudev is the hights of spiritual life, totality and best fortune. And mean while the talk he used to open rare and incomparable secrets of the sadhana world. That day the talk went on for divine forms of bhagawati Tara. I asked that Gurudev is there any form of her which is very rare and can give totality, that too in short span of time is this possible that all these co-incidence could be find in one single form ?

Why not, he said there is such sadhana which is related to bhagawati's form Swet tara.

Swet tara?, Gurudev I never heard of this name, please throw some light on this.

Sadgurudev smiled and told: the form of the goddess is really attractive; the white glow which is shining brightly, the one who is in white cloth, that welfare provider form of tara is rare. She showers her blessings on sadhak to fulfill his whole wishes. The one who get sight of her have made a remarkable place in the sadhana world.

Very highly accomplished yogis even wish to complete such sadhanas. Everyone look with respect to the

हैं .क्योंकि ये साधना केवल ओर केवल उच्च कोटि के योगियों के मध्य ही प्रचलित रही हैं इसलिए प्राप्त करना असंभव तो नहीं पर कठिन जरुर हैं.

मैंने सदगुरुदेव जी से कहा की गुरुदेव क्या में इस साधना की प्रक्रिया जान ....?????

उन्होंने मेरे मनोभाव को पडते हुए , इस देव दुर्लभ साधना के गोपनीय पक्षों को समाहित करते हुए अत्यंत हो सरल विधान सामने रखा जो में आपके सामने पूज्य सदगुरुदेव जी की अनुमति से रख रहा हूँ. ......

यह साधना किसीभी बुद्धवार या रविवार की रात्रि को १० बजे शुरू करदे. अपने सामने तारा यन्त्र स्थापित करले. श्वेत तारा देवी के शुभ्र स्वरुप का ध्यान करे और नीचे दिए गए मंत्र का १०००० बार जप मोती माला या फिर सफ़ेद हकीक माला से करे.

ध्यान :

सोम स्वरुप शुभ वस्त्र धारिणी पुष्प माला

सह पाश रक्त सर्वारिणी सौम्यकान्ति

नीर्जारा : श्वेतेश्वरी त्रिपुरा :

साधकं कल्याण प्रदायिनी नमामि तवं पुनः पुनः

मंत्र:

ॐ त्रां त्रीम त्रूम श्वेत ताराये नमः

जप पूर्ण होने के बाद साधक को इसी मंत्र से हवन करना हैं . हवन के लिए श्वेत अपराजिता के १००० पुष्पों का रस लेना हैं श्वेत अपराजिता को सफ़ेद गौकर्णी, श्वेत पुष्पा, श्वेत गिरिकर्नी, कटभी, गर्दभी, दध्रू पुष्पिका आदि नमो से जाना जाता हे, अगर १००० फूल संभव न हो तो जितने भी संभव

sadhak of this form of tara. Because this sadhana has remained with very high accomplished yogis therefore to gain such sadhana is not impossible but then too is really difficult.

I asked sadgurudev rather may I have details of the sadhana?

With my pray he gave me the details of the sadhana and the secrets with easy process which I am placing hereby with permission of sadgurudev.

This sadhana can be started in the night time after 10 PM on any Wednesday or Sunday. Place tara yantra in front of you. Meditate on goddess's bright form and after that chant 10000 times following mantra with Moti rosary or White Hakeek rosary.

Dhyan :

som swarup shubh vastra dharini pushpa mala

sah pash rakt sarvarini soumy kaati

nirjaraah shweteshweri tripurah

sadhakam kalyan pradayini namami tvam punah

Mantra :

हो उतने पुष्पों का रस निकल ले और उसमे इतना शहद मिला ले की जिससे उस मिले हुए द्रव्य से १००० आहुति दी जा सके.

यह पूरी साधना उसी रात हो जानी चाहिए.

साधना के मध्य में या हवन पूरा करते करते साधक को निश्चित रूप से श्वेत तारा का दर्शन हो जाता हे और साधक उससे मनोवांछित वरदान मांग सकते हैं .

वर्ष के इस समय जब इतनी उच्च कोटि की साधना सदगुरुदेव जीके आशीर्वाद स्वरुप प्राप्त हो रही हैं तब भी उस ओर ध्यान न दे तब किसकी भाग्य हीनता कही जाएगी .

साधक कल्पना कर सकते हैं की सिर्फ एक रात में यह साधना क्या परिणाम दे सकती हैं, परन्तु श्रद्धा और विश्वाश साधक के अति आवश्यक अंग हैं , उसके बिना किसी भी साधना में सफलता प्राप्ति संभव हो, कहा नहीं जा सकता. आप सदगुरुदेव जी के प्रति विनम्र व साधना के प्रति पूर्ण निष्ठां भाव से संपन्न करे , निश्चय ही आप सफलता प्राप्त करेंगे करें.

Om Tram Treem Troom Shwet Tarayei Namah
ॐ त्रां त्रीम त्रूम श्वेत ताराये नमः

After completion of the Mantra jaap one needs to do Hawan. For Hawan one need to take juice of 1000 white Aparajita flowers. The white aparajita is also called as safed gaukarni, swet pushpa, shwet giri karni, katabhi, gardabhi, dadhu pushpika etc. if 1000 flowers are not possible, take as much as possible and add honey and prepare liquid which is enough for 1000 aahuti. The hawan should be done with 1000 ahuti with same mantra.

The whole process must be completed in that night only.

In the miiddle of the hawan or before you complete definitely the Sight of the swet tara becomes visible and sadhak can ask for desire to fullfill.

At this time of year, we are getting such very high divine sadhana from the sadgurudev as a blessing and if we do not complete it, who is misfortunate?

Sadhak can imagine that in one single night what result can this sadhana give, but faith and trust are the sadhaka's part; without which success in

anysadhana could be gain, can not be said confidently. Complete the sadhana being devotional to sadgurudev and with faith in sadhana, you will get the success for sure.	

Sadhana And Siddhiyan

(क्या हैं आखिर साधना करने का वास्तविक उद्देश्य)

Sadhana bhav bhumi (mental attitude)is the most important thing that a sadhak must know. But many of us lacking understanding the common thing , but common thing is very uncommon. We stared our journey and even a single round of rosary not started and we wait for the out come ,why not siddhit still came? As the result already mentioning our Sadgurudev ji in patrika, so may be the process mentioned in that is not complete or worried on the reason god knows..

Many person who totally disappointed

साधना की भाव भूमि (मानसिक दृष्टी कोण)अत्यधिक महत्पूर्ण तथ्य हैं जिसे हर साधक को जानना ही चाहिए .हम में से अधिकांश इस तथ्य की उपेक्षा कर जाते हैं ,क्योंकि सामान्य सरल बाते ही बड़ी असामान्य होतीहैं .हमने इस पथ पर अभी यात्रा भी आरम्भ नहीं की हैं ,एक ही माला भी मनोयोग से नहीं कर पाए पर हमें तो परिणाम की अभी से चिंता होने लगी हैं की वह सिद्धि अभी तक मिली नहीं /आई नहीं . जो सदगुरुदेव भगवान ने पत्रिका में लिखी थी . क्यों नहीं मिली और हम ये सोचते हैं की शायद पत्रिका में साधना ही पुर्णतः से नहीं दी थी ,या कुछ ऐसे कारण पर चिंतित होते हैं जिन्हें भगवान ही जाने .

अधिकांश व्यक्ति जो किसी कारण वश साधना में सफल नहीं हो पाए या सफलता प्राप्त नहीं कर पाए

regarding the sadhana and start blaming that either the sadhana are mentioned incomplete or its their luck .,but think a second, they ever tries to find out where there will be the fault . we are going to control unforeseen power and here is the current condition that even a person in our family does not listen our talk, than the sadhana is such a easy things, us because you bought some material and do some jap means you are entailed for to get siddhi..... Its not that...

,निराश हैं वे कभी साधना कि पुर्णतः पर या अपने भाग्य पर दोषारोपण करते पाए गए . पर एक सेकंड के लिए विचार करे कि क्या कभी उन्होंने सोचा की क्यों आखिर उन्हें सफलता क्यों नहीं मिल पाई ?अद्रश्य शक्तियां जो आज तक हमारे सामने नहीं आई, उनपर हम मात्र एक सेकंड में अधिकार करना चाहते हैं जबकि हमारी यह स्थिति हैं की हम अपने घर में ही जिनको वर्षों से जिन्हें जानते हैं उनसे एक बात भी मनवा नहीं पा रहे हैं , तो आगे आप ही सोचें , की कितना उचित हैं . क्योंकि हमने तो मन लिया हैं की साधना तो बहुत ही सरल चीज हैं हमने कुछ साधना सामग्री ले ली हैं कुछ मन्त्र जप कर लिया हें इसलिए हम सिद्धि प्राप्त करने के अधिकारी हैं . . पर यहाँ साधना क्षेत्र में ऐसा तो नहीं होता ..

There is not anywhere in sky a registered is maintaining and someone sitting there maintain the record that you have completed so and so many mantra jap and this siddhi is yours.and allot a siddhita no such a things is applicable...

ऐसा कहींभी नहीं हैं की आकाश में कहीं कोई ,अपने हाँथ में एक रजिस्टर लेकर , उसे लगातार लिख रहा हैं . की आपने इतने मन्त्र जप कर लिया हैं तो आप इस सिद्धि के लिए अधिकारी हो गए हैं और आपको एक सिद्धि में सिद्धिता प्रदानकर दी .मानिये की ऐसा कहीं भी नहीं हैं ...

Have a faith if it is not so easy than what.?.

भरोसा रखे , यदि यह इतना सरल नहीं हैं तो क्या करे ?

we have various our guru brother and sister who get success in sadhana , how can they ?... what will be the cause....?

हमारे बीच में ही बहुत सारे ऐसे गुरु भाई बहिन हैं जिन्होंने यदि साधना में पूर्ण सफलता पाई हैं तो कि क्या कारण हैं जो उन्हें सफलता मिली ... ?

Sadgurudev ji says in “Nabhi Darshana Apsara Cassetes” that audio castes one of mine favorite reason is.. that sadhana pre mental condition how that should be in the Sadgurudev ji own divine voice). *“ if you do the sadhana than this is most easiest sadhana and it also have than most difficult sadhana is this, many of shishy get success in first round and if they*

मेरी प्रिय केसेट्स मेंसे एक"नाभि दर्शना अप्सरा साधना " में साधना में किस प्रकार की मानसिक भाव भूमि रखना चाहिए , सदगुरुदेव जी कहते हैं - यह साधना सबसे सरल साधना हैं ओर सबसे कठिन साधना भी ,अधिकांश शिष्य तो पहली बार में इस सधना में सफलता प्राप्त कर सके हैं , और शेष तो दूसरी ओर तीसरी बार में सभी सफल हुए ही हैं . किसी भी को चतुर्थ प्रयास नहीं करना पड़ा , पर तुम्हे इतने अधिक बार प्रयास करने में सफलता नहीं मिल पा रही हैं तो में यह सोचता हूँ , की एक क्लास भी वही , शिक्षक भी वही , कुछ बच्चे फर्स्ट क्लास में तो ,कुछ फ़ैल क्यों हो गए , जबकि सभी को एक जैसा

any reason not unsuccessful they got success in second round and even if some lacks than third round definitely give success, and this is the must ,not even one of his shishy need to go for more than fourth round,

but you get unsuccessful even more chance taking that than that, than this is one of the painful question for him why they got success ? and here is the case not like that , when a teacher teaches one class and material that has been teaching is also same , why some students got first division and some second and some even failed. Why...?. Cause is clear , those who think that what has been taught is right now only they have to do their part with hard work and faith ,than result they got in first div.

Same things happening here ,

Sadhana is the way, to go to achieve... siddhi , is the not the aim, sadhana means having siddhta in your inner and outer being , instead of controlling any outer mysterious power, suppose you get controlled on a force we call karan pishachini, who tells you secret of till date of any person comes to you , to your ear,..... wow... great thing.but think about a second that before attempting that either are you capable enough to handle that siddhi?,, yes I means .. when she

ही पढाया गया . कारण ये था की, जिन्होंने समझ लिया की अब हमें बस मेहनत करके अपना कार्य पूरा मन लगा कर करना हैं वे प्रथम क्लास में पास हो गए ओर जो मेहनत से बचते रहे वे......

यही वास्तिविकता तो साधना क्षेत्र की हैं

साधना तो एक रास्ता हैं ...न की सिद्धि प्राप्त करने की मंजिल .. ये सिद्धि प्राप्त करने का लक्ष्य नहीं हैं .साधना का मतलब अपने अंतर ओर बाहय अस्तित्व को जानना और उसमें सिद्धित्ता प्राप्त करना , न की किसी रह्श्य मय शक्ति को अपने नियंत्रण में करना .मानलो की अपने एक ऐसी शक्ति "कर्ण पिशाचिनी " में सिद्धित्ता भी प्राप्त कर ली , जो आज तक का कोई भी गोपनीय तथ्य किसी भी व्यक्ति का आपके कान में बता सकती हैं ... क्या बात हैं ..... पर क्या आपने एक सेकंड के लिए भी सोचा हैं की की आप अपने प्रिय जनो के गोपनीय तथ्य चाहे आपकी मान्यता अनुसार या विपरीत भी क्या आप उन्हें स्वीकार कर पाएंगे .क्या आप ये स्वीकार कर पाएंगे की आपके प्रिय जन कभी कभी आपके बारे में बुरा / असभ्य /गलत भी सोच सकते हैं पर इस सबसे बाद जुद भी वे आपको स्नेह करसकते हैं . आप ही बताये..

तब क्यों साधना की आवश्यकता हैं .....

साधना - आपको अपने सत्य स्वरुप से परिचय करने का मौका देती हैं , ओर ये कोई एक दिन का खेल तो नहीं हैं .अपने सत्य स्वरुप को जानने के लिए कुछ समय ओर धैर्य की जरुरत तो होगी ही . मंत्र ओर साधना आपके अंतर की प्रक्रिया को प्रारंभ कर देती हैं पहले मन की दुर्बलता , कठि नाई ओर मानसिक कमजोरी ही तो बाहर आएँगी, तभी तो अंतिम परिणाम प्राप्त होगा . मतलब सिद्धि नहीं नहीं .... ये तो लक्ष्य नहीं हैं.

हमारी हजारों साल से चल रही अपना परिचय प्राप्तकरने की यात्रा का ,सिद्धि तो एक मील का पत्थर हैं . जो की हमने भूल वश खो दिया हैं .एक

stared giving details of your near and dear one. Are you capable enough to digest , no no its not so easy . give others also right that they can also be think something's bad or dirty and unhealthier to you even though they also like you. Answer you know…….

Than why the sadhana is necessary,

Sadhana – gives you opportunity to understand your true self and that should not be in day game. To discover the real in you, need some time and patience , the mantra and sadhana start the process inside you, first weakness and trouble some mental condition came out. Than the final result come..but that means siddhi is,,,, not the aim, yes..

that is the mile stone of our journey that we are doing from ages searching our own address, unfortunately missed by us. Take small example . suppose you have to go manali to jaipur, and you reached until delhi ,a great sign of success but still you need to complete rest of the journey and you returned to manali is journey can be said complete or successful ,same way, if we are not able to reach our aim given by Sadgurudev i,e, siddhshram, can be happy just with some siddhi, that make not much sense.

Sadgurudev ji used to tell that *To get siddhi one by one and sitting in room and*

उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं -मानलो हमें मनाली से जयपुर जाना हैं ओर हम दिल्ली पहुच गए, यात्रा का एक बहुमूल्य पड़ाव (या सिद्धि) ,ओर अभी भी यात्रा तो पूरी नहीं हुए , ओर यहाँ से आपको मनाली वापिस लौटना पड़ा तो क्या आपकी यात्रा पूरी मानी या सफल जाएगी इसी तरह से सदगुरुदेव द्वारा दिए गए लक्ष्य "सिद्धाश्रम प्राप्ति " से कम पर संतुष्ट होकर किसी सिद्धि से संतुष्ट होकर रह जाये तो इसका कोई अर्थ हैं.

सदगुरुदेव जी कहते हैं - एक एक बाद एक सिद्धिप्राप्त करते जाये , ओर किसी एक कमरे में बंद हो कर बस मन्त्र अजप करते जाये , तो आप में ओर उस व्यापारी में जो रोज़ अपनी तिजोरी में धन गिनता रहता हैं कोई खास अंतर नहीं हैं एक सिद्धि तो दूसरा धन गिन रहा हैं .आखिर इसका समाज या देश की उन्नति में की योगदान हैं. हमें तो अपना भाग मनोयोग से मन्त्र अजप कर उसे सदगुरुदेव जी के श्री चरणों में सपर्पित कर देना हैं . बे ही शक्तिशालियों के शक्तिशाली हैं कोई भी सिद्धित्ता जब तक वे नहीं चाहेंगे , आप तक नहीं पहुंचेगी भी.

यदि मन्त्र जप से आप और आपका परिवार , ज्यादा प्रसन्न , ओर खुशुयों भरा , रोग रहित , कोई भी दुखदायक घटनाओ से भरा हुआ नहीं हैं आपको अच्छी नीद बा आपका स्वास्थ्य भी ठीक हैं तो आपके चारों रहने वाले आपसे ,व्यक्तित्व से प्रभावित् हैं तो क्या ये सफलता की अग्रिम सूचना हो नहो .

यदि अभी भी आप इस बात से प्रभाबित हैं

मैं आपसे मन्त्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं की एक पुराने प्रकाशित लेख की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा , जिसमें अमेरिका के एक बड़े हॉस्पिटल के मेडिकल रजिस्ट्रार ने पूज्य सदगुरुदेव से एक बार में ही २५-३० दीक्षाए एक साथ अपने पूरे परिवार के साथ ली , ५/६ माह के उपरान्त उन्होंने सदगुरुदेव से फ़ोन कर के पूंछा की क्यों उन्हें जैसा वे परिणाम चाहते हैं प्राप्त नहीं हो रहा हैं आप गुरुदेव बताये .कहाँ पर कमी रह गयी हैं .

just doing mantra and mantra jap , is like a business man counting his money in closed door , both are same ,one is counting money other is siddhi.. till that be useful to samaj or even country how that can be said useful and we have to do our part and leave/offer our mantra jap to his sad Gurudev divine holy feet. *He is the supreme most power full of all the power and so called siddhita does not reach to you until he allowed to go.*

If through doing jap /sadhana, you feel happy, your family life us much, much joyful, no disease or any major untoward event happens to your home, and you have healthy sleep, smile on your faces, and person around feel changes in you and your personality than this is also a sign of success.

Still not believe in this theory,

I will ask to go to mantra tantric yantra mag old issue (one article)in that one registrar of a big medical college of USA took 25-30 diksha in a one single time with his whole family and later 5/6 month he telephoned to Sadgurudev and asked his advice on this point that he is not getting any spiritual gain as per his expectation, where is the fault.?

Sadgurudev ,angrily told to him, does he (registrar) not feeling much healthier and happy, no tension, or any bad event

सदगुरुदेव जी किंचित क्रोध से बोला की क्या वे और उनका परिवार इन अवधि में ज्यादा स्वस्थ , प्रसन्न , ओर बिना किसी भी अशुभ घटनाओ के हैं क्या ये बात सत्य नहीं हैं .

उन्होंने कहा - पूज्य गुरुदेव आप बिलकुल सही हैं .

सदगुरुदेव जी ने कहा किमैं कोई जादू दिखने वाला बाबा नहीं हूँ , और किस सत्यता/प्रमाण की उन्हें आवश्यकता हैं , जो भी जीवन में ठोस लाभ देता हैं उसमें थोडा सा समय तो लगता हैं ही .

किसी भी रेल यात्रा के समय ,रात्रि के समय जब हम नीद में होते हैं तब कितने स्टेशन से हम निकल चुके हैं इसका तो हमें ज्ञान भी नहीं होता हैं केवल सदगुरुदेव जी ही जानते हैं , ठीक इसी तरह हमारे कितने स्टेशन की यात्रा ओर अभी आना शेष हैं कितने की हम यात्रा कर चुके हैं .उन्हें ही पता हैं .

ठीक यही तथ्य साधना जगत में लागु होता हैं , आप जैसा की गुरुदेवजी ने निर्देशित किया हैं उस अनुसार अपना कर्तव्य करते जाये तात्पर्य मंत्र जप करते जाये .साधना के पूर्ण होने पर .व्यतिगत रूप से , पत्र के माध्यम से , या फ़ोन के माध्यम से उनसे अपने साधना के दौरान, क्या क्या अनुभव हुए हैं या नहीं भी हुआ हैं तो भी स्पष्ट रूप से बताये , तो उनके आधार से वे आपको ज्यादा उचित सलाह ओर कैसा साधना में परिवर्तन करना हैं या नहीं ,निर्धारण करेंगे .उसके आधार पर आप अपनी साधना में ओर तेजी से सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं ,साधना तो एक ऐसा माध्यम हैं, न की मंजिल, जिसके माध्यम से आप को आगे बढ़ाना हैं, न की किसी भी मील के पत्थर (सिद्धि) पर रुक जाना हैं . ये सब तो मार्ग के दिशा सूचक हैं अभी तो मंजिल बहुत दूर ,सदगुरुदेव जी के श्री चरणों में लीन होना हैं . इसलिए सिद्धि मिली या

happened to him/or in his family in those period, he replied yes Gurudev , you are right. Sadgurudev *replied I am not any magic shower baba. What more proof he wants,What is solid gain for a life ,will take time to adjust*, While travelling through a train for long journey, in night time in sleep we do not how many station we already pass , same thing here in sadhana field, only Sadgurudev ji know that how many more station we still have to cross, and how many we already cross without knowing. Same thing applicable on the sadhana field, do your duty, means mantra jap , as per instruction of Gurudev ji, after completing that again try to meet him either in person or through phone/letter, discuss your exp if happened in the sadhana time and ask their guidance to move go forward.. sadhana is a way for to get the manzil and not the way to stop only on any mile stone(siddhi), they are the sign board, real manzil is far far away in the divine lotus feet of Sadgurudev ji. So not to pay too much attention on siddhita,. Move toward ultimate goal. Success is a journey not a goal to achieved.	नहीं इस पर ज्यादा ध्यान न दे कर अंतिमलक्ष्य की ओर बढे . सफलता एक यात्रा हैं न की कोई लक्ष्य जिसे प्राप्त करना ही एक मात्र उदेश्य हैं .

Sangeet Tantra

संगीत तंत्र रहस्य

सप्त सुरों का सप्त चक्रों से सम्बन्ध क्या हैं

Since ancient time, human being's relation has remained with music, human used music as a medium to express the feelings. In the ancient time, it was not just a medium for entertainment. Many of our ancient sages were accomplished in music and today even many high spiritual level attended yogis are accomplished in music. Have we thought once even that the one who remain in joy of god realization, what is the need to them of this outer entertainment?

It can not be said that what do we understand by music today but in ancient time it was medium of spirituality. With the help of music, many

प्राचीन काल से मनुष्य का सबंध संगीत से रहा हैं , संगीत को मनुष्य ने अपने भाव को व्यक्त करने का माध्यम बनाया था. प्राचीन समय में यह मात्र एक मनोरंजन का स्त्रोत नहीं था. हमारे कई ऋषि मुनि संगीत शाश्त्र में निपूर्ण थे. और आज भी कई उच्च कोटि के योगीजन संगीत में पूर्ण होते हैं . क्या हमने एक बार भी यह सोचा की जो हमेशा इष्ट के आनंद में रहते हैं उन्हें यह बाहरी मनोरंजन के माध्यम संगीत की क्या जरुरत हैं .

people attained totality. There are several examples in front of us like Meerabai and Narsinh to name few. Then what the difference is this?

In true term we have never understood music, Sadgurudev used to say that the hum of the insect is even a music which if applied to hear daily, the human can gain thoughtless mind. For general humans music must be based on entertaining point of view but for yogis it has deep definitions.

The importance of sound is accepted widely and specific sound creates specific energy. The Saptak of music Sa, Re Ga Ma Pa Dha Ni are not just words. To just give name and pronunciations anything could had been given but Sa, Re Ga Ma Pa Dha Ni has a deep meaning. With a special rhythm if one specific sound is applied to incorporate, then it creates vibration on specific chakras of the body.

All Sapt Sur are representative of elements and every Sur (tone) hold a command over one element in which Sa-Earth , Re and Ga – Water, Ma Pa – Fire, Dha – Air and Ni – Eather.

The way we have 7 tones, we even have 7 voice force from which a sound could be made. These are head, nose, throat, lungs, navel, Abdomen and groin, if we watch carefully, these all places are very close to 7 chakras. This way, in relation to Kundalini 7 tone can vibrate chakras in Sangeet tanra.

संगीत का मतलब आज क्या लिया जाता है ये कहा नहीं जा सकता लेकिन प्राचीन काल में ये एक आध्यात्मिक माध्यम ही रहा था. संगीत के माध्यम से ही कई लोगो ने पूर्णता प्राप्त की हैं मीराबाई या फिर नरसिंह जेसे कई उदाहरण हमारे सामने ही हैं . तो फिर यह भेद क्यों ?

वास्तव में हमने संगीत को कभी समझा ही नहीं, सदगुरुदेव कहते थे की भवरे की गुंजन भी एक प्रकार से संगीत ही हैं जिसे रोज सुना जाये तो आदमी धीरे धीरे विचार शून्य हो जाता हैं . सामान्य मनुष्यों को संगीत मनोरंजन आधारित होना चाहिए लेकिन योगीजन के लिए संगीत बहुत गहरी परिभाषा लिए हुए हैं .

ध्वनि की महत्ता निर्विवाद रूप से मानी जाती हैं और एक विशेष ध्वनि कोई न कोई विशेष उर्जा प्रसारित करती ही हैं . संगीत के सप्तक या सा रे ग म प् ध नि आदि शब्दों के कोई सामान्य समूह नहीं हैं . देने को तो इन ध्वनियों को कोई भी उच्चारण दे दिया जाता लेकिन सा रे ग म प ध नि का गहन अर्थ हैं . जब एक विशेष लय के साथ एक मूल ध्वनि सम्मिलित होती हे तो वह शरीर में

Sa – Muladhar (Earth element, sound generation – groin) Re – Swadhisthan (Water element, Sound generation - Abdomen Ga – Manipur (Water element, Sound generation – Nevel Ma – Anahat (Fire element, Sound generation – Lungs) Pa- Visuddh (Fire element, Sound generation – Throat) Dha – Agya (Air element, sound generation – nose) Ni – Sahashtrar (Eather element, Sound Generation – Head If these tones are generated with related sound then the specific starts awaking and they start having many mysterious experiences. But this is Chakra Jagaran and not Chakra bhedan. That's why many Raga's were meant, in which with the help of sounds, specific Raga is made which can completely open Chakras. For example, with the help of Malkosh Raga, Visuddh chakra can be awaken, same way daily exercise of Kalyan raga even helps in vibrating Visuddh chakra. And one this chakra is activated, then sadhak can realize the etmoshperic	किसी एक विशेष चक्र को स्पंदित करती हैं . सभी सुर अपने आपमें तत्वों के प्रतिनिधि हैं और हर सुर एक विशेष तत्व के ऊपर अपना प्रभुत्व रखता हैं . जिसमे सा- पृथ्वी, रे, ग – जल तत्व म,प – अग्नि तत्व ध- वायु और नि- आकाश तत्व के प्रतिनिधि हैं . अब जिस तरह से ये सप्त सुर हैं उसी तरह शरीर में सप्त सुरिकाए हैं जहाँ से सुर का या ध्वनि की रचना होती हैं . यह हे सर, नासिका, मुख-कंठ, ह्रदय (फेफड़े), नाभि, पेड्रू और ऊसन्धि. ध्यान से देखा जाए तो ये साडी जगह शरीर के सप्त चक्रों के अत्यंत ही नजदीक हैं . अब इस तरह संगीत तंत्र में कुण्डलिनी सबंध में सप्त सुर एक एक चक्र को स्पंदित करने में सहयोगी हैं सा – मूलाधार (पृथ्वी तत्व, सुरिका- ऊसन्धि) रे – स्वाधिष्ठान(जल तत्व , सुरिका – पेड्रू) ग – मणिपुर (जल तत्व , सुरिका – नाभि) म – अनाहत (अग्नि तत्व, सुरिका – ह्रदय)

waves and can convert them into sound but Ragas like Kalyan have to be sung into evening only means quick after sun set. With the help of Nand Raga Muladhar gets activated. And one can understand the Vedas completely only when the Muladhar is active completely. This Raga should be sung in 2nd phase of night. The That Bilabal Raaga Devgiri can active Anahat Chakra and then one can hear Anhad Naad & owns every accomplishment related to it, this way every Raga gives effect to vibrate and open specific chakra. But is it that music can only activate kundalini? No. With the power of music, Singing Deepak Raga; Tansen lighten a lamp. Baiju Bawara on other hand sung a specific raga and melted a Stone, he threw his music instrument TanPura into that and when he stopped the Tanpura was inside the solidified liquid of stone. These are just few examples, Music is also complete Tantra. Everything in this universe is made of five basic elements. The 7 tones of music can control these five elements. If with the help of specific tone or Raga, if we increase our Air element and lessen our Earth and Water element, one can have power to fly in sky and can have power to get invisible. And if this also applied outer side on anything, that will even becomes invible. Or else it is incorporated with on elements of any specific item and elements are subjected to change, in this condition the whole substance changes. Or with the help of music one can gather	प – विशुद्ध (अग्नि तत्व, सुरिका – कंठ) ध – आज्ञा (वायु तत्व, सुरिका – नासिका) नि – सहस्त्रार (आकाश तत्व, सुरिका – मस्तक) इन स्वरों का, उपरोक्त स्वरिकाओ से इनसे सबंधित चक्र का ध्यान करने से चक्र जागरण की प्रक्रिया शुरू हो जाती हैं और उसे कई विशेष अनुभव होने लगते हैं . मगर ये चक्र जागरण होता हैं , भेदन नहीं. इसी लिए विभ्भिन रागों की रचना हुयी हैं , जिसमे ध्वनिओ के संयोग से कोई विशेष राग निर्मित किया जाता हैं जो की वह विशेष चक्र को भेदन कर सकता हैं . जैसे मालकोष राग के माध्यम से विशुद्ध चक्र को जाग्रत किया जा सकता है , इसी प्रकार कल्याण राग के निरंतर अभ्यास से भी विशुद्ध चक्र को स्पंदन प्राप्त होता है और वो जाग्रत हो जाता है. और एक बार जब ये चक्र जाग्रत हो जाता है तो साधक वायुमंडल में व्याप्त तरंगों को महसूस कर सकता है और उन्हें ध्वनियों में परिवर्तित कर सकता है , पर कल्याण राग जैसा राग सांयकाल के समय ही गाना उचित होता है. अर्थात सूर्य अस्त के तुरंत उपरांत. नन्द राग के द्वारा मूलाधार चक्र जाग्रत हो जाता है . और वेदों का सही अर्थ व्यक्ति तभी समझ सकता है जब उसका

elements in the air and can make anything out of this word in few moments. Truly our ancient sages were scientist but we were never bothered to understand.

मूलाधार पूरी तरह जाग्रत हो. इस राग को रात्रि के दुसरे प्रहार में गाना चाहिए. ठाट बिलाबल राग देवगिरी के प्रयोग से अनाहत चक्र की जाग्रति होती है व्यक्ति अनहद नाद को सुनने में और उसकी शक्तियों की प्राप्ति में सक्षम हो जाता है, इसी प्रकार सभी राग किसी न किसी चक्र को स्पंदित करते ही हैं.

लेकिन क्या, संगीत सिर्फ कुण्डलिनी जागरण के लिए ही हैं ? नहीं. संगीत की शक्ति से तानसेन ने दीपक राग का प्रयोग कर जहा दीपको को प्रज्वलित कर दिया था वही बैजू बावरे ने संगीत के एक विशेष राग का प्रयोग कर पत्थर को पिघलाकर उसमे अपना तानपुरा दाल दिया था और राग बंद कर दिया था जिससे की वो तानपुरा उस पिघले हुए पत्थर में ही जम गया था. ये सब तो कुछ उदाहरण मात्र हैं संगीत भी अपने आप में एक पूर्ण तंत्र हे. ब्रम्हांड के सभी पदार्थ ५ तत्व से ही निर्मित हैं . संगीत के सप्त सुर इन ५ तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं . संगीत से किसी विशेष सुर या राग के माध्यम से हम अपना वायु तत्व बढ़ाले और भूमि एवं जल तत्व को कम करदे तो मनुष्य अद्रश्य एवं वायुगमन सिद्धि प्राप्त कर लेता हैं .. यदि साधक सही तरीके से संगीत का प्रयोग करे तो बाह्य चीजों पर यही प्रयोग करने पर वह भी अद्रश्य हो जाएगा. या फिर उसके तत्वों के साथ संयोग करके तत्वों को बदल ने पर उसका परिवर्तन भी संभव हैं .

	या फिर संगीत के माध्यम से हवा में ही सबंधित कोई भी वस्तु के तत्वों को संयोजित कर के उसे कुछ ही क्षणों में प्राप्त किया जा सकता हैं . वास्तव में ही संगीत मात्र मनोरंजन नहीं हैं , हमारे ऋषि मुनि अत्यंत ही उच्चकोटि के वैज्ञानिक थे मगर हमने समझने की कभी कोशिश नहीं की हैं

Yantra Main Prana Pratishtha

यन्त्र में प्राण प्रतिष्ठा

The whole universe is be of yantra . in this whole universe the greatest yogis have felt that the controlling higher existence's form can be represented as a geometrical form known as yantra . and this all available for common man . the yantra does not merely the some lines and figure is made as a person belief ,but contain the very great higher science of the universe in these figure . this science is so great even a person can devote his whole life even than if he explored a percent that can be greatest achievement. In general sadhak are not much having the awareness of these science ,but when the sadhana kaal comes than

यह सारा विश्व ही यंत्र मय हैं ओर इस सम्पूर्ण ब्रम्हांड में जिस चेतना को महा योगियों ने अनुभव किया उसे ही यंत्र के रूप में परिणित कर साधारण मानवो के हितार्थ प्रस्तुत किया , यन्त्र केबल मात्र कल्पना नहीं हैं की कुछ विशेष आकृति अपने मन से बना ली ओर उसे प्रस्तुत कर दिया , यंत्र महा विज्ञानं तो इतना विस्तृत हैं की सारा जीवन भी इसमें लगा दे तो भी बूँद मात्र भी समझ पानां संभव नहीं हैं , साधरणतः साधक गण इस विज्ञानं की बारीकियों के प्रति अनिभिग से रह ते हैं , पर जब साधना काल आता हैं तो सोच में पड जाते हैं की कैसे इन यंत्रों को जल्द से प्राप्त कर लिया जाये . पर कभी समयाभाव तो कभी अर्था भाव के कारण यह संभव नहीं रहता हैं .

सदगुरुदेव भगवान् कहते हैं की क्यों छोटी छोटी से बातों पर गुरु पर भी निर्भर रहना , ओर जब हम उनके ही आत्मंश हैं तो क्यों नहीं इस बात को हृदय गम करते हैं की ज्ञान कीसभी विधियाँ , प्रक्रिया जो भी गुरुमुख से प्राप्त हैं , सदगुरुदेव/गुरुदेव त्रिमूर्ति जी से प्राप्त हैं वह तो हम सब के लिए हैं ही . क्यों नहीं हम कुछ तो सबल बने , ओर अपने

they started having worry how to get theses yantra so early, sometimes due to lack of finance or lack of times this will not be possible.

Sadgurudev ji used to tell that why to depend upon such a small ,small things on own guru . and when we are the part of his soul than why not we try to understand that even learning the any science through Gurudev is also a boon since every sciences comes from is divine. What are the process that has been available through Sadgurudev ji and and Gurudev Trimurti ji is, easily available to us. Than why not try to learn that and be a able shishyas of Sadgurudev jis.

But how we can provide or induce chetna to yantra even, are we having such a chetna in us. But we a shishy of Sadgurudev ji why we can think of such a things, his shishy is a depended no, no.. not possible ,if he has true loving and ability to absorbs his gyan.

All the god and goddess can be easily represented through yantra. In the beginning level a sadhak does not have such a aatmik power to attract his isht deity and able to get the desired result through them. Than how the inner feeling of sadhak could reach to his isht. Is there any medium. why not the

सदगुरुदेव जी, गुरुदेव त्रिमूर्ति जी का गौरव प्रवर्धित करे ,

पर हम चाह के भी यन्त्र को चेतना कैसे दे सकते हैं जबकि हम स्वयं उतने सक्षम नहीं हैं , तो फिर इतना कहना हैं की सदगुरुदेव जी का शिष्य ओर असक्षम , संभव ही नहीं हैं .....

सारेदेवी देवता भी यंत्रों के माध्यम से प्रदर्शित किये जासकते हैं क्योंकि प्रारंभ स्तर पर साधक की चेतना इतनी प्रखर नहीं होती की वह सीधे ही अंपने इष्ट को प्रत्यक्ष कर उनसे अपने हेतु कार्य संपन्न करवा सके , तो साधक की मन की बात कैसे ,उसके इष्ट तक कैसे पहुचे , की क्या कोई भी माध्यम नहीं हैं ?हाँ क्यों नहीं , सदगुरुदेव जी ही एक मात्र माध्यम हैं पर उनके द्वारा दिए गए यन्त्र रूपी भी ज्ञान भी क्या उनका का प्रतीक नहीं हैं.तो अब तो यन्त्र भी एक माध्यम न हुआ,साधक के किये जा रहे जप को परावर्तित कर ,प्रवर्धित कर उसके इष्ट तक पंहुचा देता हैं , वही इष्ट के आशीर्वाद को साधक तक पहुचने का सेतु /हेतु भी बनता हैं .

कर्म फलों की कालावधि को कैसे कम किया जाये , कैसे साधना की जटिलता को कम करके मानव जीवन को उसके लक्ष तक पहुचाया जाये . यही साधना क्षेत्र के महत योगियों का स्वप्न रहा हैं . इस यन्त्र रूपी उनके आशीर्वाद को चेतना कैसे दी जाये वही इस लेख की विषय वस्तु रही हैं . में आगे की पंक्तियों में ऐसे ही कुछ प्रक्रिया आपके सामने रख रहा हूँ. क्योंकि कैसे अपने प्राणों को अपने इष्ट से जोड़ दिया जाये .

1. सदगुरुदेव जी से प्राप्त कोई धुल का भी कण भी उतना ही प्रभावशाली हैं जितना की कोई पूर्ण निर्माणित यन्त्र .उनका स्पर्श हो जाये और उनके श्री मुख से उस धुल के कण के लिए भी यदि बोल दिया जाये की यह तेरे लिए शंकर ही हैं तो वह भगवान शंकर ही होंगे उस साधक के लिए.
2. किसी शास्त्राग्य से पूर्ण प्रमाणिक पद्धति से यदि प्रक्रिया संपन्न कर दी जाये तो भी उस यन्त्र में चैन्त्यता आजाती हैं.

only medium is the Sadgurudev ji, and his divine gyan in the form of yantra is also a medium. since Sadgurudev ji means gyan. The yantra get reflected or transmitted the sadhak jap to his isht deity and side by side blessing of isht also through that could reach to sadhak.

How to reduce the effect of past lives karma's , how to reduce the complexity of the sadhana so that normal person can easily also reach to his aim. this was/is the aim of great yogis and tantra field scholar. And how to energies this yantra is the main subject of this article. Here I am giving such processes through that how to energize the yantra can be easily and possible. means through that how our pran be one without isht.

Here getting even any single particle from Sadgurudev ji is also having the same effect or i could much better than a full flagged yantra. If he tells that he is a Shankar that that particle will be lord Shankar for that sadhak , and even more.

If complete process of energy inducement is done under a competent scholar and well versed in shshtriy way of energisation.

Even any shabd or any word for a

3. किसी पूर्ण कुंडलिनी जाग्रत साधक के मुख से उच्चिरत शब्द या संकल्प मात्र से भी वह यन्त्र प्राण प्रतिष्ठित बन जाता हैं

एक सरल सी दुर्लभ प्रक्रिया आपके लिए भी ...

प्रातः ४ से ६ बजे के मध्य उठे , स्नान कर स्वेत वस्त्र धारण कर ,उतर दिशा की और मुह करके , सामने भगवान् रूद्र ओर सदगुरुदेव जी के चित्र के सामने बैठे सामने बजोट पर भी स्वेत वस्त्र बिछाएं .

पवित्री करण: बाये हाँथ में जल लेकर निम्न संकल्प करे.

ॐ अपवित्रो वा पवित्रो सर्वास्थां गतो स पि वा या स्मरेत पुण्डरी काक्षं साः बाहय आभ्यंतर: शुची: |

आचमन : सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . ओर जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वरः ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि |

पूजन :

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्य समर्पयामि ||(हांथों में

sadhak having fully awake kundalini is also induces such chetna,

One very easy and rear process for you.

Awake early morning between 4 to 6 am and after taking shower and completing daily routine process , wear white colored cloths and sit on asan having white colored cloth covering and also having bajot is also having white color cloths.

Pavitri karan:-have little water ion your left hand and take oath like this

Om apavitro va pavitro sarvasthan gatoopi va ya smaeret pundarikaksha saah bahyaabhyanterh shuchih"

Aachman: take little water in the right hand and chant the mantra 4 times and than drink the water.

Om aatam tatavm shodhyami swaha.

Om vidya tatavm shoudhyami swaha.

On gyan tatavm shoudhyami swaha.

Om shiv tatavm shoudhyami swaha.

Guru dhyan :

Gurur bramha gurur Vishnu gurur devo maheshwarah.

Guru sakshat parbramh tasmai shree

जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

यंत्र की चांदी या तांबे के पात्र में रख कर स्नान करवाए . इसके बाद 108 बार यन्त्र गायत्री मन्त्र पढ़े .

ॐ यंत्रराजाय विद्म्हे महा यंत्राय धीमहि तन्नो यन्त्र : प्रचोदयात |

निम्न मन्त्र का 108 बार उच्चारण करे .

ॐ आं क्रों ह्रीं असि आ उ सा य र ल व् श ष हंस अमुकस्य (यन्त्र का नाम यहाँ पर ले) त्वाग्र शास्त्र मांस मेदोऽस्थि मज्जा शुक्राणि धातव: अमुकस्य (पुनः नाम ले)यंत्रस्य काय वाड.मन श्चाक्शु: गोत्र घ्राण मुख जिव्हा सर्वाणि इन्द्रियाणि शब्द स्पर्श गंध प्राणा यान समानोदान व्याना: सर्वे प्राणा: ज्ञान दर्शन प्राण श्च इहेब आशु आगच्छत आगच्छत संवोषट स्वाहा |अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ: ठ: स्वाहा | अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट वषट स्वाहा |अत्र सर्वजन सौख्याय चिरकालं नन्दतु वद्घातां वज्र मय भवन्तु | अहं वज्रमयान करोमि स्वाहा |

हाँथ में फूल लेकर यंत्र पर डाले

"नाना सुंगंध पुष्पाणि यथा कालोद भवानी च

पुष्पान्जलीर मया दत्ता गृहाण परमेश्वरा "

guruve namh.

Shri guru charnobhyo namh dhyan samarpyami.

Poojan :

Shree guru charno bhayo namah paadyam samarpyami.(offer the water to his holy feet)

Shree guru charno bhayo namah ardhy samarpyami.(offer water inhis hand)

Shree guru charno bhayo namah kumkum tilakm ch samarpyami.(offer kumkum and tilak)

Shree guru charno bhayo namah dhoopm deepam darshyami.(offer dhoop and deep)

Shree guru charno bhayo namah naivdyam navaidyami .(offer naivaidya to Sadgurudev and yantra)

Than place the yantra in silver or copper plate and wash through water and chant 108 times the mantra.

Om yantraaraajaay vidmahye mahayantray dheemahi tanno yantrah prachodyaat.

Thanchant 108 times following mantra.

Om aam krom hreem asi aam u sa ya ra la va sha hans amuksya (here

प्रार्थना :

आह वानं न जानामि न जानामि विसर्जनं

पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर

मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर

यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में |

जप समर्पण : हाँथ में फूल गुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे

ॐ गुह्यति गुह्य गोप्ता ग्रहाण स्मत कृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वत प्रसादन महेश्वर ||

प्रार्थना :

ॐ पूर्ण मद : पूर्णमिदं पूर्णात पूर्ण मुदच्यते पूर्णस्य पुर्णा मादाय पूर्ण मेवाव शिष्यते ||

फिर जल को अपने पर छिणकते हुएउठ जाये

ॐ शांति: शांति: शांति:

says the name of the yantra)tvaagra tvaagra shastra maans medosthi majja shukrani dhatavh amukasy(again take the same name) yantrasy kaay vaagyman ch kshushah gotra ghran much jihwa sarvani indrayani shabd sparsh gandh praana yaan samanodaan vyanaah sarve pranaah gyan darshan praanshch iheb aashu aagachhat aagachhat samvoshat swaha.atr tishtht tishtht thah thah swaha.atr mam sannihitana bhvt bhvt vsht vsht swaha.atr sarvjan soukhyay chirkalaam nandatu vdwatam vajramay bhavntu,aham vajramyaan karomi swaha. Take some in the hand offer on the yantra. *Nana sugandhani pushpani yatha kaalod bhavani ch* *Pushpanjalir maya data grahaan parmeshwara*". *Prayer:* *Aawahanm n ajanami na janami visarjanam,* *Pujam chev na janami kshmyta parmeshwara* *Yat pujitam maya dev pari purn tadstu*. Offering of jap: take some flower and	

offer to the Sadgurudev and yantra. *Om guhyti guhy gopta grahaan smat krit japam siddhi: bhvtu tavat prasadan maheshwar*. Prarthana: *Om purn madah purnmidam purnaat mudchyte purnasy purnamaadaay purn mevava shishyta*. Than sprinkle little water on yourbody and stand up . Om shantyh shantyh shantyh.	

Soot Rahasyam - Part 3

(पारद विज्ञानं तंत्र के अप्रकाशित , अप्राप्य गोपनीय ग्रन्थ की श्रंखला का अगला भाग)

Prana is a bramha tatav enclosed in our body ,surrounded by body , desire, senses, to get free from that and relies its own nature is the result of prana. Whole life business depends upon that, rishi vashisht notonly due to intense research search the prana but alos founded pranayaam through that notonly human body 's power/strength canbe increade but he canalo contact to other loks.(this is other facts that othaer than siddhashram ,no other place this science is poreserved.many times Sadgurudev notonly fully exemplified this to thir shishyas but their deepest secreats are also revealed to the shishyas.)

He told that the life force of outer living

प्राण हमारे शरीर,इन्द्रियों और उनकी विषय वासनाओं में पाशबद्ध "ब्रह्मी" अथवा चेतना तत्व है,उसे उस बंधन से मुक्ति दिलाकर चैतन्यता का बोध करना ही प्राणों का परिणाम है. इसी से जीवन का सारा व्यापर चलता है.वशिष्ट ने वायु में से ही प्राण-विद्युत की गहन शोध करके ही प्राणायाम के उन विधानों को खोजा था जो न केवल मानवीय क्षमताओं को बढ़ाते हैं बल्कि,मनुष्य का सम्बन्ध अन्य लोको की सूक्ष्म शक्तियों से भी जोड़ते हैं(ये अलग बात है की सिद्धाश्रम के अतिरिक्त इस ज्ञान को वर्तमान में और कहीं संरक्षित नहीं रखा गया है ,और सदगुरुदेव ने कई बार अपने शिष्यों को इस ज्ञान से न सिर्फ परिचित करवाया है ,बल्कि इस ज्ञान के सूक्ष्मातिसूक्ष्म पक्षों को भी प्रायोगिक रूप से समझाया है).

उन्होंने बताया था की स्थूल जगत की समग्र जीवनी शक्ति का केंद्र सूर्य ही है, उसके पांच प्राण तत्व हैं.प्राण को ऋषियों ने २ भागो में विभक्त किया है.

अणु- अणु का संलयित रूप पदार्थ है और अणु पदार्थ के संगठित रूप में ही दृष्टिगोचर होता है, अपूर्व शक्ति संपन्न होकर पदार्थ को सक्रीय शक्ति प्रदान करता है.

visible worlds , is sun. this tatav has five prana part. Prana has been divided in two part by the ancient rishis.

Anu- the combined form of various anu is the matter.any can be visible once is condensified by the other anus. This provides the infinate power to the matters.

Vibhu- in the chetna world ,what is visible , life hirangarbh rup is the vibhu.

If sun rays are not able to reach to earth than all the activity here in the planet earth, became stand still since whatever activity shown in the planets is because of sun. the oxygen basic elements to sustain life in this palets comes as a pranan from the sun. this is the reason where too much cold or less sunrays reaches , there also low percent of oxygen than the lungs has to work hard to get required oxygen , the outcome is the cough and cold , like that illness generally more in the cold weather like sititaion.

We all heard the sun namaskar process or seen that or work onthat , but only saluting the sun and offer water to the sun can notcomplete the process. The sun not only sustained power , force and redience of us but alos our past lives karmas, and the power of sdhana completed by u sin past lives too. And through an special process /way/mantra one can get that power through sun, and the amzing power and ability and also the secreats of sun science can be achieved.here I am just introducing to you the secreat procedure of special ardhy the complete process can be get with describe in datails through

विभु- चेतना जगत में जीवन पंकर दृश्यमान होता है. जैसे हिरण्यगर्भ समष्टि रूप विभु ही हैं.

यदि सूर्य की किरणे पृथ्वी तक न पहुचे तो यहाँ सर्वथा स्तब्धता, हलचल से विहीनता ही दिखाई देगी. जीवन का आधार मणि जनि वाली ऑक्सिजन सूर्य से ही प्राण रूप में प्रवाहित होकर आती है. तभी तो जहाँ ज्यादा ठण्ड होती है या सूर्य का प्रकाश लंबे समय तक नहीं पहुच पता है वहाँ वायु विरल हो जाती है अर्थात वहाँ आपको ऑक्सिजन ग्रहण करने के लिए फेफड़ों से अधिक जोर लगाना पड़ता है, और श्वाँस की बीमारियाँ दमा आदि भी ठण्ड में मौसम में ही अधिक होती है.

सूर्य को नमस्कार करना तो हम सभी ने सुना है,किया है या देखा है.लेकिन सिर्फ नमस्कार करने से या सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर देने से ही क्रिया पूर्ण नहीं हो जाती है .सिर्फ शक्ति, सहस और तेजस्विता नहीं अपितु तंत्र का एक गूढ़ पक्ष ये भी है की सूर्य हमारे प्रारब्ध और पिछले कई जीवनों की साधना और सामर्थ्य शक्ति को भी संरक्षित करके रखता है और एक विशेष क्रम और मंत्र के द्वारा उस ज्ञान को प्राप्त भी किया जा सकता है. और उस अद्भुत क्षमता और सूर्या विज्ञानं वा सिद्धांत के गोपनीय रहस्यों को आत्मसात भी किया जा सकता है उसे प्रायोगिक रूप से संपन्न करने की क्षमता भी. यहाँ पर मैं उस विशेष अर्घ्य की विधि बता रहा हूँ और वो दुर्लभ मन्त्र भी ,परन्तु इसका क्रियात्मक विधान आप सदगुरुदेव से ही प्राप्त करें और क्यूंकि वे अपने प्राणबल से आपको इसके सफलता प्रदान कर सकते हैं,और वही उचित है , मैं वचन में बंधा हूँ इसलिए मात्र यहाँ पर परिचय ही करवा रहा हूँ.

प्रतिदिन प्रातः काल में सूर्योदय के समय एक ताम्र पात्र में कुमकुम.राई,जवा पुष्प,कुश आदि डाल कर रखें और पात्र में गंध,पुष्प,नैवेद्य आदि के द्वारा सूर्या और उनकी अंग पूजा करे.उसी पथ को करते हुए सूर्य मन्त्र का १०८ बार जप करे.तत्पश्चात सूर्य को पूर्ण अर्घ्य प्रदान करे.इसके बाद पुनः १०८ बार मंत्र का जप करें इसके साथ की जो गोपनीय क्रिया और सम्पुट मन्त्र हैं वो आप गुरुदेव से ही प्राप्त करें ,वही इससे सम्बंधित दीक्षा मंत्र और गोपनीय पद्धति दे सकते हैं. जो मन्त्र मैं यहाँ पर मैं आप लोगो के समक्ष रख रहा हूँ वो यदि आप प्रयोग करते हैं तो आपको अपना पूर्वजन्म समझने में सहयोग करेगा. जिससे इस सिद्धांत को समझना सहज हो सकता है.अर्घ्यदान करने का दुर्लभ मंत्र निम्न लिखित है .

Sadgurudev ji, I am under the oth of this science that s why I can only provide to you the introduction parts. Eavery day in the morning hours in a pot made of cuppoer metel,fill kumkum , rai, java flowers, and through gandh , flowers , naivaidya do the pooja to sun , than on the same place do recite 108 times the sunmantra, than offer water to sun. the special process and secreats samput mantra of this science , it would be better , you will get from Gurudev ji. Only they can only give toy the secreat s Diksha mantra and process for that. Here iam giving you the mantr which will help you to understand your past live and also get a way to go for surya siddhanta sadhana , th e confidential mantra is.. Om bho dev prathvi pal sarvshaktisamanbite ,mamardhych grahan tvam purv vidya prakashy.	ॐ भो देव पृथ्वीपाल सव्र्शक्तिसमंविते,ममार्घ्यांच ग्राहण त्वं पूर्व विद्या प्रकाशय.

Swarn Rahasyam - Part 3

स्वर्ण रहस्यम-3

रस तंत्र और उसमे असफलता के कारण

Ras Tantra and the causes of failure in that,well Ras Shastra is not fiction science nor a cheek that is a misnomer, All power is infinite potential value perforation of mercury. Many works have been described in the series like Anand Kand, Rasoupnishad, Rasratnakar, Rasarnav, Rashriday Tantra, from the Ras shastra the knowledge of Dhatuvad and Dehvad accomplishment is done.The details are given in the Vedas, actually these are the texts which proved the code metheods of Dhatuvad. Between Ras Scholars 54 meanings of that are very publicised and famous. Out of these facts I m giving a meaning of only one of the shlokas from it

रस शास्त्र कोई कपोल कल्पना नहीं है और न ही ये कोई मिथ्या है,सर्व शक्ति मान पारद की वेध क्षमता अनंत है. तभी तो आनंद कन्द , रसोपनिषद, रसरत्नाकर , रसार्णव,रसहृदय तंत्र आदि अनेक ग्रंथों में उसकी श्रृंखला पद्धति का वर्णन दिया गया है, रस शास्त्र के ज्ञान से धातुवाद और देहवाद की सिद्धि होती है इसका विवरण वेदों में दिया गया है, यहाँ तक की जिस श्रीसूक्त का पाठ हम लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए करते हैं, वस्तुतः वो धरुवाद को सिद्ध करते की कूट विधियाँ हैं, रस मर्मज्ञों के मध्य इस सूक्त के ५४ अर्थ प्रचलित हैं . मैं इस श्री सूक्त में से मात्र एक श्लोक का अर्थ उदाहरण स्वरुप यहाँ पर दे रहा हूँ.

आदित्य वर्णे तपसोऽधिजातो,वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः .

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः.

इसके तात्विक अर्थ पर जरा ध्यान दीजिए –

" हे अग्निदेव, हे भगवान सूर्य आप मुझे उस क्रिया में पूर्ण

as an example.

"Adityay Varne tapasoudhijato,vanaspati vrikshouth bilva:

Tasya Phalani tapasaa nudantu mayantara yashch baahya alakshmi:"

Just pay attention to its intrinsic meaning - "Oh Lord of Fire, Sun God you please bow me the blessings of success in that action and knowledge above all plants and trees and the best among them i.e. the best Bilv (Bell) fruit juice which converts the metals copper by fire to put in baking and produce an innocent Laxmi (Gold, Silver) are associated with the receipt and by which I can finish away all my sorrows and pains (Although the same stuff that put confidential in this shlokas given the method of baking, but our goal is not to mention that it here.)

We were always been told the same thing by Sadgurudev, that the detail secrets of this Dhatuvad action is not so comfortable, easy and even not that casual that u ask for it to master & he would give u. First we must show our urge, desire,

सफलता प्राप्त होने का आशीर्वाद और ज्ञान दीजिए जो की सभी वनस्पतियों और वृक्षों में सर्वश्रेष्ट बिल्व (बेल फल) रस के द्वारा ताम्र आदि धातुओं को अग्नि में पुट पाक कर निर्दोष लक्ष्मी(स्वर्ण,रजत) की प्राप्ति से सम्बंधित हैं. और जिसके द्वारा मैं अपने दुःख-दारिद्रय को दूर कर सकू.

(हालाँकि इसी श्लोक में वो गोपनीय पुट पाक की पद्धति भी दी हुयी है, पर यहाँ पर उसका उल्लेख करना हमारा ध्येय नहीं है.)

सदगुरुदेव स्वयं यही बात हमेशा हमें समझाते थे की ये धातुवाद की क्रिया के रहस्यों का विवरण इतना सहज नहीं है की, गुरु के पास गए और उसने उठाकर दे दिया, पहले आप अपना समर्पण भी तो दिखाइए , आप तो आते हैं, घंटे दो घंटे या ज्यादा से ज्यादा २ दिन साथ में रहते हैं और ये अपेक्षा करते हैं की गुरु आपकी चाटुकारिता भरी बातों से प्रसन्न हो जाये और आपको वो गोपनीय कुंजी आपके हाथ में पकड़ा दे और आप उसे लेकर अपना कर्जा दूर कर दे. और ऐश्वर्य के चरम शिखर पर पहुच जाये .

मुझे भी अपने जीवन में ऐसे ही लोग मिले हैं, उनका लेना देना ज्ञान से नहीं है, वो ये नहीं समझते हैं की गुरु सेवा के नाम पर पहले अपने जीवन को ऐश्वर्य से मुक्त करेंगे फिर गुरुसेवा के लिए समय और साधन देंगे जैसी बातों से बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता. इस शास्त्र को समझने के लिए लगातार धैर्य और उत्सुकता का चरम भाव बनाये रखा जाता है. इस ज्ञान को तो प्रायोगिक रूप से बैठकर ही समझा जा सकता है और यदि कोई इस ज्ञान को देना चाहता है तो फिर वो जब बुलाए, जहाँ बुलाए वहाँ पहुचना ही चाहिए , क्यूंकि जो विशुद्ध नहीं होगा उसको ये विद्या फलीभूत भी नहीं होती.इसलिए लगातार खुद को मांजते रहना चाहिए.

किन कारणों से इस विद्या में सफलता नहीं मिल पाती, इन पृष्ठों पर मैं आज उन्ही कारणों का वर्णन कर रहा हूँ-

अनुभव शुन्य क्रिया करने से,जो क्रिया समझाई गयी हो उसे पूरी तरह से न करने से,अस्थिर चित्त से क्रिया करने से,शास्त्रों के वाक्य में विश्वास न करके मन से क्रिया करने से, ये क्रिया उन लोगो को भी फलीभूत नहीं होती जिनमे हानि झेलने का सहस नहीं होता या जिनके पास इस क्रिया के लिए पर्याप्त धन का आभाव हो,बिना सदगुरुदेवके आशीर्वाद और मार्गदर्शक के क्रिया करने से,समय पर आवश्यक औषधि और पदार्थ न मिलने से,किसी भी पदार्थ का सही ज्ञान न

dedication and of course seriousness for achieving it. If you come, for an hour or two hours with more than 2 days to live and then expect the things to shapeup as you wann it ! Then you try to please the master by buttering him and you ll get that secret key held in your hand and you took it away to pay off your debts and ultimately would reach at the peak of prosperity??? No no no....

I also found the similar people who have nothing to do with the knowledge, And they cannot make fool of their masters by giving such stupid statements that on account of master service u will enjoy the worldly leisure and master would not be able to see this? Hnnaaa…. No dear it is not at all like that... You know what any single action is not hidden from our Master's eyes. So to understand these scriptures constantly need to be extremely patient and a sense of curiosity is need to maintained. This knowledge can then be understood and treated as practically sitting and then someone wants to give this knowledge, whenever he call you, as called there u must reach to learn it promptly. Because whosoever will be pure can get this knowledge and fruits of it. Which are those reasons due to which we do not get success in this discipline, these lines would describe

होने से और उसकी जगह उसका विकल्प प्रयोग करने से, गुरु या दैवीय कोप से, यदि गुरु असंतुष्ट है तो भी ये क्रिया नहीं हो सकती,आलस्य का जोर होने से, पूर्वजन्म के पापों की प्रबलता से,इन्द्रिय भोगो में व्यस्त रहने से, चरित्र की कमजोरी से, गुरु के साहचर्य में ना होने से मन्त्र और रस सिद्धि की कोई क्रिया नहीं हो सकती.

जिनके पास संसाधन और धन की उचित व्यव्वस्था नहीं है उन्हें बिलकुल भी इस क्षेत्र में प्रयास नहीं करना चाहिए.ये क्रियाएँ लगातार ज्ञान अर्जन करने से ही सिद्ध हो सकती हैं. इसलिए पहले आत्म अवलोकन करके ही आगे बढ़ना चाहिए

the reasons as:

By the zero action experiment (Anubhav Shunya Kriya) what actions have been explained not to let it all out, the unstable mind of the action, Scriptures of the sentence by not believe in the mind to action, these actions of people who would also not fructify. Of whom would not withstand the losses or who lack sufficient funds for this performing this activity, without Sadgurudev's blessing and guidence action, the time not getting the necessary herbs, medicines and materials, the absence of any accurate knowledge of material and his choice to use his place, the master or divine anger, even if you master this action cannot be dissatisfied, of laziness emphasis, from being predominantly of the sins of Past life, character weakness, not being master of the mantra of the association and cannot give the accomplishment in Ras shastra nor can any action be perform.

Well who do not have appropriate resources & money should not step forward or attempt these activities of this field. These actions may prove to be the constant acquisition of knowledge and observation. Therefore one should proceed it only after the first self-observation stage.

As you all of know that what is the importance of three sakti namely shabd, shakti, maya (mahasarasvati,mahalakshmi,mahakaali), the uses of these things gives a person all the required things which can leads a man to becomes gods. Like this one proverbs used in tantra that shows visible and invisible both ways show the divine power of all the three shakti.i.....

"krita trishakti mudrayam tivra daridryanashini"

Now today we all, will discuss the secret process of this mantra i.e. Sfotikaran kriya and get the secret by which no one can stop us to destroy the very disease of the society have to take help of intelligence and patience. The OM is divided in letter as a,u,m,. this great mantra has have the hidden secret of aishvarya ultimate riches in all sense.

A=al hartaal

U=udak paara

M=manovha manshil

Respected one these are the main power ful elements , if given opportunity nothing can stop you to get fulfill your wishes. And even your dreams comes to reality. But all these not only mix but , only cooked through fire then the siddh ras can be found by which you can have the richness as our sadgurudev ji wished for us. Take equal quantities of all these mentioned substance and mix kharal with filtered liquid of kagaji nimbu. In the process of kharal this all substance has to be dried up. This process has to be completed seven times in a row..

And after completing this process make a ball of the substance available and put in between the richhaaron kle , and heated up/cooked up through fire. After the desired heating process through the fire ,on sprinkleing only 1 ratti of this power on liquefied copper or silver will get you the things you are desired of. Like this so many process available has very hidden meaning in that by which

“nirdaridryamayam jagat"(remove the poverty from all the world) can be done. So now come forward to materize our sadgurudevs dream.

Ayurved

आयुर्वेद और सौंदर्य समस्याओं का समाधान

1.Take equal quantity of NARAKCHOOR and SAMUNDRAFEN and get them crushed in water and apply on face. When mixture or now we can say face pack get dry then wash it. Applying this norm for some days can solve pimple problem. 2 .Above explained problem can resolve with the mixture of black pepper (Kaali mirch) with some juice of	१. नरकचूर और समुद्रफेन –दोनों को संभाग पानी में पीसकर चेहरे पर लगाएं. सूकने पर चेहरा धो धो लें.कुछ ही ही दिनों के प्रयोग से कील मुहासे दूर हो जायेंगे. २. जामुन के थोड़े से रस में कालीमिर्च को घिसकर लगाने से भी उपरोक्त समस्या दूर हो जाती है. ३. तुलसी के पत्तों का चूर्ण मक्खन में मिलाकर चेहरे पर रगड़ने से मुंहासे दूर होते हैं. ४. रात में आंवले का चूर्ण २ चम्मच लेकर पानी में भिगो दे और सुबह उस पानी को कपडे से छान कर

Blackberry (jamun). 3- To solve moles problem (muhaase) leaves of Basil (tulsi ke pattey) crushed with Butter (makkhan) and then acquire paste use as a scrubber on your face. 4 .At night take 2 spoons AMLA POWDER and put in water. At morning filter this water with clean cloth and then wash your face with it. It helps you to get rid of blemishes. 5 .By applying milk cream with wheat pouder on face can solve blemish and dryness problem of your face. 6.By applying Coconut Oil (nariyal ka tail) with the juice of Lemon (nimbu) will increase inner beauty and make you face more beautiful. 7.If you have oily face then pour 3 drops of Vinegar (sirka) in water and wash your face with it and after this clean your face with soft towel. It will make your skin shiny. 8.If your face is dry and dull then drink one glass Carrot Juice everyday and continue it till 15 days. This will help	मुह धो लेने से झाई दूर हो जाती है. ५. दूध की मलाई में गेहूं का आटा मिलाकर लगाने से चेहरे की झाई और सूखापन दूर हो जाता है . ६. नारियल के तेल में नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर लगाने से चहरे का सौंदर्य बढ़ता है और कांति में वृद्धि होती है. ७. यदि चेहरा अधिक तैलीय हो तो पानी में सिरके की तीन बूँद डालकर चेहरा धो ले.फिर मुलायम तौलिए से धीरे धीरे चहरे को सुखा ले , चेहरा निखर जाता है. ८. यदि चेहरा सूखा हो और उस पर कोई कांति न हो तो १५ दिन तक नित्य १ गिलास गाजर का रस पीने से भी चेहरे की आभा बहुत बढ़ जाती है . ९. हरा धनिया पीसकर मस्से पर लगाने से मस्से दूर हो जाते हैं. १०.नाखूनों को मजबूत बनाने के लिए उन पर नीबू के छिलके रगड़ना चाहिए. ११.नीबू के रस में बरगद की थोड़ी से जटा पीसकर उसे बालों पर लगा लें,फिर आधा घंटा बाद बालो को धो लें,और उन्हें सुखाकर नारियल का तेल लगाने से बालों का झडना बंद हो जाता है.तथा बाद चमकदार और लंबे होने लगते हैं.

you to feel more attractive.

9.By applying paste of Coriander (hara dhaniya) on moles can solve your problem.

10 .I n order to make your nails strong it's better to rub them with Lemon's Rind that is called lemon's skin (nimbu ka chhilka).

11- Crush Lemon juice and Banyan Coir (bergud ki jata) together and apply on hair, after 30 minutes washed them. When they get dry apply Coconut Oil on them. It will reduce hair fall as well as make your hair shiny and long.

Totaka Vigyan

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

f anyone rubs Dhatura (Harebell), Adrak (Ginger), Baad, Moonga (Coral) and its base portion of Moonga (Coral) and puts its Tilak on the forehead and goes in front of any rival, the rival will loose all the confidence… One can gain the Vashikaran power – Enchantment power (Power of hypnotism in which once person gets trapped performs the act according to the power ruler) by tying the Palash leaf on the hand in Hast Nakshatra… If on Bhojpatra, name of the rival is written and is dipped in honey, that rival comes in total control of the person… If anyone puts Tilak of Gular Root (Sycamore - Name of the tree) on the forehead, one can gain the power of Vashikaran (Enchantment)…	१.धतुरा,अदरक,बाद और मूंगा की मूल संभाग लेकर पानी में घिसकर तिलक कर शत्रु के सामने जाये तो शत्रु भय ग्रस्त हो जाता है. २.हस्त नक्षत्र में पलाषा का पत्ता हाथ में बांधने से सर्व वशीकरण की क्रिया होती है. ३.भोजपत्र पर शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबोकर रखने से वह साधक के वश में हो जाता है. ४.गूलर की जड़ घिसकर तिलक करने से वशीकरण होता है. ५.वनगोभी और मयुरशिखा को मुह में या रखने या मस्तक पर धारण कर कोर्ट में अपने मुक़दमे के लिए जाने से कोर्ट के मामले में विजय प्राप्त होती है. ६.जिन व्यक्तियों को स्वप्नदोष की

By keeping Vangobhi or Mayurshikha in the mouth or putting on the forehead results in the victory in the court cases…	शिकायत होती है यदि वे अपनी माँ का नाम एक कागज पर लिखकर तकिये के नीचे रखकर उस तकिये पर रखकर सो जाये स्वप्नदोष नहीं होता है.
6. The person who suffers from the Nocturnal Emissions (Swapnadosh), if they sleep by writing their mother's name on the paper and keeps it below their pillow will definitely gain the effect…	७.लाल हकीक को नाग बनाकर यदि पास में रखा जाये तो मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है.
If any person makes the snake of Red Hakeek (sort of a stone), it will result in the development of the mental strength…	८.फिटकरी सिरहाने रखकर सोने से भयावह स्वप्न का दिखना बंद हो जाता है.
By keeping Fitkari (Alum) near the head in night, all the nightmares get stops…	९.दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में लोहे की अंगूठी धारण करने से पथरी रोग धीरे धीरे दूर हो जाता है.
By putting the iron ring in the middle finger of the right hand helps in curing the stone problem…	१०.छुई मुई की जड़ गले में बाँधने से खांसी दूर हो जाती है.
) By wearing the Chui-Mui root(Mimosa root) in the neck helps in curing of cough…	११.जिन लोगों की नाभ या धरण अपनी जगह से हट जाती है वो यदि छुई मुई की जड़ शनिवार को लाकर उसका छल्ला बनाकर कमर में धारण करे तो नाभ ठिकाने पर आ जाती है.
1. The persons whose Navel or Umbilical Cord gets dislocated from the position, if they wears the Mimosa root (Chuimui root) ring in waist the navel will automatically comes at the original place…	....

Vaam Tantra And Woman

वाम तंत्र और नारी

man(male) is by nature is a worshipper of Vaam marg. Woman is the main factor in his life to again draw man on right path or Dakshin marg. Many person will just laugh on that but its true that .. says one great scholar, but how do we believe that we all already knew that we are the follower of Dakshin Marg ,.. as many of you already married one, or going to soon be married or at least witnessed some marriage function specially held at Hindu. Have you noticed before that saat feron (7 round of fire), girl sit right side of the boy so boy position is left to girl, means that man is vaam side . and in 7 promises girl ask to boy if you fulfill this promise than she will sit to your left side or vaam side, when girl sit Vaam side i.e. left side than boy	पुरुष तो स्वाभाव से ही वाम मार्ग का उपासक होता हैं और यह तो महिला या नारी ही हैं जो उसे सीधे रास्ता या दक्षिण मार्ग पर ये आती हैं , अधिकांश व्यक्ति इन बातों का उपहास ही उड़ायेंगे , परन्तु यह तो एक सत्य हैं... तंत्र जगत के एक विद्वान का यही कथन हैं , पर हम कैसे इसे मानेगे जब की हम सभी दक्षिण मार्ग के उपासक हैं . आप मैं से आधिकांश विवाहित हैं या विवाह करने शीर्घ जा रहे हैं या कम से कम किसी भी हिन्दू विवाह कि प्रक्रिया तो देखी ही होगी . क्या आपने सात फेरों से पहले किप्रक्रिया ध्यान से देखी ही होगी . जिसमें कन्या , लड़के के सीधे हाँथ की ओर ही बैठती हैं अर्थात पुरुष कन्या के परिपेक्ष में वाम भाग में बैठ पाया जाता हैं , और जब कन्या सात बचन लड़के से मांगती हैं ओर जब लड़के के द्वारा वादा किया आजाता हैं तब कन्या वहां से उठ कर लड़के के वाम पक्ष में जा कर बैठ जाती हैं .मतलब लड़के के लिए वह वाम पक्ष में जाती हैं.अब आप को कुछ कहना हैं .

position is left to right. What you want to say.

Shakti is always Vaam side to devta or god. So Vaam side can not be just consider bad , inferior or dirty is because some one or some group did wrong taking benefitted of that in this age or from any era. Taking on the name of Vaam Marg .

We all are the child of Sadgurudev ji at least should have courage to read and digest the philosophy behind that , just like reading a detective novel you can not be detective, same thing applied here.atleast have a courage to read this.

Once swami Vivekanand ji when he was very yong , describe about some so called bad practices happened in Some KAPALIK marg, sri Ramkrishana Paramhansa patiently listen that and instructed to swami ji *not to blame that since many man already belong to that path comes out a great personality..*

What to consider "chewing tobacco" bad or good, yes it is bad naturally from scientific reason , but you know that great saint of Utternchal sri Neem Karori baba ji had been asked to criticized , he simply refused said that if someone gaining enjoyment why should he blame that.

So it's the view differ from person to person. i am not advocating this is right or wrong leave it upon you and your wisdom to decide.

I am not here discussing that

शक्ति हमेशा से देवता या ईश्वर के दाहिनी ओर होती हैं. तो वाम मार्ग केबल इसलिए गलत /भांति /गलत प्रचार का शिकार बन रहा हैं या हेय हैं क्योंकि किसी समय किसी युग में अनेको ने /अनेको ग्रुप/समूह ने इस के आड़ में अपने स्वार्थ मय मतलब की कुत्सिक प्रक्रिया की और उन्हें वाम मार्ग का नाम बताया .इस कारण इस मार्ग का उच्च कोटि का चिंतन अब काल के गर्भमें हैं .

हम सभी जो सदगुरुदेव के बच्चे हैं कम से कम इतना सहस तो रखे की इस ओर के ज्ञान को कम सेकम खुले मन से सुने तो /समझे तो , जिस प्रकार किसी भी जासूसी उपन्यास के पड़ने मात्र से आप जासूस नहीं बन जाते हैं यही नियम तो यही लागु होता हैं .कम से कम इस बारेमें पढने का तो साहस रखे ही,

कभी अपने युवा काल में स्वामी विवेकानंद जी ने अपने गुरुदेव श्री राम कृष्ण परमहंस जी से किसी कापालिक मार्ग द्वारा की गयी प्रक्रिया को देख कर उसका खंडन करने को कहा , परमहंस देव जी ध्यान से उनकी बात सुन कर बोले उस मार्ग की आलोचना ठीक नहीं हैं क्योंकि बहुत सारे लोग उसके माध्यम से उच्च स्तरीयता प्राप्त कर चुके हैं .;

आप तम्बाखू खाना को अच्छा या बुरा क्या कहेंगे, हाँ वैज्ञानिक दृष्टी कोण से तो निश्चय ही सही हैं पर आप क्या जानते हैं जब एक उच्च कोटि के संत नीव करोरी बाबाजी से इस को बुरा बता कर किसी विशेष शिष्य को रोकने को कहा गया था , तो उन्होंने मना कर दिया कहा की जब उसे उसी में आनंद आता हैं तो में इसको गलत क्यों कहूँ.

तो इस तरह से हर व्यक्ति के विचार किसी एक ही बात को लेकर अलग अलग होते हैं, में यहाँ किसी भी एक पक्ष का तरफ नहीं हूँ , हाँ क्या सही या गलत हैं आपके बुद्धिमत्ता पर छोड़ देता हूँ .

consider woman as a object of enjoyment or object of worship. Both view not reflect true situation.

में यहाँ ये नहीं कह रहा हूँ की आप नारी को एक उपभोग की बस्तु या पूजा की बस्तु माने , वास्तव में दोनों की दृष्टी कोण गलत हैं .

Yoga teaches you to proceed on the path by controlling so called bad or dirty thought. But its not very helpful for common man, since the situation we know that already (here i am saying of mental condition, not on physical way).we are much bounded by asth pash. since suppressing of feeling often create emotional problem

योग हमें अपने मन ओर इन्द्रियों को नियंतरण करना सिखाता हैं , साथ ही साथ हमारे बुरे /अश्लील विचारों को भी रोकना सिखाता हैं पर हम तो अपनी वास्तिविकता को जानते हैं की ये तो साधारण व्यक्ति के लिए बहुत कठिन होता हैं .(में यहाँ केबल मानसिक अवस्था की ही बात कर रहा हूँ) हम तो अष्ट पाश से बंधे हैं ,और मानसिक भावनाओ को दबा देना तो कई अन्य समस्या उत्पन्न कर देता हैं .

*But **Tantra** take a different approaches to proceed on the path he accept of the emotional and feeling bad or dirty may be, it does not criticized on that. He simply say yes if the problem is this than try to understand the basic mechanism behind that and get free , but its all process works under the strict controlled and in the guide lines of Sadgurudev, you cannot make cock tell of your choice and if does so than liable for punishment.*

वही दूसरी ओर तंत्र इस समस्या के प्रति दूसरा दृष्टी कोण रखता हैं . वह मानसिक भावनाए चाहे अच्छी या किसी भी हो को स्वीकार करता हैं ओर केबल इस के कारण इनको सही / गलत नहीं कहता . वह कहता हैं की यदि समस्या इसके कारण हैं तो उसे समझों और साथ ही साथ साक्षी भाव से देखो की क्यों ओर कैसे यह आती हैं, और जब ऐसा हो जाता हैं तब आप इससे मुक्त हो जाते हो .पर तंत्र की सारी प्रक्रियाएं , केबल सदगुरुदेव के मार्गदर्शन ओर सूक्ष्म निर्देशन में ही संपन्न होती हैं , यदि आप इसमें अपने रूचि अ नुसार काम करते हैं तब आप निश्चय ही दंड/अपयश /अपमान के भागी होते हैं .

Tantra accept basic things in the whole universe one is male and other female part. This is true in respect to from flower to man /woman. Male is positive energy and female is negative energy, and you already know the negativity has its own power. And when both forces unite the complete circle formed, here I am not saying outer worldly way , inwardly every man has woman in it , and after that male body . this happens alternately . same thing with woman, she has next body to man and than same alternate

तंत्र ये बात स्वीकार करता हैं की इस सम्पूर्ण ब्रम्हांड में एक तत्व स्त्री हैं ओर दूसरा तत्व पुरुष हैं .और ये बात एक पुष्प से लेकर हर आदमी , महिला पर भी सामान रूप से लगती हैं . पुरुष धनात्मक उर्जा का रूप हैं तो महिला/नारी ऋ णात्मक उर्जा का रूप हैं /प्रतीक हैं . आप स्वयं जानते हैं की की ऋण उर्जा की अपनी शक्ति होती हैं . ओर जब दोनों उर्जाये एक होती हैं तो शक्ति का उर्जा का एक पूर्ण चक्र पूरा होता हैं . यहाँ पर मैं सांसारिक रूप से एक होने की बात नहीं कर रहा हूँ , आंतरिक रूप से हर व्यक्ति के अंतर एक महिला/नारी हैं ही , अगला शरीर पुनः पुरुष फिर नारी यही क्रम ७ शरीर तक रहता हैं ओर

way going up to total seven body. *Have you not noticed that after 55 years of age man nature changes to like woman he became more cool and contrary to woman she became more controller, why ..reason their next body taking grip over mental control .off course many of the exception of this rule.* *Than whom you blame woman?????, which is just next to your body. .it can not be denied that power of love/ sneh of a woman either as mother /sister friend what ever you may call. Since she guided by emotion and man generally works as according to reason,.* *Tantra does not see that woman as a lesser to man, instead of that teaches you to have equal,and when your eyes clean and have ability to see that .. than whole world is full of divinity. Or otherwise just to blame everybody even yourself.* *Nearly ail the tantric granths is a talk between mother Parvati to Bhagvaan shiva. Do you consider mother lesser to father, how can you, here in this country we says matra devo bhav than we call pitr devo bhav, but what is happening today…. You know , and this is one of the cause of today's loosening of various values in society.* *Do you know* ***VAAM-KESHWER TANTRA*** *advocates not to even talk hard to woman, even flower should not be used as punishing rod to her. still you say.tantra see woman as a*	यही बात नारी पर भी उसके आन्तरिक शरीर के बारे में, पूर्ण रूप से लगती हैं तंत्र शास्त्र सामान्यतः ७ शरीर की अव धारणाये रखता हैं . क्या आपने कभी ध्यान दिया हैं की महिलाये ५५ वर्षों के बाद उनका स्वाभाव काफी उग्र सा हो जाती हैं अधिकार सा प्रदर्शित करना लगती हैं वही पुरुष वर्ग ज्यादा शांत सा ,सौम्य सा हो जाता हैं . क्योंकि उम्र के इस पड़ाव पर उनके अगले शरीर उनपर अधिकार करने लगता हैं , हर नियम की भांति इस नियम के कुछ विपरीत उदाहरण भी संभव हैं . तो क्या नारी को दोष दे ???? जो की आपका अपना दूसरा शरीर हैं , किसी भी नारी की स्नेह करने की शक्ति फिर वह चाहे माँ के रूप में / बहिन के रूप में या रिश्ते को कोई भी अन्य नाम दे ,की सक्षमता से कोई भी इनकार नहीं कर सकता हैं . क्योंकि वे भावनाओ से तथा पुरुष कारण से संचालित होते हैं . तंत्र कभी भी नारी को पुरुष से नीचे नहीं देखता हैं वह तो उसे एक सामान ही मानता हैं , यहाँ लिंग भेद नहीं हैं, दोनों सिर्फ साधक हैं बस . जब आपकी आँखे साफ होगी तो देख सकेंगे की सारा विश्व ही दिव्यता से भरा हैं ,अन्यथा आप सिर्फ अपने को छोड़ कर हर किसी को दोषी ठहराने में स्वतंत्र हैं ही . लगभग सारे तंत्र ग्रंथ भगवान शिव और माँ पार्वती के आपस के संवाद के रूप में ही उल्लेखित हैं . क्या आप माँ को पिता से नीचे देखते हैं , इस देश में हम पहले मात्र देवो भव : फिर कहते हैं की पित्र देवो भव:. पर आज क्या हो रहा हैं ... आप जानते हैं ही . और यही कारण हैं आज समाज में अनेकों स्थापित मूल्यों के गिरावट का .

lowerer object.

Off course ,merely repeating the word , I feel no difference between man and woman treat as a equal , til you really realize the trueness, how can the merely words carry any weight. Those who have read the small book about neem karolri baba. In that his most beloved shishy a "Richard or later known as ram das" unable to see woman as a Shakti . when on repeating instruction his showed his inability to do so. Than babaji has asked a astral yogini to teach some very rear specific procedure through that ram das free from his this pash.

Even param yogi "vama khepa" also said that (woman) are Maya and re-presentitaive of maha-maya, without his blessing how can any one go higher in spirituality.

This is not just introduction of the great subject. We all are having such a courage so that we can have some healthy out look on the subject,

क्या आप जानते हैं की वामकेश्वर तंत्र तो यहाँ तक उल्लेखित करता हैं की कभी भी नारी से कड़वा न बोले और कभी भी उसे यहाँ तक की फूलों की छड़ी से भी दंड न दे . क्या आप अभी भी इस अवधार णा ये रखते हैं की तंत्र नारी के प्रति कोई निम्न विचार रखता हैं .

हाँ केबल ये कहाँ की मैं नारी यों के प्रति दुर्भावना नहीं रखता हूँ , केबल शब्द हैं ओर सिर्फ शब्दों की कोई मूल्य नहीं हैं जब तक की इस सत्य का आपने स्वयं साक्षात् कर न कर लिया हो . जिन्होंने भी नीव करोरी बाबा जी की जीवनी पढ़ी हैं वे इस सत्य को जानते हैं की उन्होंने अपने प्रिय शिष्य रिचर्ड जो की बाद में राम दास के रूप मैं विख्यात हुए को बारबार , जब नारियों को माँ के रूप में देख पाने मैं असमर्थ पाया तो बाबाजी ने एक सूक्ष्म जगत की योगिनी को आमंत्रित कर उसके माध्यम से तंत्र क्रियाओं के द्वारा राम दास की ये भावना / इस पाश दूर की., या मुक्त किया .

यहाँ तक महा योगी वामा खेपा ने कहा था की नारियां माया हैं ओर महामाया का अंश तो बिना उनकी आशीर्वाद के बिना कैसे आध्यात्मिकता में बढ़ा जा सकता हैं ,

यह केबल इस विषय का परिचय नहीं हैं बल्कि की हम में इतना साहस हैं की हम इस विषय को भी स्वथ्य दृष्टी से पढ़ सकते हैं .

In the End

आप सभी गुरु भाई बहिन और मित्रो के दिन प्रति दिन के बढ़ते हुआ स्नेह हमें लगातार और अधिक मेहनत को प्रेरित करता हैं अब ये अंक समाप्ति की ओर हैं, आपको ये अंक कैसा लगा , हम सभी को बिश्वास हैं की यह अंक आपके अपेक्षाओ पर खरा उतरा होगा .

इसी तरह हम सदैव आपके आशाओं पर खरे उतरें ,सदगुरुदेव भगवान से यही प्रार्थना हैं .

अगला अंक - यक्षिणी एवं चेटक साधना महाविशेषांक

पर आधारित होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

With the ever increasing /growing your support and love/sneh gives us more and more strength to work hard to come up to your expectation ,we here,have a faith that this issue come up your expectation, like that we work for you all is the prayer to beloved sadgurudev ji.

Our next issue will be based on Yakshni avam chetak Mahavisheshank , for details ofthat plz wait for related post in the blog.

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit blog

Nikhil-alchemy2.blogspot.com & yahoo group Nikhil alchemy

We

Are praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI GURUDEV